मूल्य · पौने दो रुपये (१७५ नये पैसे)
प्रथम संस्करण जुलाई १९५७
आवरण नरेन्द्र श्रीवास्तव
प्रकाशक · राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक · हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली
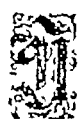
शेक्सपियर विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० मे स्ट्रैटफोर्ड-आन्-ऐवोन नामक स्थान मे हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय मे बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नही किया। १५८२ ई० मे शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बड़ी ऐनहेथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोपजनक नही था। महारानी ऐलिजाबेथ के शासनकाल मे १५८७ ई० मे शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक कम्पनियो मे काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्रायः समकालीन यह कवि यही आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाये। १६१२ ई० मे उसने लिखना छोड़ दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० मे उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओ को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य में अपना सानी सहज ही नही पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्राय हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे है, कविताएँ अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं—जूलियस सीजर, ऑथेलो, मैकबैथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दु खान्त), ग्रीष्म-मध्यरात्रि का स्वप्न, वेनिस का सौदागर, बारहवी रात, तिल का ताड (मच एडू अबाउट नथिंग), शीतकाल की कथा, तूफान (सुखान्त)। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक है तथा प्रहसन भी है। प्राय उसके सभी नाटक प्रसिद्ध है।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओ को बडे ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है। उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते है। जिस भाषा मे शेक्सपियर के नाटको का अनुवाद नही है वह भाषाओ मे कभी नही गिनी जा सकती।

भूमिका

'मैकबैथ' शेक्सपियर के दुःखांत नाटकों में अत्यंत लोकप्रिय है। इसके रचनाकाल के संबंध में यद्यपि मतभेद है तथापि नाटक के पात्रों और उसकी रचना-शैली से पता चलता है कि शेक्सपियर ने इसकी रचना 'किंग लियर' के पश्चात् की थी। इस प्रकार इसका रचना काल सन् १६०५-६ ठहरता है। वस्तुत. यह युग शेक्सपियर जैसे महान् मेधावी नाटककार के लिये अपनी दुःखांत कृतियों के अनुकूल भी था।

शेक्सपियर ने जिस प्रकार अपने अन्य नाटकों के कथानकों के लिये दूसरी पूर्ववर्ती कृतियों से प्रेरणा ली है उसी प्रकार मूलरूप में मैकबैथ का कथानक भी उसका अपना नहीं है। यह एक दुखांत नाटक है एवं इसके कथानक का आधार विश्वविश्रुत अंग्रेजी लेखक राफेल होलिन्शेड की स्कॉटलैण्ड संबंधी एक ऐतिहासिक कृति है।

मैकबैथ में जिन घटनाओं का वर्णन है उन्हें पूर्णतया ऐतिहासिक अथवा काल्पनिक मान लेना भी युक्तियुक्त न होगा। 'कॉनसाइज डिक्शनरी ऑफ नेशनल बाइओग्रॉफी' में 'मैकबैथ' के अंतर्गत लिखा है—"मैकबैथ (मृ० १०५७) स्कॉटलैण्ड का बादशाह, स्कॉटलैण्ड के राजा डंकन की फौजों का कमाण्डर तथा १०४० में उसका कत्लकर राज्य पर अपना अधिकार करने वाला जिसे नॉर्थम्ब्रिया के अर्ल सिवार्ड ने १०५४ में हराया तथा १०५७ में मैलकॉम तृतीय ने मार डाला।"

मैकबैथ के संबंध में इतिहास में और अधिक स्पष्ट उल्लेख न मिलने के कारण शेक्सपियर ने होलिन्शेड द्वारा कथित मैकबैथ के कथातत्त्व को अपने मनोनुकूल ढालने में पूरी स्वतंत्रता से

काम लिया। उसका उद्देश्य जितना एक दुखांत नाटक लिखने का था उतना ऐतिहासिक नाटक लिखने का नही। अपनी अप्रतिम प्रतिभा से पात्रो का चयन कर, उन्हे नयी साज सज्जा मे प्रस्तुत कर एव घटनाओ का प्रभावोत्पादक वर्गीकरण करने के पश्चात् शेक्सपियर, मुख्य ऐतिहासिक घटना से कही अधिक अपनी इस कृति मे रोचकता उत्पन्न करने मे सफल हुआ है।

मैकवैथ का प्रकाशन शेक्सपियर की मृत्यु के पश्चात् हुआ। इसमे आरभ से अत तक जीवन और मृत्यु का रोमांचक सघर्ष वर्णित है। भयानक अमानुषीय घात-प्रतिघातो से दर्शक द्रवित एव उद्वेलित हो उठते है। मैकवैथ मे जीवन के प्रति व्यग्य भी प्रभूत मात्रा मे मुखरित है। इसमे शेक्सपियर ने अपनी असाधारण एव रहस्यपूर्ण मन शक्ति को सतुष्ट करने के लिये दो हत्यारो की अवतारणा की है और जैसा कि साधारणतया उसकी सभी कृतियो मे होता है, इन दोनो हत्यारो मे विवेकपूर्ण स्पष्ट अतर भी दर्शाया है। हत्यारा होते हुए भी एक के प्रति दर्शक की सहानुभूति उमड पडती है और दूसरे के प्रति घृणा का उद्रेक।

प्रत्येक मनुष्य मे जब दानवता जागृत होती है, उसकी मनुष्यता लुप्त हो जाती है किन्तु जीवन मे ऐसे भी स्थल आते है जहां वह परमक्रूर होते हुए भी अपनी मानवोचित भावनाओ मे सचालित होने लगता है।

मानव-मन की गहराइयो का व्यग्यपूर्ण अकन मैकवैथ की विशेषता है। शेक्सपियर एक महान् नाटककार है और मैकवैथ उसकी अन्य महान् कृतियो मे अपना प्रमुख स्थान रखता है।

—रागेय राघव

पात्र-परिचय

डंकन	:	स्कॉटलैंड का सम्राट्
मैलकॉम डोनलबेन	}	सम्राट् के पुत्र
मैकबैथ बैंको	}	सम्राट् की सेना के प्रमुख
लैनोक्स मैकडफ़ रौस मैंटियथ ऐंड्स	}	स्कॉटलैंड के भद्र पुरुष
फ्लीन्स	:	बैंको का पुत्र
सिवार्ड	:	नॉर्थम्बरलैंड का अर्ल और
	:	अंगरेजी सेना के प्रमुख
बालक सिवार्ड	:	सिवार्ड का पुत्र
सीटॉन	:	मैकबैथ का अफसर
लड़का	:	मैकडफ का पुत्र
लेडी मैकबैथ	:	मैकबैथ की पत्नी
लेडी मैकडफ़	:	मैकडफ की पत्नी

[लेडी मैकडफ की परिचारिकाएं, हिकेट और तीन डाइन]
[अंगरेजी डॉक्टर, स्कॉच डॉक्टर, सार्जन्ट, कुली, वृद्ध पुरुष, हत्यारे, भद्र पुरुष, अफसर, सिपाही, परिचारकाएँ और दूत बैंको का भूत एव अन्य पिशाच इत्यादि ।]

[लेडी मैकडफ की परिचारिकाएं, हिकेट और तीन डाइन]
[अंगरेजी डॉक्टर, स्कॉच डॉक्टर, सार्जन्ट, कुली, वृद्ध पुरुष,
हत्यारे, भद्र पुरुष, अफ़सर, सिपाही, परिचारकाएँ और दूत
बैंको का भूत एव अन्य पिशाच इत्यादि ।]

पहला अंक

दृश्य १

[एक रेगिस्तानी स्थान]

[बादलों की गड़गड़ाहट के बीच बिजली चमकती है ।
तीन डाइनों का प्रवेश]

पहली डाइन : ऐसे समय मे जब गड़गडाहट करते बादलो के बीच बिजली फट रही हो और पानी भी बरसता हो हम तीनों फिर कब मिलेंगे ?

दूसरी डाइन : उसी समय जब यह युद्धनाद शात होकर यह घोषणा कर दे कि कौन जीत गया और कौन हार गया ।

तीसरी डाइन : पर वह तो सूरज छिपने से पहले ही हो जायेगा ।

पहली डाइन : पर हाँ, मिलेगे कहाँ ?

दूसरी डाइन : उसी उजाड़ मे ।

तीसरी डाइन : वहाँ तो हमे मैकवैथ भी मिलेगा न ?

पहली डाइन आई, ग्रेमल्किन[1] ।

दूसरी डाइन : पैडौक[2] मेरे पीछे पुकार रहा है ।

तीसरी डाइन : अभी एक क्षण मे ।

सभी : जिसमे दूसरो की भलाई है उससे हमे घृणा है और जिससे वे बुरा समझ कर घृणा करते हैं वही हमारे लिये अच्छा है । आओ,

---

१. Graymalkin (ग्रेमल्किन)—एक तरह की भूरी बिल्ली का नाम। प्रत्येक डाइन अपने साथ इस तरह का कोई पशु या पक्षी रखती है जो उसके इशारे पर कोई भी रूप बदल सकता है । इससे वे दूसरों पर जादू किया करती हैं ।

२. Paddock (पैडौक)—इसी तरह एक मेंढक का नाम ।

कोहरे और धुन्ध-भरी हवा मे होकर उड चलें।

[सभी जाती है ।]

दृश्य २

[फौरेस के निकट एक शिविर]

[अन्दर भय-ध्वनि । सम्राट डकन, मैलकॉम, डोनलवेन, लैनोक्स का अनुचरों के साथ प्रवेश । खून से भीगा हुआ एक सार्जेन्ट आता है ।]

कन : कौन है यह जो इस तरह खून से भीगा हुआ है। उसकी दयनीय अवस्था से लगता है कि वह अभी रणभूमि से लौटा है। उससे हमे विद्रोहियो के बारे मे नवीनतम परिस्थिति का अवश्य कुछ पता लगेगा।

ल्कॉम अरे, यह तो वही सार्जेन्ट है जो एक वफादार वीर सैनिक की तरह मुझे वन्दी होने से बचाने के लिये लडा था। स्वागत है, मेरे पराक्रमी मित्र ! जिस समय तुम रणभूमि से चले थे उस समय युद्ध की क्या स्थिति थी, सम्राट यह तुमसे जानना चाहते हैं।

ार्जेन्ट अभी मे कुछ निश्चित नही कहा जा सकता स्वामी ! दोनो सेनाओ के बीच अभी वैसा ही संघर्ष है जैसा होड मे बढते दो तैराक जब पूरी तरह थक जाते हैं तो आपस मे लिपट कर एक-दूसरे की चालों को काटने की कोशिश करते हैं। उस निर्दयी मैकडोनवाल्ड ने जिनमे दुष्टता प्रतिदिन बढती जाती है और जो स्वभाव मे ही विद्रोही है, आयर्लैंड मे हल्के शस्त्रो से सुसज्जित सेनाएं और पश्चिमी द्वीपो मे भारी शस्त्रो से सुसज्जित अश्वारोही बुलवा लिये हैं। लेकिन कुछ भी हो, वीर मैकवैय के सामने वे सब कायर हैं। वे नादान वीरता देवी के पुत्र हैं। मैंने देखा कि

भाग्य को उपेक्षा-भरी दृष्टि से देखते हुए और अपनी तलवार घुमाकर मार-काट करते हुए जिस तरह उन्होने शत्रु के सीने तक पहुँचने का मार्ग वना लिया था उससे सच ही वे वीर कहलाने के अधिकारी हैं। वे तव तक वहाँ से नही हटे जव तक उन्होने शत्रु के जवडे तक नही काट दिये और उसके सिर को काटकर हमारे मोर्चे की मुँडेर पर नही टाँक दिया।

डंकन : ओ मेरे वीर भाई ! मेरे योग्य और समर्थ साथी !

सार्जेन्ट : जैसे सूरज छिपते-छिपते कभी ऐसे भयानक तूफान उठते हैं जो जहाजो को उलटते हुए चले जाते हैं और फिर उसी भयावने स्वर मे गर्जन करते है, उसी तरह जहाँ लगता था कि अब कुछ सुख-चैन से वैठेंगे उसी समय एक के ऊपर एक तूफान-सा आता ही जाता था। ओ स्कॉटलैण्ड के स्वामी ! मेरी वात ध्यान से सुनो। हमारे उन वीर सैनिको ने जिनकी रग-रग मे वीरता और न्याय का खून दौड रहा है उस भगोडी और हल्के-से सुसज्जित सेना को ऐसा खदेडा कि वह सिर पर पैर रख कर भाग जाने के लिये उतारू हो गई पर उसी समय नार्वे के राजा ने अवसर देखकर अपने चमकते हुए शस्त्रो से तथा और नई सेनाएँ वुलाकर हम पर अकस्मात हमला कर दिया।

डंकन : पर क्या इस पर हमारे सेनापति मैकवैथ और वैंको का खून नही खौला ?

सार्जेन्ट : अवश्य ! उनका खून उसी तरह चढ़ गया जैसे वाज़ का गौरैय्या देख कर और शेर का एक खरगोश देख कर चढ जाता है। मै यही कहूँगा स्वामी ! कि दूनी वारूद से लदी तोपो की तरह दूनी ताकत के साथ वे शत्रु की सेना पर टूट पड़े। कौन जाने कि वे अपने घावो से वहते गरम खून मे नहाने के लिये कूदे थे या इसे एक

दूसरा गोलगोथा बनाना चाहते थे। मै नही समझता इसके अला
उनका और कोई तात्पर्य्य था। लेकिन मैं इतना थक गया हूँ औ
मेरे शरीर पर घाव भी हैं जिससे मुझे बेहोशी-सी चढी आ र
है। मेरे घाव चिकित्सा के लिये बेचैन-से हो रहे हैं स्वामी!

डंकन . आह! तुम्हारे शरीर मे जैसे घाव है उन्ही के योग्य तुम्ह
वीरता से भरे हुए शब्द है। दोनो ही महान सम्मान के योग्य है
(अनुचरों से) जाओ, सार्जेन्ट की चिकित्सा की तुरन्त व्यवस्था करे

[अनुचरों के साथ सार्जेन्ट जाता है।]

[रौस का प्रवेश]

कौन आ रहा है यहाँ ?

मैलकॉम : रौस, श्रेष्ठ 'थेन' है।

लैनोक्स उनकी आँखो मे कैसी उतावली मालूम हो रही है। ठीक
है, जो व्यक्ति अजीब-अजीब घटनाओ की सूचना देने आता है व
ऐसा ही दीखता है।

रौस ईश्वर सम्राट की रक्षा करें!

डकन : कहाँ से आ रहे हैं आप श्रेष्ठ थेन!

रौस हे महान सम्राट! मै फाइफ से आ रहा हूँ, जहाँ आकाश मे न
का झडा फहरा रहा है। नॉर्वे के राजा ने हृदय को हिला
वाली एक विशाल सेना ले कर और उस धोखेबाज और गद्द
काउडोर के थेन की सहायता लेकर एक घमासान युद्ध प्रारम्भ क
दिया तब देवी भवानी के पति उसी मैकबैथ ने अपना कव
पहना और वह शत्रु के बीच कूद पडा। मै क्या कहूँ, शत्रु की त
वार से तलवार और हाथ से हाथ टकरा कर उसने इस त
सामना किया कि शत्रु अपनी सारी वीरता भूल गया और अन्त
हमारी विजय हुई।

डंकन आह ! महान हर्ष !

रौस : अब इसी कारण नॉर्वे का राजा स्वेनो सन्धि के लिये प्रार्थना कर रहा है। लेकिन हम उसके साथियो की मुर्दा लाशो को जमीन मे तब तक नही दफनाने देगे जब तक वह 'सेन्ट कॉम्स इन्च'[1] पर दस हजार डॉलर हमारे बीच बाँट न दे।

डंकन . उस काउडोर के थेन को मै अब तक हृदय से अपना मित्र समझता था पर अब और अधिक वह मुझे धोखे मे नही रख सकेगा। जाओ, और उसके मृत्यु-दण्ड की चारो ओर घोषणा कर दो और मैकबैथ को उसका पूर्व पद देकर सम्मानित कर दो।

रौस : आपकी आज्ञा का पालन होगा स्वामी !

डंकन : ठीक है, जो उसने खोया श्रेष्ठ मैकबैथ ने पा लिया है।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[फौरेस के निकट उजाड भूमि]

[बादल गरजते है। तीनो डाइनें आती है।]

पहली डाइन कहाँ रही बहिन ?

दूसरी डाइन सूअर के घेंटे को मार रही थी।

तीसरी डाइन · पर तुम कहाँ थी बहिन ?

पहली डाइन : एक मल्लाह की स्त्री अपनी झोली मे कुछ अखरोट लिये हुई थी जिन्हे वह चबाती थी, फिर चबाती थी, और चबाती ही जाती थी। मैने कहा : 'मुझे भी दे दो' तो बची-खुची भूठन

---

१ Saint Colme's Inch—सेन्ट कोलम्बिया का टापू जहां 'आइरिश' राजकुमार सैन्ट कोलम्बिया को समर्पित एक मठ के भग्नावशेष पाये जाते हैं। यह एक धार्मिक स्थान माना जाता था।

पर पत्नी उस भूखी और घृणित स्त्री ने झिड़क कर कहा . 'भाग जा ओ डाइन ! भाग जा !' उसका पति टाइगर (Tiger) नामक जहाज़ का मालिक है और अब एलैप्पो (Aleppo) गया हुआ है। लेकिन क्या हुआ ? मै एक चलनी मे बैठकर उधर जाऊँगी और बिना पूंछ वाली एक चूहिया की शक्ल बना कर मै करूँगी, करूँगी, अवश्य कुछ न कुछ करूँगी।

दूसरी डाइन : मै तुम्हे एक हवा दूंगी।

पहली डाइन : बडी दयालु हो तुम।

तीसरी डाइन : और मैं भी एक दूसरी हवा दूंगी।

पहली डाइन : इसके अलावा सभी हवाएँ मेरे पास है। मल्लाहो की कुतुबनुमा जो भी दिशा दिखाती है उधर ही वे वेग से बहती हैं, यहाँ तक कि बन्दरगाहो के अन्दर तक घुस जाती है। मैं उसके शरीर के सारे खून को चूसकर घास की तरह उसे सुखा डालूंगी, जिससे, न रात और न दिन मे, कभी भी वह पलक तक बन्द नही कर सकेगा। मैं उसे एक ऐसे जादू मे बांध दूंगी कि ८१ हफ्तो तक दु ग मे घुल-घुल कर वह एक दिन बिल्कुल मिट जायेगा। यद्यपि मै उसके जहाज को डुबा नही सकती पर फिर भी वह तूफानो के थपेडे खाता हुआ इधर-उधर फिकता हुआ ही रहेगा।

यह देखो, मेरे पास क्या है ?

दूसरी डाइन दिखाओ, दिखाओ।

पहली डाइन · मेरे पास एक ऐसे मल्लाह का अगूठा है जो घर लौटते समय तूफान मे फँस गया और समुद्र की उठती हुई लहरें उसे निगल गई।

[अन्दर नगकारे की आवाज]

तीसरी डाइन . अरे, नक्कारा, सुनो, नक्कारा वज रहा है। लो वह मैकवैथ आ गया।

सभी ओ समुद्र की लहरो पर और पृथ्वी पर तेज़ चलने वाली डाइन वहनो ! आओ, आपस मे हाथ मिला कर हम चारो तरफ नाचे। तीन वार तुम, तीन वार मै और फिर तीन वार वह इस तरह नौ वार एक चक्कर वनाये।·· शान्त ! जादू का चक्कर अव पूरा हो गया है।

[मैकवैथ तथा वैंको का प्रवेश]

मैकवैथ · इतना वुरा और इतना ही अच्छा दिन मैने अपने जीवन मे कभी नही देखा।

वैंको : फौरेस यहाँ से कितनी दूर कहा जाता है ?
पर है, ये पतले और अजीव से कपडे पहने कौन है ? ये तो पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियो जैसी तो नही लगती फिर भी पृथ्वी पर हैं। क्या आश्चर्य्य है !
क्या तुम कोई जीवित प्राणी हो ? या कोई ऐसी चीज़ हो जिस पर मनुष्य को शक करना चाहिये ? अपनी फटी उँगली जिस तरह तुमने अपने ओठ पर रख ली है उससे मालूम होता है कि तुम मेरी वात समझ रही हो। अवश्य तुम कोई स्त्री हो, पर हैं फिर तुम्हारी दाढी देखकर मै कैसे कह दूं कि तुम स्त्री हो।

मैकवैथ अगर तुम वोल सकती हो तो वोलो, कौन हो तुम ?

पहली डाइन : तुम्हारा स्वागत है मैकवैथ। ओ 'ग्लेमिस' के थेन ! हम सव की ओर से तुम्हारा स्वागत है।

दूसरी डाइन ओ काउडोर के थेन मैकवैथ ! हम सभी की ओर से तुम्हारा अभिनन्दन है।

तीसरी डाइन : स्वागत है उस मैकवैथ का जो अव सम्राट् वनने जा रहा है।

बैंको : क्यो जनाव, ऐसी अच्छी-अच्छी बातें सुनकर भी आप इस तरह वेचैन होकर डर क्यो रहे है ?
(डाइनों से) मै सत्य के नाम पूछता हूँ कि तुम हवा की कोई चीज हो या जो कुछ वाहर से दिखाई दे रही हो वही वास्तव मे हो ? तुम मेरे साथी का उसके वर्त्तमान पद और यश के लिये अभिनन्दन कर रही हो और उच्चाधिकारी यहाँ तक कि सम्राट् होने तक की भविष्यवाणी करके उसका स्वागत कर रही हो। इससे वह कुछ उन्मत्त-सा हो उठा है। यदि तुम भविष्य की वात देख सकती हो और यह वता सकती हो कि आगे क्या होगा और क्या नही तो फिर मुझसे भी कहो, मुझसे, जो न तुम्हारी कृपा की भीख मागता है और न तुम्हारी घृणा से तनिक भी डर सकता है।

पहली डाइन स्वागत है!

दूसरी डाइन स्वागत है!

तीसरी डाइन स्वागत है!

पहली डाइन मैकवैथ से कम और उससे अधिक भी।

दूसरी डाइन इतना सुखी नही फिर भी उससे कही अधिक सुखी।

तीसरी डाइन यद्यपि तुम कभी नही होगे फिर भी तुम्हारे पुत्र सम्राट् होगे। इसलिये, मैकवैथ और बैंको का हम सभी की ओर से स्वागत है!

पहली डाइन सभी की ओर से मैकवैथ और बैंको का अभिनन्दन है।

मैकवैथ ठहरो, ओ झूठ वात वनाने वाली जादूगरनियो! कुछ और भी कहो। सिनेल की मृत्यु के कारण मैं जानता हूँ कि मुझे ग्लेमिस का थेन वना दिया गया है लेकिन काउडोर का थेन कैसे ? वह गौरवशाली काउडोर का थेन तो अभी जीवित है और फिर सम्राट् होना क्या उसको मैं कभी कल्पना भी कर सकता हूँ ? इसी

तरह काउडोर का थेन होना भी मेरे विश्वास के परे की वात है। वोलो, कहाँ से यह अजीव-सी वात तुम्हे मिली है ? या इस उजाड़ मे इस तरह भविष्यवाणी करके तुमने हमारा मार्ग रोकने का षड्यन्त्र किया है ? वताओ, मै आज्ञा देता हूँ वोलो।

[डाइनें लुप्त हो जाती हैं।]

वैंको : मुझे लगता है, जैसे पानी मे ववूले होते है वैसे ही जमीन मे भी होते है और ये उन्ही ववूलो की वनी हुई है। अरे, है ! कहाँ छिप गई वे सभी।

मैकवैथ : हवा मे। जो अभी शरीर धारण किये हुई थी वे हवा मे इस तरह विलीन हो गई है जैसे मनुष्य की श्वासे निकल कर मिल जाती है। काश ! वे थोड़ा और ठहर जाती तो कितना अच्छा होता।

वैंको : जिनके वारे मे हम अभी वातें कर रहे थे क्या ऐसे भी प्राणी इस पृथ्वी पर होते है ? या हमने मूर्खता लाने वाली कोई ऐसी जडी खाली है जिससे हमारी विचार-शक्ति पर ताला-सा पड़ गया है।

मैकवैथ : तुम्हारे पुत्र सम्राट वनेंगे वैंको !

वैंको : तुम भी सम्राट् होगे।

मैकवैथ : और काउडोर का थेन भी ? यही कहा था न उन्होने ?

वैंको : वस ठीक वही वात, वे ही शब्द।

लेकिन ये कौन आ रहे है यहाँ ?

[रौस तथा ऐङ्गस का प्रवेश]

रौस : सम्राट् अपार हर्ष के साथ मैकवैथ का स्वागत करते है। तुम्हारी विजय की सूचना पाकर जव उन्हे यह भी पता लगा कि विद्रोहियो को कुचलने मे तुमने अपनी जान तक की वाज़ी लगा दी थी तो

(रौस तथा ऐङ्गस से) भद्र पुरुषो ! मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। (स्वगत) इन डाइनो की लालच भरी ये बाते क्या पूरी तरह बुरी हो सकती हैं ? नही। पर अच्छी भी कैसे हो सकती हैं ये ? यदि बुरी हैं तो इस तरह सच्ची होकर इन्होने मुझे यह सफलता क्यो दी ? काउडोर का थेन भी मै हो गया हूँ। यदि अच्छी है तो उनके दिये गये उस लालच का शिकार मैं क्यो बनता हूँ जिसकी भयावनी कल्पना मात्र से ही मेरे रोगटे खडे हो जाते हैं और हृदय मे अजीब तरह से धडकन और कँपकँपी मच उठती है ? डरावनी कल्पनाओ से तो सामने रहने वाले भय कम डराते है। हत्या की बात मेरे मस्तिष्क मे एक अजीब सपने की तरह लगती है पर इसने मुझे इतना विचलित कर दिया है कि यह बात सपने जैसी लगते हुए भी मुझे कुछ विश्वास होता है कि जो कुछ कोरा सपना है और एक उडती हुई कल्पना की तरह है उसके सिवाय वास्तविक कुछ भी नही है।

बैंको वह देखो, मैकबैथ किस तरह किसी गम्भीर विचार मे डूब रहा है।

मैकबैथ (स्वगत) यदि भाग्य मे लिखा है कि मै सम्राट हूँगा तो क्या बिना कोई प्रयत्न किये नही हो जाऊँगा ?

बैंको . जो कुछ भी ये नये पद और सम्मान उसे प्राप्त हुए है वे अपरिचित और अजीब तरह के वस्त्रो की तरह है जो उसके शरीर मे पूरी तरह आ नही रहे हैं। पर खैर, अभ्यास करते-करते अवश्य एक दिन वह उनका आदी हो जायेगा।

मैकबैथ (स्वगत) कुछ भी हो, एक न एक दिन वह नियत समय अवश्य आयेगा। इस बीच मे जो भी कठिन से कठिन दिन हैं वह भी किसी तरह निकल ही जायेगे।

वेंको : श्रेष्ठ मैकवैथ ! हम इसी प्रतीक्षा मे यहाँ खडे हुए है कि तुम अव-
काश निकाल कर अव हमारे साथ सम्राट के पास चलो ।

मैकवैथ : ओ क्षमा करे मुझे। मेरा यह जड़ मस्तिष्क कुछ भूली हुई वातो
को याद करते-करते इस तरह खो गया था ।
ओ मेरे महरवान साथियो ! आपकी छोटी से छोटी भी सेवा मेरे
मस्तिष्क मे इसी तरह अकित है जैसे किसी पुस्तक मे । मै प्रति-
दिन उसके पृष्ठ उलट कर उन्हे पढ़ता हूँ ।
अच्छा चलो, अव सम्राट् के पास चले ।
(वेंको से) जो कुछ भी घटना हमारे साथ घटी है उस पर और
गहराई से सोचना वेंको ! इस वीच इतनी गहराई से सोच लेने के
पश्चात् किसी अधिक अवकाश के समय हम एक साथ वैठेगे और
अपनी-अपनी वात एक दूसरे से कहेगे ।

वेंको : वडी खुशी के साथ ।

मैकवैथ : तव तक के लिये इतना ही काफी है—अच्छा, आओ मित्रो !
चले ।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[फोरेस । राजमहल में एक कमरा]

[वाजे वजते हैं । डंकन, मैलकॉम, डोनलवेन, और लैनोक्स का
अनुचरो के साथ प्रवेश]

डंकन : क्या काउडोर को मृत्यु-दण्ड मिल चुका ? वे व्यक्ति जिनके
हाथो यह काम सौंपा गया था अभी तक लौट कर आये या नही ?

मैलकॉम : वे अभी तक लौट कर नही आये हैं मेरे स्वामी ! लेकिन
मुझे एक व्यक्ति ने वतलाया है कि उसको मृत्यु-दण्ड मिल चुका

चलें। वहाँ हम तुम्हारे साथ और भी निकट के सूत्र मे बँध जायेंगे।

मैकवैथ : हे स्वामी! जानते है? वह आराम का समय भी वडी कठिनाई से वीतता है जो आपकी सेवा मे काम नही आ सकता। मैं चाहता हूँ कि स्वय आपके स्वागत के लिये पहले आगे चला जाऊं और आपके शुभागमन की सूचना देकर मेरी स्त्री को अत्यधिक प्रसन्न कर दूं। अत. कृपा करके मुझे जाने की आज्ञा दीजिये।

डकन : मेरे श्रेष्ठ काउडोर!

मैकवैथ : (स्वगत) कम्वरलैन्ड का राजकुमार? सँभल जा ओ मैकवैथ! यह वह सीढी है जिससे या तो तू नीचे गिर जायगा या इसे छलाग मार कर पार कर जायेगा। तेरे पथ मे यही एक वाधा है। सितारो! छिपा लो अपनी इस जगमगाती ज्योति को। मेरी इन काली और पाप से भरी गहरी लालसाओ को अपने इस प्रकाश मे मत प्रगट होने दो। जव मेरे हाथो से काम पूरा हो जाय तव चाहे मेरी दोनो आँखो के चिराग सदा के लिये बुझ जायें। हाँ, ये वुझ ही जाने चाहियें क्योकि इस काम के पूरा होने पर ये आँखें भय के मारे इसे देख नही पायेगी।

[जाता है।]

डंकन : सच है, श्रेष्ठ वैको! वह इतना ही शूरवीर है और उसकी प्रशसाएँ सुनते-सुनते हमें ऐसा लगता है जैसे हम अपना स्वादिष्ट भोजन कर रहे हैं। उसी से हमारा पेट भरता है। चलो, उसके पीछे चलें जो इस तरह उत्सुक होकर हमारा स्वागत करने के लिये पहले ही चला गया है। मेरी दृष्टि मे उसके समान कोई भी मेरा सम्बन्धी नही आता।

[बाजे बजते हैं। प्रस्थान]

दृश्य ५

[इनवर्नेस। मैकबेथ का महल]

[लेडी मैकबेथ का एक पत्र पढ़ते हुए प्रवेश]

लेडी मैकबेथ . "जिस दिन मुझे विजय प्राप्त हुई थी उसी दिन वे मुझे मिली थी और यह मुझे पूरी तरह पता लग गया है कि पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियो से कही अधिक वे जानती है। मैं कुछ और आगे पूछने के लिये उत्सुक हुआ उसी समय वे न जाने कहाँ हवा में विलीन हो गई। इससे मै आश्चर्य्य मे डूबा हुआ वही खडा रह गया, उसी वीच सम्राट के भेजे दूत वहाँ आये और उन सवने मुझे 'काउडोर का थेन' पुकार कर मेरा अभिनन्दन किया। ठीक उसी पद से जिससे उन डाइन वहनो ने पहले मेरा स्वागत किया था । फिर यह कह कर कि 'सम्राट वनेगा उसका स्वागत है' उन्होने आगामी समय के लिये भविष्यवाणी की थी।

ओ मेरे सुख और ऐश्वर्य्य की सर्वप्रिय सहभागिनी! मैंने सबसे पहले यह अच्छा समझा कि तुम्हे इस वात से अवगत करा दूं जिस-से तुम मेरे आने वाले ऐश्वर्य्य और गौरव से अपरिचित न रह जाओ और मेरे साथ अपनी प्रसन्नता का उचित भाग पा सको। इस वात को अपने हृदय मे रखना। अच्छा, अलविदा!"

(स्वगत) ग्लेमिस तो तुम पहले ही हो और अव काउडोर का थेन वनाकर तुम्हारा सम्मान किया गया है। इसके अलावा आगे की भी भविष्यवाणी अवश्य पूरी होगी पर फिर भी मुझे एक वात का डर है कि तुम्हारा स्वभाव इतना सरल और उदार है कि यह तुम्हे अपने गौरवशाली भाग्य के निकट शीघ्रता से पहुँचने नही देगा। तुम महान होना चाहते हो। महत्वाकाक्षा तुम्हारी रग-रग मे समाई हुई है पर विना किसी तरह का पाप किये उसे प्राप्त

करना चाहते हो। जिसको पाने के लिये तुम इतने लालायित हो उसे अन्त तक पवित्र रह कर ही प्राप्त करना चाहते हो। किसी तरह की झूठ भी नही बोलना चाहते न ? और आनन्द भोगना चाहते हो उस वस्तु का जो धोखे और वेईमानी से प्राप्त हो सकती है। ओ ग्लेमिस ! तुम जिस ऐश्वर्य्य और गौरव के लिये लालायित हो वही तुमसे पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि—'यदि तुम हमे प्राप्त करना चाहते हो तो धृष्टता को तुम्हे गले लगाना ही पडेगा।' और कैसा आश्चर्य्य है कि तुम इसे न करने के लिये अधिक इच्छुक हो क्योकि ऐसा करते हुए डर से तुम्हारा हृदय कापता है न ? शीघ्र यहाँ चले आओ जिससे मेरे हृदय मे जितना भी साहस है वह सव तुम्हारे कानो मे होकर हृदय मे भर दूं और अपनी वीरता भरी हुई वाणी से उस रोडे को हटाकर नष्ट कर दूं जो तुम्हारे और राजमुकुट के वीच अडा हुआ है जिससे तुम्हारे भाग्य और दैवी शक्तियो के द्वारा तुम पहले ही विभूपित किये जा चुके हो।

[एक दूत का प्रवेश]

क्या समाचार लाये हो दूत !

दूत : देवी ! आज रात को सम्राट यहाँ पधार रहे है।

लेडी मैकवैथ : तुम पर कुछ पागलपन-सा चढा हुआ मालूम होता है तभी ऐसी वातें कर रहे हो। क्या तुम्हारे स्वामी सम्राट के साथ नहीं हैं ? नही ! यदि ऐसी वात होती तो वे मुझे स्वागत की व्यवस्था करने के सम्बन्ध मे अवश्य सूचित करते।

दूत : जैसा आप सोचें देवी ! पर जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह सच है। हमारे थेन आ रहे है। हममे से एक व्यक्ति उनसे भी अधिक तीव्र गति से भेजा गया था जो किसी भी तरह भाग-दौड कर मरना-मरना पहले आपको यह सन्देश देने आया है।

लेडी मैंकवैथ : दूत का समुचित स्वागत करो। वह अच्छा सन्देश लेकर आया है।

(स्वगत) वह कौवा भी उस अभागे डकन के मेरे महल मे आने की सूचना देता हुआ स्वय दु ख से आहे भर रहा है।

आओ, हत्या के इरादो पर मंडराने वाली खून की प्यासी पिशाचिनो! आओ और नष्ट कर दो मेरे स्त्रियोचित अबला स्वभाव को। मेरी रग-रग को भयानक क्रूरता से पूरी तरह भर दो। मेरे खून को पूरी तरह गाढा बना दो और उन सभी मार्गो को बन्द कर दो जहाँ से दया और पश्चात्ताप के भाव प्रवेश कर सके ताकि मेरी आत्मा की कोई भी पुकार मुझे अपने काम से विचलित न कर सके और न मेरे इरादो के पूरा होने के बीच कोई बाधा डाल सके।

ओ खून के साथ खेलने वाली डकनियो! आओ जहाँ कही भी तुम अपने अदृश्य रूप मे प्रकृति के साथ कोई धृष्टता करने के लिये प्रतीक्षा कर रही हो वहाँ से आओ और मेरे स्तनो के दूध तक को जहर की तरह कड़वा बना दो।

आओ, ओ घोर काली रात! आओ और यमलोक की जहरीली काली धुआँ की तरह चारो ओर से इस पृथ्वी को इस तरह ढाँक लो जिससे मेरा यह पैना खजर भी अपने किये घाव को न देख सके और न इस काले परदे मे हो कर स्वर्गभूमि से देवता यह देख कर पुकार सकें—ठहरो! ठहरो!!

[मैकबैथ का प्रवेश]

महान ग्लेमिस! ओ श्रेष्ठ थेन! इन दोनो से भी ऊँचे और महान पद से, जो भविष्य मे अवश्य आपको मिलेगा, मैं आपका अभिनन्दन करती हूँ। आपके पत्रो ने मुझे बहुत दूर तक बता दिया है और

अब मैं अनजान नही हूँ इसीलिने अभी से मैं भविष्य के ऐश्वर्य्य और गौरव का अनुभव कर रही हूँ।

मैकबैथ ओ मेरी प्राणप्रिये! मालूम है, सम्राट डकन आज रात को यहाँ पधार रहे हैं?

लेडी मैकबैथ : फिर वापिस कब जायेंगे यहाँ से ?

मैकबैथ : उनका विचार तो कल ही चले जाने का है।

लेडी मैकबैथ : कल? कभी नही! क्या सूर्य्य की किरणें उस कल को देख पायेंगे जबकि वह यहाँ से वापिस चला जाय? नही! मेरे थेन! आपका चेहरा देखकर तो ऐसा लगता है मानो यह कोई ऐसी किताब हो जहाँ से मनुष्य अजीब तरह की बातें पढ सके। अगर समय को धोखा देना है तो अपना यह चेहरा समय के अनु-रूप बनाना ही होगा। अपनी आँखो के हाव-भाव से, हाथो से, बोली-चाली से, हर तरह सम्राट को अपार सम्मान दिखाओ और एक मासूम फूल की तरह बन जाओ पर सावधान! उसके नीचे छिपे हुए जहरीले साँप की तरह। वह डकन जो आज यहाँ आ रहा है, हर प्रकार से उसकी आवभगत करो, और उचित रीति से सम्मान दिखाओ। बाकी इस रात के महान षड्यन्त्र का भार मेरे ऊपर छोड दो जिससे हम यह दिन देख सकें जब हम इस महान साम्राज्य के एकमात्र स्वामी हो।

मैकबैथ : इस विषय पर फिर बातें करेंगे।

लेडी मैकबैथ : सिर्फ अपने चेहरे को खिलता हुआ बनाये रखना क्योंकि किसी तरह परिवर्तन खतरे से खाली नही है।
बस, बाकी सब मेरे ऊपर छोड दो।

[प्रस्थान]

दृश्य ६

[वही स्थान। महल के सामने जगमगाता
प्रकाश, शहनाइयाँ बजती हैं।]

[डंकन, मैलकॉम, डोनलबेन, बैंको, लैनोक्स, मैकडफ, रौस और
ऐङ्गस का अन्य सेवकों के साथ प्रवेश]

डंकन : यह महल कैसे सुन्दर स्थान पर है। यहाँ की मन्द और सुगन्धित वायु चित्त को कैसा आनन्द दे रही है।

बैंको : मन्दिरो मे अपना घर बनाने की शौकीन और गर्मी की महमान यह 'मार्टिल' अपने प्रिय घोंसले से इसी बात का समर्थन करती है कि आकाश से अत्यन्त ही सुगन्धित वायु यहाँ बह रही है। आगन की छत, दीवार थामने वाले खम्भे ऐसा कोई भी स्थान नही है जहाँ यह घौंसला न बनाती हो। उसी मे यह अपने बच्चो को खिलाती और पालती है। मैंने यह देखा है मेरे स्वामी! कि जहाँ यह अधिकतर रहती है और अपने बच्चो को पालती है वहाँ की वायु अवश्य सुगन्धित होती है।

[लेडी मैकबैथ का प्रवेश]

डंकन . देखो, देखो, हमारी महमानदाज़ श्रेष्ठ महिला ! कभी-कभी हमारे मित्र और सम्बन्धी जो प्रेम और सम्मान हमारे प्रति दिखाते है उससे हम एक संकोच-से मे पड जाते है पर फिर भी प्रेम मानकर हम इसका आदर करते है। इसी लिये हम आपसे यही कहना चाहते है कि जो भी कष्ट हमने आपको दिया है उसका ख्याल न करके आप ईश्वर से हमारे लिये शुभ कामना करे और उन कष्ट के लिये हमे धन्यवाद का पात्र समझे।

लेडी मैकबैथ : सम्राट! आपके प्रति की गई हमारी सभी सेवाएँ और ये ही नही बल्कि इनसे दुगुनी और चौगुनी तक भी आपने जो

असीम उपकार हमारे प्रति किये हैं उनका किसी भी रूप मे बदला नही चुका सकती। आपने जैसी उदारता पहले दिखाई थी और जो भी सम्मान अब देकर हमे सम्मानित किया है उसके लिये हम हमेशा सच्चे फकीरो की तरह आपकी भलाई के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

डकन : पर वह हमारा काउडोर का थेन कहाँ छिपा हुआ है। हम बडी ही तेजी से उसके पीछे-पीछे चले और हर तरह चाहा कि उससे आगे निकल जायँ पर वह तो वास्तव मे एक अच्छा सवार है। उसके पैर की ऐंड से भी तेज़ उसका महान प्रेम ही उसे हमसे भी पहले घर ले आया है।
हे सुन्दर और उदार हृदय वाली देवी ! हम आज रात को आपके महमान बन कर रहेगे।

लेडी मैकवैथ हमारे स्वामी ! हम तो आपके ऐसे सेवक हैं जिनका तन, मन, धन सभी कुछ आपका ही है। हमारी सारी सम्पत्ति आपकी कृपा का ही तो फल है। उसका हिसाब भी तो अभी आप को चुकाना होगा महाराज ?

डंकन : हमे अपना हाथ दो देवी ! और अपने पति के पास ले चलो। हम उन्हे अपने हृदय से अधिक प्रेम करते हैं और ऐसा ही सदा करते रहेगे। अच्छा, अब चलो देवी !

[प्रस्थान]

दृश्य ७

[मैकबैथ का महल। जगमगाता
प्रकाश, शहनाइयां बजती हैं।]

[एक दर्ज़ी, कुछ गोताखोर और सेवक तश्तरियां तथा अन्य वस्तुएं लेकर आते हैं और रगमच से गुजरते हैं। फिर मैकबैथ का प्रवेश]

मैकबैथ : यदि यह काम मुझे करना है तो क्यो न मैं इसे शीघ्र से शीघ्र कर डालूं। यदि इस एक खून मे हाथ धोने से वे सारे परिणाम रुक सके और हमे सफलता मिल सके, समय के अथाह समुद्र के बीच मौत का यह पतला-सा किनारा है, यदि हमारे इस कदम उठाने से वही इस समस्या का प्रारम्भ और अन्त हो तो हम अपने भविष्य के लिये अपने जीवन का भी खतरा सिर पर ले लेगे ·· पर, फिर ऐसे पापो का दण्ड भी तो हमे यही भोगना पडेगा। हम दूसरो को कहते है कि हमारे लिये खून कर दो। पर जब उनके हाथ किसी के खून से रग जाते है तो उसका कठोर दण्ड हमारे ही सिर पर आकर पडता है। ईश्वर के निष्पक्ष न्याय मे मैंने कभी-कभी यह भी देखा है कि जो ज़हर का प्याला दूसरो के लिये भर कर हम तैय्यार करते है वह हमारे ही ओठो के नीचे आ लगता है। नहीं! मेरे सम्राट की दूने विश्वास के साथ यहाँ रक्षा होनी चाहिये क्योकि एक तो उनका सम्बन्धी और दूसरे उनकी प्रजा होने के नाते यह मेरा कर्त्तव्य है। पर्याप्त कारण हैं ये इस घृणित हत्या के काम के विरुद्ध। आज वे मेरे अतिथि हैं, उस नाते क्या उनका खून करने के लिये मुझे अपने हाथों मे कटार लेनी चाहिये? नहीं! मुझे तो उन सभी रास्तो तक को रोक देना चाहिये जहाँ उनके जीवन का हत्यारा घुस सके। और इन सबके अलावा यह डंकन अपने व्यवहार मे इतना सीधा और सच्चा है कि उसकी हत्या के

डरावने समय मे उसके गुण ही देवताओ के नक्कारो की तरह ज़ोर से पुकार उठेंगे—ठहरो ! नही ! नही !! और नगे नव-जात शिशुओ की तरह ससार के हृदय मे बसी दया बहती हवा मे रो उठेगी और आकाश के देवता वायुरूपी अपने अदृश्य वाहनो पर चढ कर इस घृणित इरादे की बात पुकार-पुकार कर सबको सुना देंगे जिसे जो भी सुनेगा उसी का हृदय फट जायगा और आंखो से इतने आंसू बहेगे कि वायु का वेग भी उससे कम हो जायेगा।

मेरी महत्त्वाकाक्षा के सिवाय क्या है इस डकन के जीवन से मुझे आपत्ति जो मुझे इस घृणित इरादे की ओर खीच कर ले जाय ?

पर कैसी बात है ! यह महत्त्वाकाक्षा ! क्या यह है ? क्या यह ठीक उस सवार की तरह नही जो कभी-कभी अपना निशाना चूक कर हारा हुआ-सा दूसरी ओर जा गिरता है।

[लेडी मैकबैथ का प्रवेश]

क्यो ? क्या समाचार है ?

लेडी मैकबैथ . उन्होने करीब-करीब खाना खा लिया है। पर तुम वहां से आ क्यो गये ?

मैकबैथ . क्या वे मेरे बारे मे कुछ पूछ रहे थे ?

लेडी मैकबैथ : हां ! क्या तुम नही जानते ?

मैकबैथ अब हम इस इरादे की बात आगे नही बढायेगे। सोचो तो, अभी-अभी सम्राट ने मुझे इन उच्च पदो मे सम्मानित किया है और फिर सभी लोगो के हृदय मे मेरे प्रति कैसे-कैसे पवित्र विचार हैं। इनका मै खून नही करना चाहता प्रिये ! उन्हे बचाये रखना ही चाहता हूँ।

लेडी मैकबैथ : ठीक ही है। फिर यह बताओ कि क्या कुछ मतवाले

होकर राजमुकुट की अभिलाषा कर रहे हो ? तुम्हारी यह आशा जो पहले पूरी तरह सो-सी गई थी अब उठी भी तो इस तरह डर के मारे पीली होकर। कहाँ है इसमे वह स्वच्छन्दता जो कुछ समय पहले थी ? क्या अब से जो मेरे प्रति भी तुम्हारा प्रेम है उसको भी इसी तरह अस्थिर और बिना किसी आधार का मानूँ ? क्या जिस वस्तु को प्राप्त करने की तुम्हारी इतनी लालसा है उसके लिये कदम आगे बढाने का साहस तुम्हारे अन्दर मर चुका है ? बताओ, मैं पूछती हूँ कि जिसको तुम अपने जीवन का ऐश्वर्य्य, महानता और गौरव कहते हो उसे छोडकर क्या एक कायर का-सा जीवन बिता लोगे ? बताओ, क्या उसी मे तुम्हे सन्तोष मिलेगा ? ठीक है, तुम उसी बिल्ली की तरह हो जो पानी मे पड़ी मछली को खाना तो चाहती है पर अपने पैर उस पानी मे भिगोना नही चाहती।

मैकबैथ : बस, चुप हो जाओ, और अधिक नही, मैं प्रार्थना करता हूँ, बस ! कौन कहता है मै कायर हूँ ? इस पृथ्वी पर रहने वाले एक पुरुप मे जितना साहस होना चाहिये. वह प्रत्येक काम करने के लिये मेरी रगो मे है। कौन है ऐसा जो मुझसे अधिक साहसपूर्ण कार्य्य कर सके।

लेडी मैकबैथ : तो फिर बताओ, जब तुमने मुझे इस षड्यन्त्र की बात बताई थी उस समय कौन पशु तुम्हारे मस्तिष्क से बोल रहा था ? मैं कहती हूँ, तुम उसी समय एक पुरुप कहलाने के योग्य थे जब तुमने यह षड्यन्त्र बनाया ही था और अब इसे पूरा करके तो सचमुच एक वीर पुरुप कहलाने के सच्चे अधिकारी होगे। क्या तुम भूल गये कि जब तुमने इस षड्यन्त्र की बात सोची थी तब न तो अपने पास उसके पूरा करने का उचित अवसर था और न ही उपयुक्त

डरावने समय मे उसके गुण ही देवताओ के नक्कारो की तरह ज़ोर से पुकार उठेगे—ठहरो ! नही ! नही !! और नगे नवजात शिशुओ की तरह ससार के हृदय मे बसी दया बहती हवा मे रो उठेगी और आकाश के देवता वायुरूपी अपने अदृश्य वाहनो पर चढ कर इस घृणित इरादे की वात पुकार-पुकार कर सवको सुना देंगे जिसे जो भी सुनेगा उसी का हृदय फट जायगा और आँखो से इतने आँसू वहेगे कि वायु का वेग भी उससे कम हो जायेगा ।

मेरी महत्त्वाकाक्षा के सिवाय क्या है इस डकन के जीवन से मुझे आपत्ति जो मुझे इस घृणित इरादे की ओर खीच कर ले जाय ? पर कैसी बात है ! यह महत्त्वाकाक्षा ! क्या यह है ? क्या यह ठीक उस सवार की तरह नही जो कभी-कभी अपना निशाना चूक कर हारा हुआ-सा दूसरी ओर जा गिरता है ।

[लेडी मैकबैथ का प्रवेश]

क्यो ? क्या समाचार है ?

लेडी मैकबैथ : उन्होने करीव-करीव खाना खा लिया है। पर तुम वहाँ मे आ क्यो गये ?

मैकबैथ : क्या वे मेरे बारे मे कुछ पूछ रहे थे ?

लेडी मैकबैथ : हाँ ! क्या तुम नही जानते ?

मैकबैथ : अव हम इस इरादे की वात आगे नही वढायेगे। सोचो तो, अभी-अभी सम्राट ने मुझे इन उच्च पदो मे सम्मानित किया है और फिर सभी लोगो के हृदय मे मेरे प्रति कैसे-कैसे पवित्र विचार है। उनका मै खून नही करना चाहता प्रिये ! उन्हे वचाये रखना ही चाहता हूँ।

लेडी मैकबैथ : ठीक ही है। फिर यह वताओ कि क्या कुछ मतवाले

होकर राजमुकुट की अभिलाषा कर रहे हो ? तुम्हारी यह आशा जो पहले पूरी तरह सो-सी गई थी अब उठी भी तो इस तरह डर के मारे पीली होकर। कहाँ है इसमे वह स्वच्छन्दता जो कुछ समय पहले थी ? क्या अब से जो मेरे प्रति भी तुम्हारा प्रेम है उसको भी इसी तरह अस्थिर और बिना किसी आधार का मानूं ? क्या जिस वस्तु को प्राप्त करने की तुम्हारी इतनी लालसा है उसके लिये क़दम आगे बढाने का साहस तुम्हारे अन्दर मर चुका है ? बताओ, मैं पूछती हूं कि जिसको तुम अपने जीवन का ऐश्वर्य्य, महानता और गौरव कहते हो उसे छोड़कर क्या एक कायर का-सा जीवन बिता लोगे ? बताओ, क्या उसी में तुम्हें सन्तोष मिलेगा ? ठीक है, तुम उसी बिल्ली की तरह हो जो पानी मे पड़ी मछली को खाना तो चाहती है पर अपने पैर उस पानी मे भिगोना नही चाहती।

मैकबैथ : बस, चुप हो जाओ, और अधिक नही, मै प्रार्थना करता हूँ, बस ! कौन कहता है मैं कायर हूं ? इस पृथ्वी पर रहने वाले एक पुरुप मे जितना साहस होना चाहिये. वह प्रत्येक काम करने के लिये मेरी रगो मे है। कौन है ऐसा जो मुझसे अधिक साहसपूर्ण कार्य्य कर सके।

लेडी मैकबैथ : तो फिर बताओ, जब तुमने मुझे इस पड्यन्त्र की बात बताई थी उस समय कौन पशु तुम्हारे मस्तिष्क से बोल रहा था ? मैं कहती हूँ, तुम उसी समय एक पुरुप कहलाने के योग्य थे जब तुमने यह पड्यन्त्र बनाया ही था और अब इसे पूरा करके तो सचमुच एक वीर पुरुप कहलाने के सच्चे अधिकारी होगे। क्या तुम भूल गये कि जब तुमने इस पड्यन्त्र की बात सोची थी तब न तो अपने पास उसके पूरा करने का उचित अवसर था और न ही उपयुक्त

स्थान ? फिर भी उन्हे पैदा करने का तुममे एक साहस था लेकिन अब तो उचित अवसर और स्थान दोनो तुम्हारे सामने ही हैं, फिर जितनी सुविधा सामने है उतनी ही कायरता तुम्हारे अन्दर बढती जाती है। मैंने बच्चो को दूध पिलाया है और यह जानती हूँ कि जो बच्चा माँ की छाती से चिपक कर दूध पीता है वह उसे कितना प्यारा होता है फिर भी जैसी सौगन्ध खाकर तुमने अपना पक्का इरादा बनाया था यदि मुझे अपना इरादा इस तरह पूरा करना पडता तो जानते हो मैं क्या तक कर डालती ? अपने मुस्कराते हुए मासूम बच्चे को भी छाती से हटा कर उसके टुकडे-टुकडे करने मे तनिक भी नही हिचकिचाती।

मैकबैथ : लेकिन लेकिन अगर हमारा यह षड्यन्त्र किसी तरह पूरा न हो सका तब ?

लेडी मैकबैथ : पूरा न हो सका ? हमसे ? अगर तुम अपने पूरे साहस से काम लो तो हम कभी असफल नही हो सकते। सुनो, जब यह डकन सो जाय, और अपनी दिन भर की यात्रा की थकान के कारण मुझे विश्वास है यह शीघ्र ही गहरी नीद सो जायेगा, तब मै उसके शयनागार के दोनो अधिकारियो को शराब पिला कर ऐसा कर दूंगी कि मस्तिष्क को काबू मे रखने वाली जो मनुष्य की स्मृति होती है वह शराब के नशे मे धुएँ की तरह उड जायेगी और वे पूरी तरह अपनी बुद्धि खो कर पागल जैसे हो जायेंगे। तब वे उस नशे में चूर हो कर सूअरो की तरह ऐसे सोये रहेगे मानो उनमे जान बची ही न हो। तब इस अकेले डकन के साथ हम क्या नही कर सकते ? फिर नशे मे चूर पडे इन अधिकारियो के ऊपर डकन के खून का अपराध लादना क्या कुछ मुश्किल होगा ?

मैकबैथ : ईश्वर करे तुम्हारी कोख से वीर पुरुष बनने वाले पुत्र ही पैदा

हो क्योकि तुम्हारा इस तरह का निर्भीक स्वभाव उन्ही के लिये ही उपयुक्त है। ठीक है, अगर हम इन दोनो अधिकारियो के शरीर पर खून के दाग लगा दे और उन्ही की कटारो को काम मे ले तो क्या यह नही समझा जायेगा कि यह खून इन्होने ही किया है ?

लेडी मैकवैथ : अवश्य, कौन इसे झूठ मानेगा और फिर खासकर जव हम उसकी मृत्यु पर खूब रोयेगे और इधर-उधर चिल्लायेगे, पुकारेगे ?

मैकवैथ : तो अव मै पूरी तरह दृढ हूँ और जितना भी साहस और पौरुप मेरी रगो मे है उसे इस खतरनाक काम मे लगा दूंगा। जाओ, और अपने इस सुन्दर चेहरे पर वनावटी हँसी हँस कर संसार को धोखा दो। जानती हो ? कपट भरे हुए हृदय की वात कपट भरा हुआ चेहरा ही छिपा सकता है।

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

[इनवर्नेस । मैकबैथ के महल का आँगन]

[बैंको और फ्लीन्स का मशालें लिये हुए प्रवेश]

बैंको : फ्लीन्स ! क्या बज रहा होगा इस समय ?

फ्लीन्स : चाँद तो छिप गया है। घंटे की आवाज अभी तक मैंने नही सुनी है पिता जी ।

बैंको : चाँद तो बारह बजे छिप जाता है।

फ्लीन्स : पर मेरे विचार से तो इस समय बारह से अधिक ही बज रहा होगा ।

बैंको : अच्छा, तो यह लो मेरी तलवार और यहाँ खडे रहो। अँधेरा हो गया। मालूम होता है आसमान भी चाँद को छिपा कर इसके लिये सतर्क है कि इस ससार मे अधिक प्रकाश न आ पाये। उनकी सभी मशालें बुझ चुकी है। इसे भी ले जाओ। मेरी आँखे तो गहरी नींद के कारण इस तरह झुकी पड रही है मानो कोई शीशे का-सा बोझ इन पर पडा हो लेकिन फिर भी मै सोना नही चाहता ।
ओ दयालु स्वर्ग के देवताओ ! सोते समय मेरे मन मे जो कभी-कभी पाप भरे हुए काले विचार उठते हैं उन्हे रोक दो।
कौन आ रहा है यहाँ ? मेरी तलवार दो।

[मैकबैथ का प्रवेश । साथ में एक सेवक मशाल लिये हुए]

मैकबैथ : कोई अन्य नहीं, एक मित्र !

बैंको : ओ, क्या श्रीमान् अभी तक सोये नही ? सम्राट तो सो गये हैं। बडे ही प्रसन्न थे आज वे। तुम्हारे सेवकों को बडे-बडे पुरस्कार

भेजे हैं उन्होने। तुम्हारी पत्नी ने उनका हार्दिक स्वागत किया है इसी लिये यह हीरा उन्होने उनको उपहारस्वरूप भेजा है। अब पूर्ण सुख और सतोष के साथ वे सो गये है।

मैकबेथ : वैसे तो पूरी तरह स्वागत की तैय्यारी के लिये हमे पर्याप्त समय नही मिल सका अत स्वागत मे कुछ त्रुटियाँ अवश्य रह गई जो अधिक समय मिलने पर न रहती।

वैंको : जैसा भी हुआ बहुत सुन्दर है। छोड़ो इसे। · · ·हाँ सुनो, कल रात को सपने मे फिर मैने उन तीनो डाइन बहनो को देखा था। तुम्हे तो उनकी बात कुछ सच्ची भी पड़ी है।

मैकबेथ : मैं उनके बारे मे अब कुछ नही सोचना चाहता पर फिर भी यदि तुम अपना कोई समय निकाल सको तो कुछ समय बैठ कर हम इसके बारे मे बाते करे।

वैंको : जब भी तुम्हे सुविधा हो, मै तो हर समय तुम्हारी सेवा मे उपस्थित हूँ।

मैकबेथ : ठीक है, समय आने दो, यदि उस समय तुमने मेरी बात मानी तो इससे तुम्हे उच्च सम्मान मिलेगा वैंको।

वैंको : अवश्य मानूंगा पर इस नये सम्मान को पाने के लिये मै लोगो के तथा सम्राट के हृदय मे जो कुछ भी मेरा सम्मान है उसे नही खोना चाहता। मेरी आत्मा पहले की तरह ही पवित्र रहे और किसी प्रकार का विश्वासघात सम्राट के प्रति मुझे न करना पडे तो अवश्य मैं तुम्हारी बात मानूंगा।

मैकबेथ : अच्छा, जाओ इस बीच मे जाकर तुम कुछ आराम कर लो।

वैंको : धन्यवाद ! तुम भी इस समय आराम कर लो।

[वैंको और फ्लीन्स का प्रस्थान]

मैकबेथ : (सेवक से) जाओ और अपनी स्वामिनी से जाकर कह दो कि

मेरी शराब की व्यवस्था हो जाय तो घंटी बजा कर मुझे बुला लें। तुम इसके बाद जाकर सो सकते हो।

[सेवक जाता है।]

मेरे सामने रखी हुई क्या यही वह कटार है जिसकी मूंठ मेरी तरफ मुडी हुई है। आ, ओ प्यारी कटार! मेरे हाथो को आकर चूम ले। लेकिन, हैं! यह क्या? मैं तुझे अपनी आँखो के सामने देख रहा हूँ और फिर भी अपने हाथ मे नही ले पा रहा हूँ। ओ मौत की-सी डरावनी कल्पना पैदा करने वाली शक्ति! तुझे क्या मैं केवल देख ही सकता हूँ, हाथ से छू नही सकता? या बता, तू मेरे मस्तिष्क की कल्पनामात्र तो नही है जो मनुष्य के ऐसे भावावेश मे निश्चित ही धोखा देने के लिये आती है? अब भी मैं देख रहा हूँ, तू उतनी ही वास्तविक दीख रही है जैसे मेरी यह तलवार जिसे मैं म्यान मे से खीचता हूँ। तू मुझे ठीक उसी तरफ ले जा रही है जहां मै जाना चाहता था। तब क्या तू उस यन्त्र की तरह नही है जिसे मुझे इस अवसर के लिये प्रयोग मे लाना चाहिये था? अवश्य! तब या तो मेरी आंखे मुझे धोखा दे रही हैं या शरीर की अन्य इन्द्रियो को छोड कर ये आँखे ही विश्वास करने के योग्य है अभी तक भी मै तुझे अपनी आंखो के सामने देख रहा हूँ और यह क्या? जहां पहले कुछ नही था वहां तेरी इस मूंठ और धार पर खून की बूंदे! नही! नही!! ऐसी कोई चीज नही है। यह मेरा खूनी षड्यन्त्र है जो मुझे यह सब कुछ दिखा रहा है। आधी से ज्यादा दुनिया के आदमी मुर्दो की तरह रात की माया मे सोये हुए हैं। न जाने कितने डरावने और बुरे-बुरे सपने इस समय उनके मस्तिष्क मे कोलाहल मचा रहे होगे।

अरे, यह क्या? ये तो डाइनें है। मालूम होता है अपनी देवी हिकेट

को वलि चढाने के लिये ही ये यहाँ इकट्ठी हुई है। यह भेडिया भी पुकार-पुकार कर वता रहा है कि अभी रात है, और इसी भरोसे मन मे घवराया हत्यारा हत्या करने के लिये चुपके-से एक दैत्य की तरह ऐसे जा रहा है जैसे तारकिन ल्यूसिरस के साथ व्यभिचार करने के लिये गया था।

ओ पृथ्वी! जिधर भी मेरे ये कदम जाये उनकी आवाज को मत सुनना। मुझे डर है कि ये वेजान पत्थर भी कही न वोल उठे और मेरे वारे मे वाते करने लग जायं। इस समय जो सन्नाटा है जिसमे भय की काली छायाएँ चुपचाप खडी हुई है, वस यही अवसर के लिये ठीक है।' '

ओ, मै अभी तक ये डर की वाते ही कर रहा हूँ और वह डकन अभी तक जीवित सोया हुआ है। ' नही, ' '

ओ ठीक ही है इस तरह कोरी भावुकता और कल्पना की उड़ान किसी कार्य्य के आवेश को ठंडा कर ही देती है।

[घटी वजती है।]

पर क्या है, मै गया और यह काम पूरा हुआ। ओ, वह घटी मुझे वुला रही है। मत सुन डंकन! इसे, यह वह आखिरी घंटी है जो तेरी मौत को वुला रही है।

[जाता है।]

दृश्य २

[वही स्थान। लेडी मैकवैथ का प्रवेश]

लेडी मैकवैथ : उसी शराव ने जिसमे वे नशे में चूर पड़े हुए है मेरे खून मे वीरता का एक जोश भर दिया है। जिसने उन्हे पागल वना

दिया है और वे बेहोश पडे हैं उसी से मेरे अन्दर एक आग-सी जल उठी है।

वह सुनो, शान्त !

वह उल्लू पुकार-पुकार कर उस अभागे को मौत की सूचना दे रहा है। बस, अब यम के दूत उसकी आँखो के सामने आ गये होगे। दरवाज़े खुले हुए हैं और शयनागार के सभी अधिकारी शराब के नशे में बेहोश इस तरह खर्राटे ले रहे है मानो वे अपने कर्त्तव्य की हँसी-सी उडा रहे हो। पर हाँ मैंने उनकी शराब मे जहर मिला दिया है, इसलिये अब ज़िन्दगी और मौत का सघर्ष है। देखती हूँ वे जीवित रहते है या नागिन मौत उन्हे डस जाती है।

मैकवैथ : (अन्दर से घबराकर) कौन ? कौन है वहाँ ? क्या है ?

लेडी मैकवैथ · हाय, मुझे डर है कि उनकी नीद खुल गई है और अभी तक भी तुमने काम पूरा नही किया। इस तरह काम शुरू करके अधूरा छोड देने से तो हमारा सर्वनाश हो जायेगा। सुनो ! मैंने उनकी कटारो को तैय्यार कर दिया है और उनसे वह नही बच सकता है। सच कहती हूँ, यदि सोती अवस्था मे उनका चेहरा मेरे पिता के चेहरे से मिलता हुआ न होता तो स्वय मै इस काम को कर डालती, मेरे पति !

[मैकवैथ का प्रवेश]

मैकवैथ कर डाला है मैंने यह काम। क्या तुमने कोई आवाज नही सुनी ?

लेडी मैकवैथ · सिर्फ उल्लू और झींगुरो को सन्नाटे मे पुकारते हुए सुना था। क्या तुम कुछ नही बोले थे ?

मैकवैथ कब ?

लेडी मैकवैथ . अभी-अभी।

मैकवैथ : जिस समय मै उतरा था उस समय की वात कह रही हो ?

लेडी मैकबैथ : हाँ, हाँ, उसी समय।

मैकवैथ : सुनो, उस दूसरे शयनागार मे कौन सो रहा है ?

लेडी मैकवैथ : डोनलवेन।

मैकवैथ : (अपने हाथों की ओर देखता हुआ) ओ, कैसा दु खदायी है यह हाथो का खून ! ओह ! ....कितना वुरा !

लेडी मैकबैथ . दु खदायी, वुरा ? अव यह कहना तो मूर्खता है।

मैकवैथ : ओह, वहाँ एक तो अपनी नीद मे ही खिलखिला कर हँस पडा था और दूसरा जोर से पुकारा था—'हत्या ! हत्या !' इस तरह उन दोनो पहरेदारो ने एक दूसरे को जगा दिया। मै खड़ा रह गया और मैने उनकी वाते सुननी चाही लेकिन उन्होने तो उठकर ईश्वर से प्रार्थना ही की और फिर विना कुछ वोले एक दूसरे की तरफ इशारा करके वे सो गये।

लेडी मैकबैथ : वहाँ तो दो आदमी साथ-साथ सो रहे है।

मैकवैथ : एक पुकार उठा था—'हे ईश्वर ! वचाओ' और दूसरा सिर्फ 'आमीन' कहकर ऐसे कहता-कहता रुक गया मानो उन्होने मुझे मेरे इन खून से रँगे हाथो के साथ देख लिया हो। उनके मुँह से निकलते शब्द भय से कांप रहे थे। उन्हे सुनकर मै 'आमीन' तक भी न कह सका जवकि उन्होने कहा—'हे ईश्वर ! वचाओ हमे।'

लेडी मैकवैथ . इतनी गहराई से इस वात को न सोचो। यह सव कुछ भी नही है।

मैकवैथ · लेकिन, फिर मेरे मुँह से 'आमीन' तक भी उस समय क्यो नही निकल पाया जवकि ईश्वर की सहायता की मुझे आवश्यकता थी और 'आमीन' यह शब्द मेरे गले मे ही अटक रहा था।

लेडी मैकवैथ . ऐसे कामो मे इस तरह सोचते हुए नही उलझना चाहिये

कमरो मे चलना चाहिये। थोडा-सा पानी ही हमारे हत्या के सारे अपराध को धो देगा। थोडा-सा पानी ही फिर क्या प्रमाण रहेगा। कितना आसान है तब यह ! तुम्हारे स्वभाव मे जो दृढता और साहस था वह तो पूरी तरह मर चुका है।

[अन्दर खटखट की आवाज]

वह सुनो, कोई बराबर दरवाज़ा खटखटाये जा रहा है। अपने कपडे पहन लो। हो सकता है हमे वहाँ जाना पड जाय तो उस समय यही मालूम होगा कि हम सम्राट् की रक्षा के लिये ही जाग रहे है। ठीक है न ? अब इस तरह पागलो की तरह कही खोये-खोये न रहो।

मैकवैथ : मुझे याद आ रहा है। अब भी वह खून मेरी आँखो के सामने दीख रहा है। ओह ! कितना अच्छा हो मै पागल हो जाऊँ।

[अन्दर फिर खटखट की आवाज]

जाग जा ओ डकन ! इस आवाज़ से आँखें खोल ले। ओह ! मै कितना चाहता हूँ कि अब तू फिर जाग जा।

[जाता है।]

दृश्य ३

[वही स्थान। एक द्वारपाल का प्रवेश]

[अन्दर वही खटखट की आवाज]

द्वारपाल (Porter) : सचमुच कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है। ओ, चाहे कोई यमपुरी के द्वार का द्वारपाल ही क्यो न हो उसे बार-बार इस दरवाज़ा खोलने मे कितना काम करना पडता है।

[अन्दर से फिर खटखट की आवाज]

खटखट, खटखट, क्या है यह खटखट ? यमराज के नाम पर मै

पूछता हूँ कौन हो तुम ? बताओ। अच्छा तो यह वही किसान है जिसने यह देखकर कि फसल खूब हो रही है और अब उसका जोड़ा हुआ अनाज बहुत सस्ता बिकेगा, अपने गले मे फन्दा पहनकर अपने आपको फाँसी दे ली थी ? ओ, ठीक, इस नरक मे घुसने के लिये ठीक समय पर आये हो तुम। ठीक है, ठीक है पर हाँ यह तो बताओ, तुम्हारे पास रूमाल तो काफी होगे ही क्योकि यहाँ इस नरक मे इतना पसीना तुम्हारे शरीर से निकलेगा कि पूरी तरह बहने लग जायेगा।

[अन्दर फिर खटखट]

फिर खटखट, खटखट। मै दूसरे शैतान के नाम पर पूछता हूँ कौन हो तुम ? बोलो। ओ, ठीक, ठीक, समझ गया, दुरंगा आदमी; एक ही समय मे दो-दो बाते कहने वाला आदमी ! ओ, सच और झूठ दोनो बातो मे सौगन्ध खाकर ईमान उठा जाने वाला आदमी। वही जो भगवान की आड़ मे खुल कर अनाचार और अत्याचार करता था ? फिर भी इस झूठ और सच से स्वर्ग नही जा सका न ? ठीक है, ठीक है, आ जाओ, ओ दुरगे आदमी यहाँ तुम्हारे लिये जगह है।

[अन्दर फिर खटखट की आवाज]

खटखट, खटखट, समझ मे नही आता फिर यह क्या खटखट है ? कौन हो तुम ? ओ दर्ज़ी ! ठीक है, वही दर्ज़ी हो न तुम जो उस सिलने दिये गये विरजिस के कपडे मे से कुछ चुरा रहे थे। अन्दर आ जाओ दर्ज़ी ! आओ। यहाँ इस नरक मे तुम्हारे लोहे के लिये खूब आग मिलेगी। आ जाओ।

[अन्दर फिर खटखट]

फिर खटखट, अब भी चैन नही। ओह! आखिर तुम कौन हो? बोलो।

पर हां, अरे यहां तो इतनी ठड है फिर नरक कैसे हो सकता है यह? मै भूल रहा हूँ। नही, अब और अधिक इस यमपुरी का द्वार-पाल मैं नही बनूंगा। मैने सोचा था कि सभी तरह के पेशेवरो को, जो आसानी से पाप करते रहते हैं, आसानी से ही नरक की उस जलती हुई आग के पास चला जाने दूं।

[अन्दर फिर खटखट की आवाज]

हां, हां, पर मेरी यह प्रार्थना है कि वेचारे इस द्वारपाल की ओर से नज़र फेर जाना।

[द्वार खोलता है।]

[मैकडफ और लैनोक्स का प्रवेश]

मैकडफ : क्यो? क्या रात वहुत देर से सोये थे जो अभी तक भी विस्तरे मे पडे हुए हो?

द्वारपाल नही, सच मानिये स्वामी! मुर्गे की दूसरी वाँग तक हम जागते रहे थे।

मैकडफ : क्या तुम्हारे स्वामी यही है?

[मैकवैथ का प्रवेश]

अरे, वह तो आ रहे है। मालूम होता है हमारे इस तरह वार-वार खटखटाने मे उनकी नीद टूट गई है।

लैनोक्स : अभिवादन करता हूँ श्रेष्ठ!

मैकवैथ : आप दोनो को भी मेरी ओर से अभिवादन है।

मैकडफ : श्रेष्ठ थेन! क्या सम्राट् जाग गये हैं?

मैकवैथ : अभी तक तो नही जागे मालूम होते हैं।

मैकडफ : उन्होने तो मुझे इससे पहले ही आने की आज्ञा दी थी पर

मुझे कुछ देर हो गई।

मैकवैथ : चलो, मै तुम्हे वहाँ ले चलता हूँ।

मैकडफ़ : श्रेष्ठ थेन ! मैं जानता हूँ कि तुम यह सब कुछ खुशी से ही कर रहे हो पर इसमे तुम्हे तकलीफ तो अवश्य होगी।

मैकवैथ : जिस काम को करने मे हृदय मे खुशी हो उसमे तकलीफ कैसी ? देखो, वही दरवाजा है।

मैकडफ़ : वहाँ से मुझे उनको पुकारना चाहिये। क्यों नही ? हमे तो इतना अधिकार मिला ही हुआ है।

[मैकडफ जाता है।]

लैनोक्स : क्या सम्राट यहाँ से आज ही वापिस जायेगे ?

मैकवैथ : हाँ, इरादा तो उनका यही है।

लैनोक्स : आज रात कैसी डरावनी थी। मालूम है ? जहाँ हम सो रहे थे वहाँ जलती हुई चिमनियाँ टूट-टूट कर हवा के झोको के साथ नीचे गिर पड़ी और कुछ तो कहते हैं कि हवा की साँय-साँय में कुछ मौत की-सी बड़ी डरावनी चीखे सुनाई देती थी। ऐसा लगता था मानो कि वे चीखे और भी जोर से पुकार कर कह रही थी—'सावधान, बुरा समय आ रहा है।' उल्लू भी रात भर अपनी बुरी भयावनी बोली मे बोलता रहा।
कुछ तो यहाँ तक कहते है कि इस सबसे डरकर एक बार तो पृथ्वी भी थर-थर काँप उठी थी।

मैकवैथ : हाँ, यह रात तो इतनी ही डरावनी थी।

लैनोक्स . मेरी छोटी-सी याद मे तो मैंने ऐसी रात कभी नही देखी।

[मैकडफ का पुनः प्रवेश]

मैकडफ : ओ, गजब ! गज़ब हो गया !! गज़ब हो गया !!!
न तो कुछ मुंह से कहते ही बनता है और न हृदय कभी भी इसको

कल्पना ही कर सकता था।

मैकबेथ }
लैनोक्स } क्यो ? क्या हुआ ?

मैकडफ मौत की काली छाया नाच रही है। ओ ! किसी घृणित हत्यारे ने सम्राट का खून कर दिया है !

मैकबेथ : क्या ? क्या कह रहे हो तुम ? खून ? यहाँ ?

लैनोक्स सम्राट का खून ?

मैकडफ : हाँ, जाओ विश्वास न हो तो उस कमरे मे जाकर उस भयानक दृश्य को देख लो और अपनी आँखें फाड लो। मत कहो मुझसे कुछ कहने के लिये। स्वय जाकर तुम देखो और समझो।

[मैकबेथ और लैनोक्स जाते हैं।]

उठो ! उठो !!

खतरे की घटी वजा दो। खून ! षड्यन्त्र ! बैंको ! डोनलवेन ! मैलकॉम ! कहाँ हो ? उठो ! मौत की-सी इस गहरी नीद को दूर करो। देखो, यह खून ! हत्या ! उठो ! उठो !! यह देखो प्रलय का अन्तिम दिन आ गया। मैलकॉम ! बैंको ! छोड दो अपनी नीद और मौत के इस भयानक दृश्य को देखने के लिये इसी तरह उठे चले आओ जैसे भूत-प्रेत अपनी-अपनी कब्रो से उठ कर चले आते है ! वजा दो खतरे की घटी।

[घटी वजती है।]

लेडी मैकबेथ क्या हुआ यह ? सभी सोये हुए लोगो को उठाने के लिये यह खतरे की घटी कैसे वजाई जा रही है ! वोलो, वताओ क्या हुआ ?

मैकडफ : ओ देवी ! मत पूछो मुझसे। जो कुछ मै वताऊँगा वह तुम्हे सुनाने लायक नही है। तुम स्त्री हो और स्त्री को ऐसी वात वताना

उसकी हत्या करने के बराबर है देवी !

[बैंको का प्रवेश]

ओ बैंको ! बैंको !!

हमारे स्वामी का किसी नीच हत्यारे ने खून कर डाला है।

लेडी मैकबैथ : है ! क्या कहा ? खून ? हमारे घर मे खून ?

बैंको · कही भी होता उतना ही बुरा होता देवी ! पर नही ! मत कहो यह। मेरे प्यारे डफ ! कह दो कि यह सब कुछ झूठ है। नही··· ।

[मैकबैथ तथा लैनोक्स का पुनः प्रवेश]

मैकबैथ : ओह, क्या अच्छा होता कि ऐसे अभागे समय से एक घंटा पहले ही मै मर जाता, तो मै अपनी अन्तिम श्वासें तो सन्तोष के साथ ले सकता। पर क्या है अब ? इसी क्षण से मुझे लगता है कि कोई सत्य नही है मनुष्य के इस क्षुद्र जीवन मे। उसका यह सब अहकार मिट्टी के खिलौनो का-सा खेल है। क्या यश और गौरव अभी भी जीवित है ? नही ! जिन्दगी की शराब लुट चुकी है और इस आसमान के नीचे खोखली दुनिया मे अब सिर्फ गन्दगी और कीचड बच रही है।

[मैलकॉम तथा डोनलबेन का प्रवेश]

डोनलबेन : क्या हुआ यह ?

मैकबैथ तुम यहाँ हो और तुम्हें अभी कुछ पता ही नही ? ओ डोनल-बेन ! वही सोता जो तुम्हारे जीवन-लता को पानी दे कर सीचा करता था आज हमेशा-हमेशा के लिये सूख गया है। तुम्हारे जीवन का आधार मिट गया है।

मैकडफ. किसी हत्यारे ने तुम्हारे पिता सम्राट का खून कर डाला है।

मैलकॉम : है, क्या कहा ? किसने किया है यह सब ?

लैनोक्स : मालूम तो यही होता है कि उनके शयनागार के पहरेदारों ने

ही यह काम किया है। उनके हाथ और चेहरे सब खून से रगे हुए थे और इसी तरह उनकी कटारें भी मानो खून मे डूबी हुई थी। जव हमने उनके तकियो की तरफ देखा तब हमे खून से लिथडी वहाँ पडी हुई मिली। हमारे वहाँ पहुँचते ही उन्होने एक वार हमारी तरफ देखा और देख कर वे एक साथ कुछ घवरा-से गये। मुझे तो उन्हे देखकर ऐसा लगता था कि उनके वीच मे तो हर किसी की जान को खतरा हो सकता था।

मैकवैथ : पर ओह! मैं अपने उस भावावेश के लिये कितना पछताता हूँ जिसने मुझसे उनका यह खून करवा दिया।

मैकडफ : तुमने? पर ऐसा किया क्यो तुमने?

मैकवैथ किया क्यो? तो फिर तुम्ही वताओ कि इस ससार मे कौन ऐसा है जो ऐसे समय मे शान्ति, धैर्य्य और वुद्धिमानी से काम ले सकता है जव क्रोध की आग उसके हृदय मे जल रही हो? क्या एक वफादार आदमी इस तरह अपने स्वामी की हत्या का यह दृश्य देख कर अपने आपको वस मे रख सकता था? नही, कोई नही। मेरे सम्राट के प्रति मेरे असीम प्रेम ने मेरी सारी वुद्धि पर परदा डाल दिया। मैने देखा कि एक तरफ चांदी की-सी देह वाला यह डकन पडा हुआ था और उस देह पर हुए घावो को देखकर तो मुझे लगा कि यम के दूतो के घुसने के लिये किसी ने ये द्वार वना दिये हैं। फिर ठीक दूसरी ओर मैने देखा कि खून से भीगे हुए ये हत्यारे थे। उनकी कटारे पूरी तरह खून से सनी हुई थी। फिर तुम्ही वताओ कि जिसके हृदय मे सम्राट के प्रति निर्भीक प्रेम है वह कैसे अपने आपको ऐसे अवसर पर वस में रख सकता था।

लेडी मैकवैथ : ओह! नही। नही!! ले चलो मुझे यहां से। मुझे दूर ले चलो।

मैकडफ़ : (सेवक से) इस देवी के पास रहो।

मैलकॉम : हमारे मुँह क्यो बन्द हैं डोनलबेन ! जबकि हमारे पिता का जीवन हमसे ही सबसे अधिक सम्बन्धित है ?

डोनलबेन · (मैलकॉम से) क्या बोले हम यहाँ भाई ! जहाँ इसका डर है कि किसी कोने मे छिपा हमारा दुर्भाग्य निकल कर कही हमे ग्रस न ले। चलो, यहाँ से कही दूर भाग चले। अभी हमारा आँसू बहाने का समय यहाँ नही है।

मैलकॉम : (डोनलबेन से) और न अभी कोई ऐसा कार्य्य करने का समय है जिससे हम हमारे गहरे दु.ख को प्रगट कर सके।

बैंको : इस देवी की देखभाल करना।

[लिडी मैकबैथ बाहर लाई जाती है।]

अब ठण्डी हवा से बचने के लिये सभी अपने-अपने कपडे पहन लो और आओ फिर मिल कर इस षड्यन्त्र का आगे तक कुछ पता लगाये। हमारे हृदय का डर और सन्देह हमारे कदमो को आगे बढने से रोकता है। मै उस परमात्मा की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि उन घृणित हत्यारो के छिपे हुए सारे षड्यन्त्र को खोज निकालूंगा।

मैकडफ : यही मै करूंगा।

सभी : हम सब भी ऐसा ही करेगे।

मैकडफ : तो बस अब शीघ्रता से अपने-अपने कपड़े पहन लो और चलो सब लोग उस बड़े कमरे मे इकट्ठे हो कर कुछ योजना बनाये।

सभी : स्वीकार है।

[मैलकॉम और डोनलबेन को छोड़कर सभी चले जाते है।]

मैलकॉम : क्या करोगे अब तुम, बताओ मै सोचता हूँ हमे अब उन-के बीच मे नही रहना चाहिये। बनावटी आँसू तो अपनी आँखो से

वही आदमी आसानी से गिरा सकता है जो झूठा होता है। मैं तो अब इङ्गलेंड चला जाऊँगा।

डोनलवेन : तो मैं आयलैंड चला जाऊँगा। हमारी सुरक्षा के लिये यही अच्छा है कि हम एक दूसरे के पास न रहे और अपने दोनो के भाग्यो को अलग-अलग राहो से चलने दे। इसी जगह जहाँ अब हम हैं मुझे लगता है कि मनुष्य की मुस्कराहट मे कटारें छिपी हुई है। यहाँ जिससे जितना निकट खून का सम्बन्ध है वह उतना ही खून का प्यासा है।

मैलकॉम : और फिर हत्या के लिये छोडा हुआ तीर अभी अपने ठीक निशाने पर जा कर नही लगा है। हमारे लिये सबसे अच्छा इसी मे है डोनलवेन! कि इस तीर के निशाने से बचे। इसलिये चलो, अपना-अपना घोडा लें और शीघ्र यहाँ से भाग चलें। बस अब एक दूसरे से सकोच करने मे समय न बितायें। जानते हो, जहाँ से दया का नामो-निशान पूरी तरह उठ गया हो और चारो ओर खतरा ही खतरा दिखाई दे वहाँ से चुपचाप भाग जाना ही अच्छा है।

[जाते हैं।]

दृश्य ४

[मैकबैथ के महल के बाहर]

[रौस तथा एक वृद्ध पुरुष का प्रवेश]

वृद्ध अपने जीवन के सत्तर बरस मैने गुजारे है और इस बीच न जाने कितनी अजीब भयानक से भयानक घटनाएँ देखी पर इस डरावनी रात को देखकर तो मुझे अपना वह सारा अनुभव कुछ फीका-सा लगता है।

रौस ओह! मेरे अच्छे पिता! क्या आप नही देखते कि जहाँ मनुष्य

ऐसे पाप करने लग जाते है वहाँ आकाश भी मन में क्रुद्ध होकर खून से सनी इस पृथ्वी को डराने लगता है। घडी मे देखिये, दिन निकल आया है पर रात का वह अन्धकार सूर्य्य की किरणो को आकाश मे ही रोके हुए है। क्या है यह ? इस समय जब सूर्य्य की उन जीवनदायिनी किरणो को आकर पृथ्वी को चूमना चाहिये था उस समय चारो ओर यह रात का अन्धकार कैसा ? मुझे तो लगता है कि मनुष्य के इन घृणित पापो को शरम के मारे सूर्य्य देखने का साहस नही कर रहा है।

वृद्ध · जैसी घटना आज घटी है वैसी कभी न तो सुनी और न देखी। मालूम है, पिछले मगलवार को ही एक बाज गर्व मे भर कर आकाश मे उड़ रहा था तो छोटी-छोटी चुहिया मारने वाले एक उल्लू ने उसका पीछा किया और उसे मार गिराया ?

रौस · और डंकन के घोडे कितने सुन्दर और विश्वास के साथ दौड़ने वाले हैं। सभी अच्छी नस्ल के हैं पर सच मानिये, कैसी विचित्र-सी बात है वे सभी पागल हो गये हैं। उन्होने अपनी लगाम वगैरह सब बन्धन तोड डाले है। ऐसा मालूम होता है कि पूरी मनुष्य-जाति के विरुद्ध विद्रोह करने पर वे तुल पडे है। कितनी भी रोकने की कोशिश करने पर रुकते ही नही।

वृद्ध : कोई कह रहा था कि वे एक दूसरे का मांस नोंच-नोच कर ही आपस मे इस तरह एक दूसरे को खा गये।

रौस : ठीक यही बात है। जब मैंने देखा तो मुझे भी आश्चर्य्य होने लगा। लो श्रेष्ठ मैकडफ आ रहे हैं।

[मैकडफ का प्रवेश]

क्यों, अब क्या स्थिति है श्रीमान् ?

मैकडफ · क्या तुम्हें कुछ दिखाई नही पड़ रहा ?

रौस : हां, पर क्या कुछ पता लगा कि किस कमीने ने यह घोर पाप किया है।

मैकडफ उन्ही द्वारपालो ने जिन्हे मैकबैथ ने मार डाला है।

रौस . हाय ! अभागे दिन ! ऐसा करने मे उन द्वारपालो को क्या मिलता ?

मैकडफ : उन्हे तो किसी ने इस काम के लिये किराये पर रखा मालूम होता है। कुछ सुना ? सम्राट् के दोनो पुत्र मैलकॉम और डोनलवेन न जाने छिपकर कहां भाग गये हैं, इसी से इस हत्या का शुभा उन्ही पर जाता है।

रौस · यह भी कैसी अजीब-सी बात है। ओ, उनकी वह अन्धी और मतवाली महत्त्वाकाक्षा उन मां-बाप को भी खा गई जिन्होने इस ससार मे जन्म दिया और पाल-पोस कर बडा किया है।

तब तो अधिक सम्भव यही है कि मैकबैथ ही अब सम्राट बनेगे।

मैकडफ हां, हां, उन्ही का नाम तो सबसे पहले लिया ही गया था। अब राज्याभिषेक के लिये ही वे 'स्कोन' गये हुए है।

रौस . डंकन का मृत शरीर कहां दफनाया गया है ?

मैकडफ वहीं 'कॉमिकिल' मे जो उनके पूर्वजो के समय मे ही राजपरिवार का पवित्र श्मशान है। वही उनकी अस्थियां सुरक्षित रखी जाती है।

रौस क्या तुम 'स्कोन' जाओगे ?

मैकडफ नहीं भाई ! मैं तो फाइफ जाऊँगा।

रौस अच्छा तो मैं 'स्कोन' जाता हूँ।

मैकडफ मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है, सब काम अमन-चैन से वहां पूरा हो जाय जिससे मैकबैथ का राज्याभिषेक भी डंकन के राज्या-

भिषेक की तरह शान्तिपूर्ण ढग से हो जाय।

अच्छा, अलविदा !

रौस : अलविदा ! अलविदा पिता जी !

वृद्ध : परमात्मा सदा तुम्हारे ऊपर दयालु रहे और उन सब पर भी उसकी कृपा रहे जो बुराई को भी भलाई के रूप मे बदल लेते हैं और अपने शत्रु को भी मित्र बनाकर गले लगा लेते है।

[प्रस्थान]

तीसरा अंक

दृश्य १

[फौरेस । राजमहल । बैंको का प्रवेश]

बैंको (स्वगत) जो भी उन डाइनो ने भविष्यवाणी की थी वह सब तुम्हे मिल गया मैकबैथ ! काउडोर के थेन, ग्लेमिस के थेन, यहां तक कि सम्राट् भी अब तुम बन गये हो पर मुझे सन्देह है कि यह सफलता पाने के लिये अवश्य तुमने कुछ विश्वासघात किया है। पर हां, आगे उन डाइन बहनो ने यह भी कहा था कि तुम्हारी सतान राज्य-सिंहासन पर नही बैठ पायेगी। मैं वह बाप हूंगा जिसके पुत्र आगे चलकर सम्राट होगे। मै उनकी जड हूंगा। अगर वे डाइने सच्ची हैं और जैसे तुम्हारे जीवन मे उनकी बातें सच्ची फली हैं वैसे तुम्हारी मनोकामनाओ को पूरा होता देख कर क्या मै यह आशा न करूं कि मेरे जीवन मे भी वे बाते सच्ची फलेगी ?

[तुरही बजती है। सम्राट् के रूप में मैकबैथ का और साम्राज्ञी के रूप में लैडी मैकबैथ का प्रवेश। लैनोक्स, रौस, अन्य सरदार, भद्र महिलाएँ तथा कुछ सेवक साथ में।]

मैकबैथ ये हैं हमारे सम्माननीय अतिथि !

लेडी मैकबैथ : हां, ऐसे शुभ अवसर पर इन्हे भूल जाना तो बहुत ही अनुचित होगा। हमारी दावत मे एक बहुत बडी कमी रह जायेगी।

मैकबैथ : बैंको ! आज रात को हमारे यहां शाही दावत है। हम उसमे तुम्हारी उपस्थिति के लिये प्रार्थना करते हैं।

बैंको . अवश्य, सम्राट् जो भी आज्ञा देगे उनको पूरा करने के लिये

हमेशा मेरी सेवाये उपस्थित हैं। कभी भी इस जीवन मे वह सेवा-भाव कम नही हो सकता।

मैकवैथ : क्या आज शाम को तुम घुडसवारी करने जाओगे ?

वैंको : हाँ, अवश्य, मेरे स्वामी !

मैकवैथ . अच्छा, खैर ! यदि तुम वहाँ नही जाते हुए होते तो हम तुम-से कुछ अच्छी सलाह लेते जो हमारे विचार से आज की सभा के लिये वडी गम्भीर और कीमती सिद्ध होती। पर, खैर, अव कल वातें करेगे। क्या तुम घुडसवारी करते हुए दूर तक निकल जाओगे ?

वैंको : हाँ स्वामी ! दावत के निश्चित समय के पहले जितनी भी दूर जा सका उतनी ही जाऊँगा। पर यदि मेरा घोडा तेज़ी से नही गया तो हो सकता है रात के एक या दो घटे मुझे और लग जायँ।

मैकवैथ : हाँ, लेकिन हमारी दावत मे तुम्हे अवश्य शामिल होना है।

वैंको : किसी हालत मे भी मैं दावत से अनुपस्थित नही रह सकता स्वामी !

मैकवैथ : कुछ सुना है ? मेरे कानो तक यह खवर मिली है कि हमारे भाई कहलाने वाले वे हत्यारे इङ्गलैंड और आयर्लैंड मे जाकर वस गये हैं और वहाँ वे अजीव तरह की झूठी वातें लोगो के वीच फैला रहे हैं। मुझे दु ख होता है कि अपने वाप की निर्दयतापूर्ण ढग से की गई हत्या को उन्होने आज तक स्वीकार नही किया है। खैर, कल हम वैठ कर इस विपय में वाते करेंगे। उसी समय राज्य की और-और समस्याओं पर दोनो मिल कर सोचेंगे। तो अव जाओ। अपना घोड़ा लो और सवार हो कर चल दो। वस, रात को जव तक वापिस आओ तव तक के लिये विदा ! सुनो, क्या फ्लीन्स भी तुम्हारे साथ जायेगा ?

वैंको : हां स्वामी ! अच्छा, अब हमारे जाने का समय हो गया, आज्ञा दीजिये ।

मैकवैथ : मेरी यही हार्दिक कामना है कि तुम्हारे घोडे तेजी से बराबर भागते हुए तुम्हे ले जायें ! इसीलिये मेरी अब यही आज्ञा है कि जाकर उनकी पीठ पर चढ जाओ ।

[वैंको जाता है ।]

रात के सात बजे तक जिसके जो जी मे आये वही करे । आने वाले अतिथियो का अत्यधिक मधुरता से स्वागत करने के लिये हम दावत के समय तक अकेले ही रहेगे ।

तब तक ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे !

[मैकवैथ तथा एक सेवक को छोडकर सभी चले जाते हैं ।]

(सेवक से) सुनो, एक बात तुमसे कहनी है । क्या वे लोग अभी तक हमारी आज्ञा की प्रतीक्षा मे खडे है ?

सेवक : हां स्वामी ! वे राजमहल के दरवाजे के बाहर प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

मैकवैथ : उन्हे हमारे सामने लाकर उपस्थित करो ।

[सेवक जाता है ।]

(स्वगत) जब तक सब तरह के भय से निश्चिन्त होकर मैं राज्य का सुख न भोग सकूं तो मेरे सम्राट होने का क्या तात्पर्य है ? वैंको का डर मेरे हृदय मे गहरी जड जमाये हुए है और फिर उसके राजसी स्वभाव मे अवश्य कोई ऐसी बात है जिससे डर के मारे हृदय कांपने लगता है । कौन-सा ऐसा काम है इस संसार मे जिसके करने का साहस उसमें न हो । उस साहस और निर्भीकता के साथ-साथ उसकी बुद्धि भी उतनी ही तीव्र है जो उसके साहस-भरे कार्य्यों को सही रास्ता दिखाती रहती है । उसके सिवाय मुझे इस पूरे

ससार मे कोई भी ऐसा नही दिखाई देता जिससे मेरा हृदय डर कर कांपे। जब वह सामने रहता है तो मेरे गौरव का प्रकाश कुछ इस तरह दब-सा जाता है जैसे कहते हैं 'सीजर' के सामने 'मार्क-ऐंटोनी' का दब जाता था। उसी समय जब उन डाइनो ने मेरे सम्राट होने की भविष्यवाणी की थी उसने उन्हे धिक्कारा था और कहा था : 'ओ डाइनो! मुझसे भी कुछ कहो।' तब स्वयं देवदूतो की तरह ही उन सभी ने उसे सम्राटो का पिता कह कर पुकारा था। मेरे सिर पर जो यह राजमुकुट उन्होने रखा है, मेरे बाद मेरी सन्तान उसे नही पहन पायेगी। मेरा कोई उत्तराधिकारी अपने हाथो मे यह राजदण्ड न पकड़ सकेगा। दूसरे लोग मुझसे यह छीन लेंगे क्योकि मेरा तो कोई पुत्र सम्राट नही बन सकता। यदि मेरे इस क्रूर भाग्य ने यही निश्चय किया है तो क्या बैंको के पुत्रों के ऐश्वर्य्य के लिये ही मैंने यह सब पाप किया है? क्या उन्ही के लिये मैंने अपने हृदय की सारी शान्ति खो कर इसमे इतनी कटुता और हाहाकार भर लिया है? ओह! अगर मेरे बाद वे ही सम्राट होगे तो क्या उन्ही के लिये मैंने अपनी इस आत्मा को शैतान के हाथो बेचा है? नही, यह नही हो सकता। मैं मरते दम तक अपने इस क्रूर भाग्य से लड़ूंगा और ऐसा कभी नही होने दूंगा। कभी नहीं होने दूंगा।

(चौंककर) कौन ?

[दो हत्यारो को लेकर सेवकों का पुनः प्रवेश]

(सेवक से) ठीक है, बस अब जाकर द्वार पर खडे हो जाओ और जब तक हम न पुकारें तब तक वहाँ से नही हटना।

[सेवक जाता है।]

हाँ, तो कल ही हमने बातें की थी न ?

पहला हत्यारा हाँ, महाराज !

मैकवैथ तो फिर क्या सोचा तुमने हमारी बातो पर ? जानते हो यह वही वैंको है जिसने न जाने कब से तुम्हारे भाग्यो को कुचल रखा है और तुम समझते थे कि यह सब हम ही करते हैं जब कि तुम लोगो के प्रति, सच कहते हैं, हम बिल्कुल निर्दोष हैं ? पहली बार बाते करते हुए ही हमने सबूत देकर तुम्हे यह बता दिया था कि तुम्हारे साथ कैसा धोखा हुआ है, किस तरह तुम्हारी मासूम तमन्नाओ को पैरो तले रौंदा गया है। जो कुछ भी चाल तुम्हे बरबाद करने के लिये खेली गई है और जिन्होने भी खेली है उससे पागलो की तरह फिरने वाला मूर्ख भी यह समझ सकता है कि वैंको के सिवाय किसी और का यह काम नही है।

पहला हत्यारा : हाँ महाराज ! आपने ये सभी बाते हमे साफ-साफ बताई थी।

मैकवैथ हाँ हमने सब कुछ तुम लोगो को पूरी तरह बता दिया था। उस दिन तो हमने आगे तक तुम्हारी आँखो से परदा हटा दिया था। आज की हमारी बातचीत का वही विषय होगा। अब बताओ, क्या अब भी तुम्हारा खून इतना ठडा है कि तुम वैंको से बिना कुछ बदला लिये चुपचाप यह सब सहते हुए चले जाओ ? बोलो, क्या तुम उस ईसा के इतने कट्टर अनुयायी हो कि जिस आदमी ने अपने अत्याचारो से तुम्हे धूल मे मिला दिया और तुम्हारे मासूम बच्चो को दर-दर का भिखारी बना दिया उसी के लिये और उसके बच्चो के ऐश्वर्य और सुख के लिये तुम ईश्वर से प्रार्थना करो ?

पहला हत्यारा नही आखिर हम भी तो मनुष्य है महाराज !

मैकवैथ नही, हम जानते हैं तुम कैसे मनुष्य हो। जैसे हाउन्ड, ग्रेहाउन्ड,

मीग्रल, स्पेनील, कर, स्लाँ, वाटर ऐस, डेमी वुल्वज ये सभी कुत्ते ही होते हैं न, क्या तुम उसी तरह एक मनुष्य नही हो ? इन कुत्तों के अलग-अलग गुण हैं इसलिये इनका अलग-अलग नाम है; जैसे कोई तेज दौडने वाला होता, तो कोई सुस्त और समझदार, कोई शिकारी और कोई घर का वफादार होता है। अपने अलग-अलग गुणो के अनुसार ही तो प्रकृति ने उन्हे अलग-अलग जाति मे रखा है। वही वात मनुष्य के साथ है। हमे वताओ, क्या इतनी बड़ी मनुष्य-जाति मे तुम्हारा स्थान केवल अधम और नीचो में ही है ? वोलो (जवाव दो हमे)। नही!· ·तो सुनो, हम तुम्हारे हाथों मे वह काम सौंप रहे हैं जिसको करने से तुम अपने उस शत्रु को इस ज़मीन की धूल मे मिला सकते हो और फिर जानते हो ? हम तुम्हे अपना प्यारे से प्यारा दोस्त समझेंगे क्योकि यह समझ लो जव तक यह वैंको जीवित रहेगा तव तक ही हमारा भाग्य द्विविधा मे है। जिस दिन वह इस ससार से उठ जायेगा वही हमारे पूर्ण सुख के जीवन का पहला दिन होगा।

दूसरा हत्यारा : महाराज, मै वह एक दु खी आदमी हूँ जिसको इस नीच दुनिया के क्रूर थपेडो ने घायल कर डाला है। मेरा खून खौल रहा है महाराज ! मै इस दुनिया से अपने ऊपर किये इन जुल्मो का वदला लेने के लिये कुछ भी कर सकता हूँ।

पहला हत्यारा : और मुझे भी इस दुनिया ने पल-पल पर ठोकर दी है महाराज ! अपने इस क्रूर भाग्य से और इस नीच दुनिया से लड़ते-लडते मैं इतना अधीर हो गया हूँ कि अव इसके विरुद्ध कुछ भी करने के लिये अपनी ज़िन्दगी तक का दाँव लगा सकता हूँ। इससे चाहे मेरी ज़िन्दगी वने या मैं वरवाद हो जाऊँ मुझे इसका कोई डर नही महाराज !

उनसे बाते करना चाहती हूँ।

सेवक जो आज्ञा महारानी!

[सेवक जाता है।]

लेडी मैकबैथ कैसा है यह जीवन? ससार का यह प्राणी किसी वस्तु को प्राप्त करने की अभिलाषा मे क्या-क्या करता है, और उसे प्राप्त करता है फिर भी उसे उससे किसी तरह सुख और शान्ति नही मिलती तब क्या वह न पाने के बराबर नही है? फिर क्यो मनुष्य जीवन की अच्छी-अच्छी बातो को ठुकरा देता है? क्या मिलता है उसे? दूसरो की हत्या करके इस तरह सदा दुःख और चिन्ता मे घुलते रहने से तो स्वय मर जाना अच्छा है। ओह!

[मैकबैथ का प्रवेश]

कहिये, कैसे है मेरे स्वामी! आप अब? क्यो आप अपने हृदय पर इन दुःख और चिन्ता के शूलो को लादे अलग-अलग ही रहते है? जो मर चुके हैं उनके साथ ही उनके विचार, उनकी सारी चिन्ता, सब कुछ मर जाना चाहिये मेरे स्वामी! फिर क्यो आप उन्ही विचारो मे अभी तक डूबे हुए हो। जिस बात का कोई इलाज ही न हो उस पर क्या कभी सोचना चाहिये? छोडो, जो कुछ हो गया वह हो गया, अब क्या वह किसी तरह सोचने-विचारने से बदल सकता है?

मैकबैथ नही प्रिये! अभी साँप मरा नही है, वह घायल हो कर ही छूट गया है। मत भूलो, वह ठीक हो कर फिर उतना ही जहरीला हो जायेगा। वही उसका जहरीला दाँत मुझे डरा रहा है प्रिये! उसे पूरी तरह मारने का हमारा सारा प्रयत्न असफल हो गया। ओह, इससे पहले कि हमारे मुँह मे कौर देते समय भी हमारे हाथ

डर से काँपे और रात मे सोते समय डरावने सपने आकर हमारी नीद मे हाहाकार मचा कर हमें वेचैन करे काश ! इस ससार मे आग लग जाये, इसके टुकडे-टुकडे होकर चारो तरफ विखर जायें। क्या है हमारा जीवन ? इस तरह हर समय चिन्ता मे घुलने और वेचैन रहने से तो अच्छा है कि हम भी उन्ही कब्रो मे जाकर शान्ति से सो जाँय जहाँ औरो को हमने इस जीवन के हाहाकार से मुक्त कर के भेज दिया है। क्या देखती नही प्रिये ! डकन अपने इस छोटे-से जीवन के दुःखदायी कोलाहल के वाद कितनी चैन की नीद उस कब्र मे सोया हुआ है ? ओह ! मुझे बताओ, क्या लाभ हुआ इस षड्यन्त्र से ? क्या मिला हमे ? प्रिये तुम्ही बताओ जहाँ पर वह डकन अव चैन की नीद सोया हुआ है वहाँ क्या कोई हथियार, या जहर, या कोई षड्यन्त्र, या वाहरी आक्रमण कुछ भी उसका वुरा कर सकता है ? फिर इससे भी वुरा और क्या होगा ?
ओह ...... इससे भी वुरा क्या होगा ?

लेडी मैकवैथ : छोड़िये यह सब कुछ मेरे स्वामी ! आइये, अपना यह उदास चेहरा धो डालिये। रात मे दावत के समय आने वाले मह-मानो के सामने क्या प्रसन्नचित्त नही होइयेगा ?

मैकवैथ : ठीक है, यही करूँगा प्रिये ! तुम भी ऐसा ही करना। देखो, वातचीत और आवभगत मे वैको का विशेष ख्याल रखना। अभी हम पूरी तरह सुरक्षित नही हैं। सबसे मीठी-मीठी चापलूसी की-सी वाते करके हमे कलङ्क के उन सभी दागो को मिटाना है जो सम्राट के नाम पर लगे हुए हे। अपने चेहरो को अपने दिलो का परदा वना लो और जो कुछ अन्दर छिपा हुआ है उसे अपने चेहरो के द्वारा दूसरो को मत देखने दो।

आने वाले थे पहले ही राजमहल मे पहुँच चुके हैं।

पहला हत्यारा : उनके घोडे तो वडे रास्ते मे निकलकर जायेंगे न ?

तीसरा हत्यारा : करीव एक मील दूर होगा यहाँ से वह रास्ता लेकिन अक्सर तो और लोगो की तरह वह इधर से ही पैदल घूमता हुआ राजमहल तक जाया करता है।

[वैंको तथा फ्लीन्स एक मशाल लिये हुए आते हैं।]

दूसरा हत्यारा : वह देखो, रोशनी।

तीसरा हत्यारा हाँ, ठीक वही है यह तो।

पहला हत्यारा : तो फिर ठीक है हम यही खडे हो जाये।

वैंको : फ्लीन्स ! आज रात तो ऐसा लगता है पानी वरसेगा।

पहला हत्यारा तो आने दे तुझे क्या अव ?

[वे सभी वैंको पर झपटते हैं।]

वैंको ओ, षड्यन्त्र ! धोखा !! भाग जाओ फ्लीन्स ! भाग जाओ !, फौरन भाग जाओ मेरे प्यारे फ्लीन्स ! ओ नमकहराम, ज़लील, कमीनो ! तुम मुझसे वदला लेना चाहते हो ? तो ले लो गुलामो !

[वैंको मर जाता है और फ्लीन्स वचकर भाग निकलता है।]

तीसरा हत्यारा · अरे, यह मशाल किसने वुझा दी ?

पहला हत्यारा क्यो ? क्यो ? क्या ऐसा करना ठीक नही था ?

तीसरा हत्यारा : अभी तो सिर्फ एक ही मारा गया है। वह लडका तो वचकर निकल ही गया।

दूसरा हत्यारा हाय ! हमारा आधा काम तो अभी पूरा हुआ ही नही।

पहला हत्यारा अव क्या करें ? चलो चलकर सम्राट् को वता दें कि अभी इतना ही काम पूरा हो सका है।

[जाते हैं।]

दृश्य ४

[राजमहल का बीच का भवन]

[दावत की तैय्यारियां। मैकबैथ, लेडी मैकबैथ, रौस, लैनोक्स, सरदार तथा अन्य सेवको का प्रवेश]

मैकबैथ . मेरे सम्मानित अतिथियो ! आप सब अपने पदो के अनुसार अपनी-अपनी जगह बैठ जाये। हम आप सभी का हृदय से स्वागत करते है।

सरदार : सम्राट को इसके लिये हमारी ओर से बहुत धन्यवाद है।

मैकबैथ : हम चाहते हैं कि हम आपके बीच मे ही रहकर आपका सत्कार करे। आपकी महमानदाज़ अभी अपनी जगह बैठी हुई हैं। इस खुशी के समय हम उनसे भी कहेगे कि वे भी उठकर आपका स्वागत करें।

लेडी मैकबैथ : अपने सभी साथियो से कह दीजिये कि मै उन सबका हृदय से स्वागत करती हूँ।

[पहला हत्यारा दरवाज़े पर आता है।]

मैकबैथ : वह देखो, प्रिये ! वे सभी तुम्हारे इस स्वागत के लिये तुम्हे हृदय से धन्यवाद दे रहे है। दोनो तरफ ही बराबर का प्रेम-भाव है। हम अब सभी अपने साथियों के बीच बैठेगे। खूब खुल कर खुशी मनाओ। लो, हम अपने सभी अतिथियो की खुशहाली के लिये यह शराब का प्याला पीते हैं।

[दरवाज़े पर पहुँच कर]

(चौंकते हुए) यह क्या ? तुम्हारे चेहरे पर तो खून लगा हुआ है।

हत्यारा : खून ? हां तो उसी बैंको का खून है यह महाराज !

मैकबैथ : ओह ! अच्छा ही हुआ कि यह खून उसकी नाडियो में न बह

कर तुम्हारे चेहरे पर मुझे दीख रहा है। तो, वह इस समार से चल वसा ।

हत्यारा हाँ, मेरे स्वामी । मैंने अपने हाथो से उसका गला फाडा है।

मैकबैथ शावास । गला काटने वालो मे तुमसे वढ कर और कौन हो सकता है पर हाँ, वह भी अच्छा होगा जिसके हाथ के नीचे फ्लीन्स का गला आया होगा। अगर तुमने ही उसका भी काम तमाम किया है तो शावास । तुम्हारे वरावर हम किसी को नही मानते।

हत्यारा पर क्या वताऊँ, महाराज । फ्लीन्स तो वच कर आ गया ।

मैकवैथ : (स्वगत) ओह । वच गया । तव फिर भी मेरी चिन्ता और भय का कारण अभी इस दुनिया मे वचा रह गया। काश । अगर वह वैंको उस फ्लीन्स को भी अपने साथ ले जाता तो मेरा सुख पत्थर की तरह भरा-पूरा होता। मैं एक चट्टान की तरह अमिट होता और जिस आजादी के साथ हवा चारो तरफ वहती है उसी आज़ादी के साथ बिना किसी खतरे के इस ससार मे विचरण कर सकता। पर ओह । अव क्या हूँ मैं ? एक तग रास्ते मे भिच जाने वाला दयनीय प्राणी जिसका हृदय भय और शका से हर पल वेचैन है।

(हत्यारे से) लेकिन, बैंको तो पूरी तरह इस दुनिया से उठ गया न ?

हत्यारा : बीस गहरे-गहरे घावो का ताज पहन कर वह शान्ति से एक खाई मे सोया हुआ है महाराज । उनमे छोटे से छोटा घाव भी उसकी मौत के लिये बडा है ।

मैकबैथ बहुत अच्छा, हम इसके लिये तुम्हे धन्यवाद देते है। (स्वगत) वह बूढा सांप तो उस खाई मे हमेशा के लिये आँखें भीचे पडा हुआ है और छोटा सांप चगुल से निकल कर भाग गया है। उसके चाहे अभी से दाँत भी नही उगे हैं पर आखिर सांप है, थोडे दिन

मे वह भी जहर उगलने लगेगा ।

(हत्यारे से) अच्छा, अब तुम जा सकते हो। कल फिर हम मिलेंगे।

[हत्यारा चला जाता है ।]

लेडी मैकबैथ : क्या बात है मेरे स्वामी ? दावत की इस खुशी मे तुम क्यो हिस्सा नही ले रहे हो ? मालूम है ? वह दावत कामयाब नही कही जाती जिसके बीच-बीच मे महमानदाज़ उठ कर अपने महमानो की आवभगत नही करता है । सभी जो यहाँ आये है क्या वे अपने-अपने घरो मे अच्छी तरह से खाना नही खा सकते ? कही दावत मे खाना खाने की तो यही विशेषता है न कि सबके मिलने मे एक जलसा होता है और सब एक दूसरे के साथ हँसते-बैठते है ? इसके बिना क्या मतलब है दावत मे मिलने का ?

मैकबैथ हाँ, ठीक कहती हो प्रिये ! तुमने तो मुझे मेरे कर्त्तव्य की याद दिला दी । ईश्वर करे हम दोनो का स्वास्थ्य अच्छा रहे, खाना अच्छी तरह पच कर हमे खूब भूख लगे और किसी तरह की व्याधि हमारे शरीर मे न रहे !

लैनोक्स : क्या मै सम्राट से भी हमारे साथ बैठने के लिये प्रार्थना कर सकता हूँ ?

[बैंको की प्रेतात्मा प्रवेश करती है और आकर मैकबैथ के स्थान पर बैठ जाती है ।]

मैकबैथ : काश ! हमारे बीच मे हमारे राज्य का वह गौरव, वह सुयोग्य और श्रेष्ठ बैंको उपस्थित होता तो कितना अच्छा होता ! अब जब भी वह मुझे मिलेगा मैं बिना उसकी कुछ सुने और बिना उसकी प्रार्थनाओ पर रहम खाये उसकी इस बेरुखाई के लिये खूब उलाहना दूंगा ।

रौस . ठीक है, महाराज ! उन्होने तो आने का वायदा किया था फिर

भी वे नही आये इससे तो उनके चरित्र पर एक धब्बा लग गया।
पर क्या सम्राट हमारे साथ बैठ कर हमे कृतज्ञ करेंगे ?

मैकवैथ अवश्य ! लेकिन वहाँ कोई बैठने की जगह तो है ही नही।

लैनोक्स नही, नही, स्वामी ! यहाँ यह जगह आपके लिये ही खाली छोडी गई है।

मैकबैथ कहाँ ?

लैनोक्स · यही महाराज !
क्यो ? क्या है जिसे देख कर आप इतना घबरा रहे है ?

मैकवैथ : बताओ, किसने किया है तुम लोगो मे से यह ?

कुछ सरदार : क्या किया है महाराज ?

मैकवैथ : कोई भी नही बोलता, कोई भी नही कहता कि यह मैंने किया है। ओ चला जा, अपने इन खून से भीगे वालो को मेरी तरफ न हिला।

रौस : भाइयो ! आप लोग उठ जायें। सम्राट् की तबियत ठीक नही मालूम होती।

लेडी मैकवैथ : मेरे सम्मानित अतिथियो ! मेरे अच्छे साथियो ! मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप लोग अपनी-अपनी जगह बैठे रहे। मेरे पति को तो उनकी युवावस्था से ही ऐसी बीमारी है। आप सभी बैठ जायें। थोडी ही देर मे वे अच्छे हुए जाते हैं। अगर आप लोग इस तरह घबराये हुए-से उनकी तरफ देखेंगे तो वे और भी उत्तेजित हो जायेंगे और इससे उनकी हालत इससे भी ज्यादा बिगड जायेगी। आप लोग अपना खाना खाते रहिये और उनकी चिन्ता छोड दीजिये।
(मैकवैथ से) तुम कोई आदमी हो ?

मैकवैथ : क्यो नही ! आदमी ही नही एक बहादुर आदमी हूँ जिसके

सीने मे उस खतरे से टकराने का दम है जिससे शैतान खुद डर कर भाग जाये।

लेडी मैकवैथ : सव तुम्हारी थोथी वाते हैं। यह सव तुम्हारा डर है जिसने तुम्हारी यह हालत वनाई है। तुम्हारी ये वढ़ी-चढी वातें ठीक उसी हवा की कटार की तरह हैं जिसके वारे मे तुम कह रहे थे कि वह तुम्हे डकन के पास तक ले गई थी। कुछ नही, तुम्हारा यह जोश, यह उवाल सव तुम्हारे डरपोकपन का दिखावा है जो ठीक वैसा ही है जैसे जाडे की उस शाम को वह औरत अपनी दादी के नाम का वहाना करके वह किस्सा सुना रही थी। यह सव डूव मरने की वात है। शरम नही आती तुम्हे ? उस स्टूल को देख-देख कर तुम इस तरह डर कर कांप क्यो रहे हो ?

मैकवैथ : वह देखो ! देखो ! वह रहा, क्या है यह ? अव वताओ क्या कहोगी तुम इसे ?

(प्रेतात्मा की ओर देख कर) मैं तेरी क्या परवाह करता हूँ। इस तरह अपना सिर क्यो हिला रहा है ? वोलता क्यो नही ? वोल। ओह ! अगर कव्रो में सोये मुर्दे भी फिर इस तरह उठ कर आने लगे तो फिर मरने के वाद हमारी लाशों को सिर्फ चील और कौवे ही खायेगे।

[प्रेतात्मा चली जाती है।]

लेडी मैकवैथ : क्या हो गया है तुम्हे यह ? यह क्या पागलपन तुम्हारे ऊपर चढ गया है जिसमे तुम यह तक भूल गये हो कि आखिर तो तुम एक मनुष्य हो।

मैकवैथ : मैंने उसे देखा था। वह आया था। अगर यह सच है कि मैं जमीन पर खड़ा हुआ हूँ तो यह भी सच है कि मैने अपनी आंखों से उसे देखा था।

लेडी मैकवैथ : धिक्कार है तुम्हारे पुरुप होने पर।

मैकवैथ : आदमी के कानून बनाने से पहले भी पुराने समय मे कितनी ही हत्याएँ हुई है और उसके बाद भी न जाने कितनी ऐसी डरावनी हत्याएँ हुई है जिन्हे कान सुन कर बरदाश्त नही कर सकते। पर उस समय मे जब मनुष्य के सिर पर कोई एक चोट ही पडती थी तो उससे ही चक्कर खाकर उसकी मृत्यु हो जाती थी पर अब यह क्या आश्चर्य्य है ? बीस-बीस जहरीले घाव सिर पर लेकर भी वे एक बार मरे लोग अपनी कब्रो से उठ रहे हैं और आ-आकर हमे अपनी बैठने की जगह से धकेल रहे हैं। हत्या से कही अधिक अचम्भे की बात तो यह है।

लेडी मैकवैथ : मेरे स्वामी ! देखो तो तुम्हारे सभी मित्र तुम्हारे बिना बेचैन है।

मैकबैथ : अरे, मै कहाँ खो गया था। मेरे साथियो ! हमारी इस हालत पर आप लोग कोई आश्चर्य्य न करें। यह एक अजीब-सी बीमारी हमारे साथ लगी हुई है जो हमारे परिचित साथियो को नही दीखती। हम आप सभी के प्रेम और स्वास्थ्य के लिये ईश्वर से कामना करते हैं। लाओ, हम यहाँ बैठ जाते है, हमे शराब दो। ऊपर तक प्याला भर देना। हम अपने सभी मित्रो और अतिथियो के सुख की कामना करते हुए यह पीते हैं और हमारे प्यारे मित्र बैंको के सुख के लिये भी जिसकी कमी हमे बहुत खटक रही है। काश ! क्या अच्छा होता अगर वह भी यहाँ होता तो। अब हम उसके तथा यहाँ उपस्थित हमारे सभी मित्रो के सुख और स्वास्थ्य के लिये यह प्याला पीते है। सभी के लिये हमारी शुभ कामनाएँ हैं।

कुछ सरदार : हम सभी सम्राट् के प्रति अपने कर्त्तव्यो का पालन करेंगे ।

[प्रेतात्मा का पुनः प्रवेश]

मैकवैथ : चला जा ! हट जा मेरी आँखो के सामने से ! ओ ज़मीन तू फटकर इसे अपने नीचे छिपा ले । तू ? कहाँ है तेरी हड्डियो मे जान अव ? तेरा खून तो ठंडा पड़ चुका है और जिन आँखो से तू मुझे घूर रहा है वे हमेशा के लिये वन्द हो चुकी है ।

लेडी मैकवैथ : हमारे श्रेष्ठ सरदारो ! इसे और कुछ भी न समझो, यह सव इनकी वीमारी का दौरा है । वस दु ख इसी वात का तो रहा है कि इससे दावत की सारी रंगत फीकी पड रही है ।

मैकवैथ : एक मनुष्य मे जो कुछ भी करने की हिम्मत है वह मुझमें है । हटा ले इस शक्ल को मेरी आँखों के सामने से, फिर चाहे रूसी भालू की तरह खूंख्वार वनकर आ और मुझसे टकरा । चाहे नुकीले सीग वाले गेंडे या 'हिरकेन' चीते का या कोई भी डरावनी से डरावनी शकल वनाकर आ और मुझसे टकरा । मेरी मजवूत नसें डर से नही काँपेंगी । चाहे फिर से ज़िन्दा होकर आ, हम आपस में तलवार लेकर एक जगह फैसला कर लें । अगर उस समय डर से मेरा एक रोयाँ भी काँप जाय तो मुझे एक छोटी वच्ची समझना । पर अपनी इस शकल को मेरी आँखों के सामने से हटा ले । दूर हो जा ओ डरावनी काली छाया ! चला जा मेरे सामने से । कौन है तू ? क्या मेरे दिमाग का वहम ? पर दूर हो जा । चला जा ! जा ।

[प्रेतात्मा चली जाती है ।]

है ! चला गया वह तो । ओ ! मैं फिर वही मनुष्य हूँ । हमारे साथियो ! हम आप सवसे प्रार्थना करते हैं कि आप लोग अपनी-अपनी जगह शान्ति से वैठ जाइये ।

लेडी मैकवैथ : तुमने इस समय की सारी खुशी पर पानी डाल दिया है और इस तरह अपनी पागलपन की हालत वनाकर दावत के समय की आपस की हँसी-खुशी मे वाधा पहुँचाई है।

मैकवैथ : हम पूछते है कि क्या ऐसी चीजें भी दुनिया मे है जो गरमी की ऋतु मे उठते वादलो की तरह अचानक हमे आकर घेर लें और हमे एक गहरे आश्चर्य्य मे डाल दे ? हमारी साधारण हालत से आज हम आप लोगो को कुछ अजनवी-से लग रहे हैं पर क्या हम यह समझ लें कि ऐसी शकले देख कर आपके गालो की यह लाली वैसी ही वनी रहेगी जवकि डर के मारे हमारा चेहरा पीला पड गया है ?

रौस : कैसी शकलें महाराज !

लेडी मैकवैथ : मेरी आपसे प्रार्थना है कि अव इनसे और अधिक वाते न कीजिये। इनकी हालत तो अव वहुत ही विगडती जा रही है। आप लोग ज्यादा कुछ पूछताछ करेंगे तो वे और भी उत्तेजित हो जायेंगे। अच्छा, अव आप सव लोगो को विदाई है। अलविदा। वस कृपा करके आप लोग शीघ्र यहाँ से चले जायें और सम्राट् की किसी तरह की आज्ञा की प्रतीक्षा मे न खडे रहे।

लैनोक्स : अच्छा, अलविदा ! हमारी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह सम्राट् को स्वास्थ्य प्रदान करे !

लेडी मैकवैथ : आप सवको मेरी ओर से अलविदा !

[मैकवैथ तथा लेडी मैकवैथ को छोड कर सभी चले जाते हैं।]

मैकवैथ : वह मुझसे वदला लेगा। कहने वाले ठीक ही कहते हैं कि खून खून का वदला खून से ही लेता है। वह देखो मुझे लग रहा है कि वे पत्थर अपने अन्दर दफनाए मुर्दों के शरीर को टटोल रहे हैं और पेड पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि ये हैं हत्यारे ! कितना भी

छिपा कर यह खून रखा गया पर क्या पशु और क्या पक्षी सभी हत्यारों का नाम पुकार-पुकार कर बता रहे हैं।
क्या बजा होगा रात का इस समय ?

लेडी मैकबैथ : अब रात कहाँ है ? पौ फट रही है।

मैकबैथ : तुमने कुछ देखा प्रिये ! मैकडफ हमारी दावत में शामिल होने नही आया ? क्या सोचती हो तुम इसके बारे मे ?

लेडी मैकबैथ : क्या तुमने उसको फिर बुलवाया ?

मैकबैथ : मेरे कानो में अभी तो यह उड़ती हुई-सी बात ही आई है लेकिन बुलवाऊँगा मैं उसे। मै कहता हूँ प्रिये ! ऐसा कोई भी सरदार नही बचेगा जिसके घर में मैं एक अपना जासूस न छोड़ दूँ। कल प्रात काल से भी पहले उठ कर मै उन्ही डाइनो के पास जाऊँगा। वे मुझे और कुछ बतायेंगी। अब मै कितना भी नीचा गिरकर, कितना भी पाप करके यह जानने का निश्चय कर चुका हूँ कि मेरे लिये बुरी से बुरी क्या बात हो सकती है। अब मेरे स्वार्थ के रास्ते मे जो भी रोडे है, जो भी शूल है वे दूर होने ही चाहिये क्योकि इस खून के दरिया मे कूद कर मैं इतना आगे बढ आया हूँ कि अगर अब मुड कर वापिस जाना भी चाहूँ तो भी पीछे लौटना उतना ही मुश्किल है जितना अब आगे बढना। अजीब तरह के इरादे मेरे दिमाग मे बस रहे हैं, मैं चाहता हूँ, उस पर गहराई से सोचने के पहले उनको पूरा किया जाना चाहिये।

लेडी मैकबैथ : मुझे लगता है, आप रात मे पूरी नीद सो नही पाये, इसी लिये आपकी यह हालत हो गई है। चलिये, चल कर सो जाइये अब।

मैकबैथ : हाँ, आओ, चलकर सो जायें। मेरा यह अजीब तरह का डर उस अनाड़ी के डर की तरह है जो इस तरह के कामो का पूरी

तरह आदी न हुआ हो। इस तरह के काले और खूंख्वार कामो मे अभी हम बच्चे की तरह ही है प्रिये।

[जाते हैं।]

दृश्य ५

[बादलों की गड़गड़ाहट। बिजली। तीनो डाइनें हिकेट से मिलने आती हैं।]

पहली डाइन : क्यो ? क्या बात है हिकेट ? तुम गुस्से मे क्यो दिखाई दे रही हो ?

हिकेट : क्या अब भी गुस्सा नही होना चाहिये ? तुम अपने आपको कुछ समझने लगी हो ? इस तरह की तुम्हारी ढीठपन देखकर भी क्या मुझे चुप रह जाना चाहिये ? बताओ मुझे, तुमने मेरे बिना ही अपनी उलटी-सीधी बातो मे यह मौत का सारा सौदा मैकवैथ से कैसे कर लिया जब कि आदमी पर बडी से बडी आफत लाने मे मैं तुम सबसे अधिक चतुर हूँ ? मैंने ही तुम्हे यह सब कुछ जादू सिखाया और मुझे ही तुमने नहीं बुलाया। बताओ क्यो ? कम से कम मेरी कला तो देखती कि क्या-क्या चालें मै चलती। मुझे अपना प्रताप दिखाने का तुमने मौका ही नही छोडा। और इससे भी बुरी बात यह है कि तुमने यह सब कुछ उस मनचले लडके के लिये किया है जिसके दिल में कपट और क्रोध भरा हुआ है और जो सिर्फ अपना स्वार्थ पूरा करने की ही बात सोचता है, तुम्हारी नही। सुधार लो अपनी यह गलती अब भी। जाओ, और कल अलख सबेरे ही 'एकरन' के गड्ढे के पास मुझे मिलना। वही वह अपनी तकदीर जानने आयेगा। अपना जादू-टोना, मंत्र आदि सब कुछ ज़रूरत पडने वाली चीज़ तैय्यार रखना। मैं अब

उसी हवा में चली। यह रात मै अपने किसी खतरनाक इरादे की फिराक मे विताऊँगी। दोपहर होने से पहले ही एक विजली-सी फटेगी। चाँद के एक कोने पर एक बूँद लटकी हुई है, उसमें वडा रहस्य भरा हुआ है। मैं चाहती हूँ कि किसी तरह जमीन मे गिरने से पहले मै इसे पा जाऊँ। जानती हो ? हमारी माया से उसी बूँद मे से हम ऐसे भूत-पिशाच पैदा कर देंगे कि मैकवैथ उनके धोखे मे आकर पूरी तरह चकरा जायेगा। उन्हे देखकर वह अपनी तकदीर कोसने लगेगा और मौत से नफरत करेगा, यहाँ तक कि जहाँ उसकी समझ भी नही पहुँच सकती और न अपने को उसके लिये स्वाभाविक रूप से समर्थ समझेगा, वहाँ तक भी वह अपने इरादे वनायेगा। एक वार तो उसके हृदय मे जितना भी डर है उसकी सीमा भी पार करके अपनी महत्त्वाकाक्षाएँ वनाने लगेगा। फिर तुम यह अच्छी तरह जानती ही हो, धोखे मे किया विश्वास आदमी का सवसे वड़ा दुश्मन होता है।

[अन्दर संगीत की ध्वनि। एक गीत।]

आओ चलें दूर।
आओ चलें दूर॥...

वह सुनो, मुझे वुलाया जा रहा है। मेरी वह छोटी-सी डाइन उस वादल मे वैठी मेरी वाट जोह रही है।

[जाती है।]

पहली डाइन : आओ, चलो जल्दी करे। हिकेट तो जल्दी ही वापिस आ जायेगी।

[जाती है।]

दृश्य ६

[फोरेस । राजमहल]

[लैनोक्स तथा एक दूसरे सरदार का प्रवेश]

लैनोक्स : मेरी पहली वातो का तुम्हारे ऊपर कुछ असर हुआ है न ? यो कहो, अगर हम उन वातो पर और गहराई से सोचें तो न जाने और क्या-क्या भेद खुल सकते है। मै सिर्फ इतना ही अव कहता हूँ कि सारे पड्यन्त्र की किसी अजीव तरह से व्यवस्था की गई है। महान डकन की मौत पर मैकवैथ ने आंसू वहाये थे न ? अच्छा, वह तो किसी और ने मार दिया, पर वहादुर वैको ? वह जगल मे देर तक घूमता रह गया था जिसके लिये तुम चाहो तो कह सकते हो न, कि फ्लीन्स ने उसे मार डाला ? इसीलिये कि फ्लीन्स भाग क्यो गया ? अव आगे सबको इससे सतर्क रहना चाहिये कि वे अधिक देर तक जगल मे वाहर अकेले घूमते न रहे। और इससे भी आगे मैलकॉम और डोनलबेन ने अपने ही वाप का खून कर डाला। सव यही सोचेंगे कि कैसा नीच, शैतानो का-सा काम है। कोई कल्पना तक नही कर सकता। और तुमने देखा नही, मैकवैथ को वहुत दुख हुआ था इस पर ? इसीलिये तो अपनी स्वामी-भक्ति के आवेश मे आकर उसने उन शराव के नशे मे चूर हुए दोनो हत्यारो को इस दुनिया मे ज़िन्दा नही रहने दिया। ख़ुद अपनी तलवार से ही उन्हे मार डाला। क्या ठीक काम नही किया उसने ? ठीक, यही तो वुद्धिमानी का काम था। क्योकि तुम ही सोचो, जब वे पहरेदार यह कह कर चिल्लाते कि हमने सम्राट का ख़ून नही किया है तो फिर कौन ऐसा है इस ज़मीन पर जिसका ख़ून उबाल नही खाता ? इसी से मैं कहता हूँ कि मैकवैथ बहुत ही समझदार है, उसने जो कुछ भी किया है वह सब ठीक किया है। मैं तो यहाँ तक भी

सोचता हूँ कि अगर भगवान न करे, डंकन के वे दोनों पुत्र उसके कही हाथ आ जायें तो फिर वह उनको भी वह मजा चखाये कि वे भी जान जायें कि बाप के खून से हाथ धोना क्या होता है और इसी तरह फ्लीन्स भी ।

लेकिन, हाँ, छोड़ो इन सब बातो को । सुनने मे आया है कि मैकडफ ने कुछ साफ-साफ उस मैकबैथ को सुना दिया था और उसकी दावत मे भी वह शामिल नही हुआ था, इसीलिये उसकी तरफ इस चांडाल की भौंहे कुछ खिच गई है । साथी ! क्या तुम मुझे यह बता सकते हो कि इस समय मैकडफ कहाँ होगा ?

सरदार : सम्राट का एक पुत्र मैलकॉम तो, जिससे इस चाण्डाल दुष्ट ने उसका जन्माधिकार छीन लिया है, अब इङ्गलैण्ड के सम्राट एडवर्ड की शरण में जाकर रह रहा है। देवताओ के-से गुण वाले उस सम्राट ने इस सहृदयता के साथ उसका अपने यहाँ स्वागत किया है कि चाहे राजकुमार दुर्भाग्य का मारा है पर उसके यहाँ उसके सम्मान मे कोई अन्तर नही आया है । मैकडफ उसी पवित्र हृदय वाले सम्राट से यह प्रार्थना करने गया है कि वह मैलकॉम की सहायता के लिये नार्दम्बरलैंड के अर्ल तथा वीर सिवाई को भेज दे ताकि उन सबकी सहायता से और फिर सबसे बडी न्याय की दृष्टि रखने वाले उस परमात्मा की कृपा से हम फिर अपने घरो मे बैठ कर चैन से खाना खा सके और रात मे बिना किसी खतरे के निश्चिन्त सो सके । हमे वहाँ इसका डर न रहे कि कोई हमारी रोटियो में ज़हर मिला रहा है या दावतो के मौको पर हमारे पेट मे न जाने कब कोई कटार भोंक देगा ।

वह इसीलिये गया है कि राजकुमार मैलकॉम जो हमारे सच्चे सम्राट हैं उन्हें यहाँ ले आकर किसी तरह राजगद्दी पर बिठा

सके जिससे हम सभी हमारे सम्राट का पवित्र सम्मान प्राप्त कर सकें। जानते हो ? इसी खवर से मैकवैथ का खून उतार-चढाव खा रहा है और अव लडाई की पूरी तैय्यारी मे वह लग गया है।

लैनोक्स पर यह तो वताओ, क्या उसने मैकडफ को वुलवाया था ?

सरदार : हाँ, वुलवाया था और जानते हो मैकडफ ने दूत से क्या कह दिया ? साफ फटकार कर कह दिया कि मैं नही आऊँगा। इस पर उस दूत का चेहरा एक वार तो गुस्से से तमतमा गया और दूसरे ही क्षण उसने पीठ मोड कर चलते समय इतना ही कहा . 'तुम जैसा उत्तर देकर मुझे सम्राट के पास भेज रहे हो उसके लिये वाद मे तुम्हे पछताना पडेगा मैकडफ !'

लैनोक्स तो इस हालत मे तो उसे मैकवैथ से और भी दूर रहना चाहिये। इसी मे उसकी वुद्धिमानी है।

पर काश ! कितना अच्छा हो कि अव तो मैकडफ से भी पहले कोई देवदूत हवा मे तेजी से उड कर इङ्गलैण्ड के सम्राट के दरवार मे पहुँच जाय और उससे भी पहले हमारा यह सारा दु ख उसे जा सुनाये तो हमारा यह दु खी देश जो इस चाण्डाल सम्राट बने हुए मैकवैथ के पैरो के नीचे कुचला हुआ त्राहि-त्राहि कर रहा है ईश्वर की इस असीम कृपा के लिये कितना आभारी होगा !

सरदार : मैं अपनी भी प्रार्थनाएँ उसी के साथ इङ्गलैण्ड के सम्राट के पास भेजूंगा।

[जाते हैं।]

चौथा अंक

दृश्य १

[एक गुफा। बीच में एक उबलता हुआ बर्तन। कड़क के साथ बादलों का गरजन। तीनो डाइनो का प्रवेश]

पहली डाइन : तुमने सुना ? तीन बार उस चितकबरी बिल्ली ने म्याऊँ-म्याऊँ की है।

दूसरी डाइन : हाँ, हाँ, झाडी का सूअर भी चार बार चिल्ला चुका है।

तीसरी डाइन : हारपियर[1] भी बराबर यही चिल्ला रही है कि—'यही समय है ! यही समय है !'

पहली डाइन : चलो इस देग के पास चले और जानवरो की इन ज़हरीली आँतो को इसमे डाल दे। सबसे पहले तो हमे अपनी इस जादू की देग मे उस मेढक को उबालना चाहिये जो पूरे ३१ दिन तक किसी ठंडे पत्थर के नीचे छिपा हुआ जहर छोडता रहा हो और सिर्फ सोते समय ही पकडा गया हो।

सभी : ठीक है ! ओ आग जलो ! ओ जादू की देग उबलो ! बस अब हम मैकबैथ को दूनी महनत से परेशान करेंगे।

दूसरी डाइन : इस देग मे उबलने के लिये किसी दलदल से पकडे हुए साँप को भी काट कर डाल दो। उसके अलावा गोह की आँखे, मेढक

---

१ Harpier—एक औरत का चेहरा और शरीर तथा किसी पक्षी के-से पंख और पंजे रखने वाला एक प्राणी। जैसे पहले प्रथम दृश्य में ही पैडोक और ग्रेमल्किन आते हैं उसी तरह यह भी डाइनों की जादू की शक्ति (Spirit) है।

सके जिससे हम सभी हमारे सम्राट का पवित्र सम्मान प्राप्त कर सके। जानते हो ? इसी खवर से मैकवैथ का खून उतार-चढाव खा रहा है और अब लडाई की पूरी तैय्यारी मे वह लग गया है।

लैनोक्स · पर यह तो वताओ, क्या उसने मैकडफ को वुलवाया था ?

सरदार : हाँ, वुलवाया था और जानते हो मैकडफ ने दूत से क्या कह दिया ? साफ फटकार कर कह दिया कि मै नही आऊँगा। इस पर उस दूत का चेहरा एक वार तो गुस्से से तमतमा गया और दूसरे ही क्षण उसने पीठ मोड कर चलते समय इतना ही कहा · 'तुम जैसा उत्तर देकर मुझे सम्राट के पास भेज रहे हो उसके लिये वाद मे तुम्हे पछताना पडेगा मैकडफ !'

लैनोक्स तो इस हालत मे तो उसे मैकवैथ से और भी दूर रहना चाहिये। इसी मे उसकी वुद्धिमानी है।

पर काश ! कितना अच्छा हो कि अब तो मैकडफ से भी पहले कोई देवदूत हवा मे तेज़ी से उड कर इङ्गलैण्ड के सम्राट के दरबार में पहुँच जाय और उससे भी पहले हमारा यह सारा दु ख उसे जा सुनाये तो हमारा यह दु खी देश जो इस चाण्डाल सम्राट वने हुए मैकबैथ के पैरो के नीचे कुचला हुआ त्राहि-त्राहि कर रहा है ईश्वर की इस असीम कृपा के लिये कितना आभारी होगा !

सरदार : मै अपनी भी प्रार्थनाएँ उसी के साथ इङ्गलैण्ड के सम्राट के पास भेजूंगा।

[जाते हैं।]

चौथा अंक

दृश्य १

[एक गुफा। बीच में एक उबलता हुआ बर्तन। कड़क के साथ बादलो का गरजन। तीनो डाइनों का प्रवेश]

पहली डाइन : तुमने सुना ? तीन बार उस चितकबरी बिल्ली ने म्याऊँ-म्याऊँ की है।

दूसरी डाइन : हाँ, हाँ, झाडी का सूअर भी चार बार चिल्ला चुका है।

तीसरी डाइन : हारपियर[1] भी बराबर यही चिल्ला रही है कि—'यही समय है ! यही समय है !'

पहली डाइन : चलो इस देग के पास चले और जानवरो की इन ज़हरीली आँतों को इसमे डाल दे। सबसे पहले तो हमे अपनी इस जादू की देग मे उस मेढक को उबालना चाहिये जो पूरे ३१ दिन तक किसी ठडे पत्थर के नीचे छिपा हुआ जहर छोडता रहा हो और सिर्फ सोते समय ही पकड़ा गया हो।

सभी : ठीक है ! ओ आग जलो ! ओ जादू की देग उबलो ! बस अब हम मैकबैथ को दूनी महनत से परेशान करेगे।

दूसरी डाइन : इस देग मे उबलने के लिये किसी दलदल से पकडे हुए साँप को भी काट कर डाल दो। उसके अलावा गोह की आँखे, मेढक

---

१. Harpier—एक औरत का चेहरा और शरीर तथा किसी पक्षी के-से पंख और पंजे रखने वाला एक प्राणी। जैसे पहले प्रथम दृश्य में ही पैडोक और ग्रेमल्किन आते हैं उसी तरह यह भी डाइनों की जादू की शक्ति (Spirit) है।

का अँगूठा, चमगादड के वाल, कुत्ते की जीभ, सांप की कांटेदार जीभ, अधे कीडे का डक, छिपकली का ओठ, और उल्लू का पख लो और इन सवको नरक के उवलते कढाव जैसी इस जादू की देग मे उवलने के लिये डाल दो और फिर देखो, कितना वडे से वडा तूफान, वडी से वडी आफत खडी की जा सकती है।

सभी : ठीक है ! ओ आग जलो ! ओ जादू की देग जल्दी उवलो ! वस अव हम मैकवैथ को दूनी महनत से परेशान करेंगे।

तीसरी डाइन अभी इस रस को गाढा वनाने के लिये देग मे यह चीज़ें और डालनी चाहियें जैसे अजगर की केंचुली, भेडिये का दांत, मरी जादूगरनी का सूखा शरीर, काले रग के समुद्री कीडे का पेट और गला, अधेरे मे खोदे गये जहरीले पौधे की जड, ईसा की बुराई करने वाले पाखण्डी यहूदी का जिगर, वकरी का पित्त, हमेशा हरे रहने वाले पेड की केवल चन्द्रग्रहण के समय कटी हुई डालियां, किसी तुर्क की नाक, तातार का ओठ, किसी कुलटा के उस वच्चे की उँगलियां जिसको पाप से उसने खाई के किनारे जन्मा हो और वही गला घोट कर मार डाला हो। इसके अलावा किसी चीते की अतडियां इस सवमे और मिला दो।

सभी : ठीक है, ओ आग ! जलो और हे जादू की देग ! जल्दी से उवलो ! अब तो हम मैकबैथ को दूनी महनत से तग करेंगे।

दूसरी डाइन : इतना सव करके इस उवलते रस को किसी लगूर के खून से ठडा कर लो वस, हो गया अपना जादू पक्का और अच्छा।

[हिकेट का दूसरी तीनों डाइनों के पास प्रवेश]

हिकेट : शावास ! बहुत अच्छा, जो महनत तुम लोगो ने इस रस को तैय्यार करने मे की है उसकी मैं तारीफ करती हूँ। अब सुनो, इस जादू के रस से जो कुछ भी फायदा होगा उसमे हर एक का

हिस्सा रहेगा।
अब सब मिल कर चूल्हे पर चढी इस जादू की देग के चारों ओर घेरा बनाकर परियो की तरह नाचो और गाओ और जिन-जिन को भी तुमने इस रस मे डाला है उन सबको खूब अपने गाने से खुश करो।

[वे सभी गाती हैं। 'काली छायाओ' इत्यादि। हिकेट वापिस चली जाती है।]

दूसरी डाइन : सुनो बहिन, मेरे अँगूठे मे कुछ खुजली-सी मच रही है, मुझे लगता है कोई न कोई आफत या तूफान आने वाला है।

[कोई दरवाजा खटखटाता है।]

ओ तालो ! खुल जाओ।
चाहे कोई भी खटखटाये ॥

[मैकवैथ का प्रवेश]

मैकवैथ : कौन हो तुम ओ काली बदसूरत चुड़ैलो ! इस तरह छिप कर इस आधी रात के समय तुम क्या करने जा रही हो ?

सभी : वह काम जिसका कोई नाम नही बताया जा सकता।

मैकवैथ : ठहरो, मै उस जादू के नाम पर जिसकी तुम खूब हामी भरती हो और जो चाहे कही से भी तुमने सीखा हो, कुछ तुमसे पूछना चाहता हूँ। मुझे जवाब दो। चाहे तुम अपने हाथो से ही ये आंधियां छोडती हो, जो गिरजाघरो की चोटियो से जाकर टकराती हैं; चाहे समुद्र की उन झागदार बड़ी-बड़ी लहरों से भँवर मे फँसे हुए कितने ही जहाज डूब जाये, चाहे अनाज के पौवे टूट-टूटकर जमीन मे मिल जाये और पेड़ हवा से उखड कर उड जाये, चाहे बड़े-बड़े महल और किले टूट कर अपने मालिको के ऊपर ही गिर जायें; चाहे राजमहल स्वयं और उसके साथ बड़ी-बड़ी मीनारो

की चोटियाँ खण्ड-खण्ड हो कर जमीन पर गिर पडे, मैं कहता हूँ प्रकृति के जितने भी लाभदायक जीव-जन्तु है वे एक साथ क्यो न खत्म हो जायें, फिर भी जब तक यह प्रलय की आँधी स्वय ही थक कर न बैठ जाये तब तक जो कुछ भी मे पूछूँ उसका जवाब दो।

पहली डाइन : बोलो।

दूसरी डाइन : माँगो क्या चाहते हो।

तीसरी डाइन : हम अवश्य उत्तर देंगे।

पहली डाइन पर बोलो, तुम सब कुछ हमारे ही मुंह से सुनना चाहते हो या हमे भी सिखाने वालियो के मुंह से ?

मैकवैथ बुलाओ उन्हे। मै उन्हे देखना चाहता हूँ।

पहली डाइन : अच्छा, तो बहिन ! इस देग में उस सुअरनी का खून और डाल दो जिसने अपने नौ घेंटो को मार कर खा लिया हो और सुनो, जल्लादो के उस पत्थर से जहाँ वे अपराधियो की गरदन काटते हैं जो भी चरबी बह कर आई हो उसे आग मे डाल दो।

सभी : आओ, ओ पिशाच-पिशाचिनियो ! ऊपर आकाश मे या नीचे पृथ्वी पर जहाँ कही भी तुम हो वहा से आ जाओ और आकर अपना प्रताप दिखाओ।

[एक साथ जोर से बिजली कडकती है। पहला पिशाच : एक हथियार बन्द सिर]

मैकवैथ : ओ अज्ञात शक्ति ! मुझे बता।

पहली डाइन : तू कुछ न बोल मैकवैथ ! वह तेरे मन की बात जानता है। तू सिर्फ उसकी बात सुन।

पहला पिशाच : मैकवैथ ! मैकवैथ ! मैकवैथ ! खबरदार रहना मैकडफ

से। होशियार, उस फाइफ़ के थेन से। बस इतना ही कहना काफी है। अब मुझे जाने दे।

[पिशाच जाता है।]

मैकबैथ : धन्यवाद ! ओ अज्ञात शक्ति ! चाहे तू कोई भी क्यों न हो पर मुझे यह चेतावनी देने के लिये मै तुझे धन्यवाद देता हूँ। तूने ठीक मेरे डर को पहचान लिया है। पर ठहर, एक बात और सुन।

पहली डाइन : उस पर इस तरह से आज्ञा नही चला सकता मैकबैथ ! ले उससे भी विकराल दूसरा पिशाच आ रहा है।

[फिर एक साथ ज़ोर से बिजली कडकती है। दूसरा पिशाच एक खून से सने हुए बच्चे के रूप में आता है।]

दूसरा पिशाच : मैकबैथ ! मैकबैथ ! मैकबैथ !

मैकबैथ : अगर मेरे तीन कान होते तो उन तीनों से मै तेरी बात सुनता।

दूसरा पिशाच : खून से खेलने वाले, बहादुर, और अपने इरादे मे मज़-बूत बनो मैकबैथ ! ससार मे आदमी की जितनी भी ताकत है उसे अपने पैरो तले कुचल डालो क्योकि औरत की कोख से जन्मा कोई भी आदमी तेरा कुछ नही बिगाड़ सकता।

[पिशाच जाता है।]

मैकबैथ : तब फिर चाहे जिन्दा रह ओ मैकडफ़ ! तुझसे अब मुझे किस बात का डर है ? लेकिन फिर भी मैं अभी कही हुई इस बात को दूनी तरह से पक्का क्यो न कर लूं और तकदीर से पूरी तरह यह वायदा क्यों न करा लूं कि जो कुछ भी कहा गया है वह सब ठीक हो कर ही रहेगा। तो फिर तू जिन्दा नही रह सकता मैक-डफ़ ! जिससे जब कभी भी वह डरपोक भय मेरे हृदय में आकर

मुझे परेशान करेगा तो मै कहूँगा—झूठा है तू और फिर तूफानो मे भी चैन की नीद सो सकूँगा।

[फिर एक साथ जोर से बिजली कडकती है। मुकुट पहने हुए एक बच्चा आता है। जिसके हाथ में एक पेड है।]

मैकवैथ : क्या है ?

यह किसी राजकुमार की तरह लगने वाला कौन है जो अपने सिर पर राजमुकुट पहने हुए है जिससे सुनहरी दानो की एक गोल लडी उसकी भौहो तक लटक रही है ?

सभी : उससे कुछ मत बोलो मैकवैथ ! सिर्फ उसकी बात सुनो।

तीसरा पिशाच : शेर की तरह बहादुर और गर्वीला बन और मत परवाह कर कि कौन राज्य में दु खी है, कौन नाराज है या कौन तेरे खिलाफ षड्यन्त्र रच रहा है। मैकवैथ को तब तक कोई नही गिरा सकता जब तक बरनम का वह विशाल वन उस ऊँची डन्सीनेन पहाडी तक आकर उससे टकरा न जाये।

मैकबैथ : जो कभी भी नही हो सकता। क्या कोई एक वन को इस तरह अपने काबू मे ले सकता है ? क्या कोई पेडो को यह आज्ञा दे सकता है कि अपनी जडो से उखड कर चलो ? कोई नही। तब ओ मीठी भविष्यवाणी ! बहुत अच्छा। तब ओ बगावत के उठते हुए सिर ! झुक जा नीचे, झुक जा, उस समय तक जब तक बरनम का वह विशाल वन स्वय बगावत करने न खडा हो जाय। महान मैकबैथ उतने ही दिनो तक जीवित रहेगा जितना भाग्य ने उसके लिये पहले तय किया था और मौत आयेगी भी तो उसी तरह स्वाभाविक रूप से आयेगी जैसे और सभी साधारण प्राणियो को आती है।

लेकिन, फिर भी मेरा दिल एक बात जानने के लिये धडक रहा

है। अपनी करामात से तू इतना वता सकता है तो वता कि क्या वैंको का पुत्र कभी भी इस साम्राज्य पर शासन करेगा ?

सभी : अधिक जानने की इच्छा मत कर मैंकवैथ !

मैंकवैथ : नही, मुझे इसका जवाव मिलना ही चाहिये, नही अगर तू मुझे नही वतायेगा तो हमेशा-हमेशा के लिये तू शाप से जलता रहेगा। वता मुझे। वता · है ! यह देग यहाँ से कहाँ लुप्त हो गई ? क्या कोलाहल मच रहा है यह ?

[शहनाइयां वजती हैं।]

पहली डाइन : दिखा दो उसे।

दूसरी डाइन : दिखा दो उसे।

तीसरी डाइन : दिखा दो उसे ।

सभी : दिखा दो यह सव उसे। होने दो दु खी उसे। छाया वन कर आओ और उसी तरह चले जाओ।

[आठ सम्राटों का एक प्रदर्शन। अन्तिम सम्राट अपने हाथ में एक गिलास लिये हुए है। वैंको की प्रेतात्मा पीछे से चल रही है।]

मैंकवैंथ : कौन है तू ? तू भी वैंको की प्रेतात्मा से मिलता हुआ है, चला जा, मेरे सामने से। तेरे सिर पर रखा हुआ यह ताज मेरी आँखो को गरम लोहे की सलाखों की तरह जला रहा है। और तेरे इन वालो पर ओ दूसरे सम्राट ! जो यह सुनहरा ताज रखा हुआ है वह ठीक पहले सम्राट का-सा ही है। तीसरा भी उसी पहले की तरह है, तो क्यो मुझे यह सव कुछ दिखा रही हो ओ काली-कलूटी चुडैलो ? पर फिर · चौथा सम्राट ? ओ, अच्छा हो कि मेरी आँखे मेरे सिर मे से निकल पड़े। क्या ! क्या यह पक्ति प्रलय के आखिरी दिन तक इसी तरह वढती चली जायेगी ? है ! फिर एक दूसरा ? वह सातवां सम्राट ! नही, नहीं देखूंगा अव और अधिक

में। पर फिर! फिर यह आठवाँ सम्राट? आ रहा है वह। उसके हाथ मे जो गिलास है उसमे मुझे और भी न जाने कितने दिखाई दे रहे हैं। कुछ को तो मैं अपनी आँखो मे देख रहा हूँ। वह देखो, वे दो-दो चक्र और तीन-तीन राजदण्ड ले कर जा रहे हैं। ओ, भयानक! भयानक! अब मैं देख रहा हूँ कि यह सब सत्य है क्योंकि खून से भीगा हुआ बैंको मेरे ऊपर हँस रहा है और उनकी तरफ इशारा करके बता रहा है मुझे कि मैकबैथ! ये हैं मेरे पुत्र और पौत्र।

[पिशाच चले जाते हैं।]

क्या! क्या आखिर यही होगा?

पहली डाइन हाँ, सब ऐसा ही होगा। लेकिन मैकबैथ! तू इससे इतनी चिन्ता और आश्चर्य्य मे क्यो पडा हुआ है? आओ बहनो! चल कर हम उसे अच्छे-अच्छे खेल दिखायें और खुश करे। मैं तो हवा पर वह जादू कर दूँगी कि उससे सगीत के स्वर निकलेंगे और तुम अपना वही पुराना नाच नाचना जिससे यह महान सम्राट आभारी हो कर कह दे कि उसका स्वागत करके उसके प्रति अपने कर्त्तव्य का भली भाँति पालन किया है।

[गाना। डाइनें नाचती हैं और फिर हिकेट के साथ लुप्त हो जाती हैं।]

मैकबैथ · कहाँ गई वे? क्या चली गई? ओ अच्छा हो कि पाप से भरा हुआ वक्त हमेशा अभिशाप की आग से जलता रहे।
कौन है बाहर? अन्दर आओ।

[लैनोक्स का प्रवेश]

लैनोक्स · सम्राट की क्या आज्ञा है?

मैकबैथ : क्या तुमने उन डाइन बहिनो को कही देखा?

लैनोक्स : नही तो, मेरे स्वामी!

मैकवैथ : क्या वे तुम्हारे पास हो कर नही गई ?

लैनोक्स : बिलकुल नही, मेरे स्वामी !

मैकवैथ : ओह ! भगवान करे कि जिधर से भी वे उड कर जाये उधर से ही हवा पूरी तरह जहरीली हो जाय और जो भी उनकी बातो पर भरोसा करते है वे उनसे भी पहले मिट जाये। क्यो ! मुझे अभी कुछ घोडे की टापे सुनाई दी थी। कौन इधर हो कर आया था ?

लैनोक्स : वही दो या तीन दूत है स्वामी ! जो आपको यह खबर देने आये है कि मैकडफ इङ्गलैण्ड भाग गया है।

मैकवैथ : इङ्गलैण्ड भाग गया !

लैनोक्स : जी हां, मेरे श्रेष्ठ स्वामी !

मैकवैथ : (स्वगत) ओ वक्त ! तू मुझसे भी आगे भाग रहा है और मेरे इरादो को पूरा होने से रोक रहा है। ठीक है, जब तक इरादे बनने के साथ-साथ ही पूरे नही किये जायेंगे तब तक ऐसी ही लापरवाही मे सब कुछ बिगडता जायेगा। मैं इस क्षण से प्रण लेता हूँ कि ज्योही मेरे हृदय में कोई उबाल आयेगा उसी क्षण वह काम मेरे हाथ से पूरा होगा। और अब जितने भी मेरे इरादे हैं उन्हे मैं पूरा करके ही रहूँगा। इधर सोचूंगा और उसी पल काम पूरा हो कर रहेगा। मै मैकडफ के महल पर अचानक छापा मारूँगा और उस फाइफ को बाध लूंगा। उसकी औरत और बच्चो को और जो कोई भी अभागा उसके वंश मे होगा उन सबके गले के आर-पार मेरी तलवार की नोक होगी। बढ़-बढ कर बाते करने से तो क्या फायदा है पर मैं कहता हूँ कि अपने इरादो की आग ठडी पडने से पहले मैं अवश्य यह काम पूरा करूँगा।

बस, अब मै और कुछ देखना नही चाहता। बस ! हाँ, कहाँ है वे

दूत। चलो, मुझे उनके पास ले चलो।

[जाते हैं।]

दृश्य २

[मैकडफ का महल। लेडी मैकडफ, उसके पुत्र तथा रौस का प्रवेश]

लेडी मैकडफ : क्यो देश छोड कर भाग गये वे ? आखिर ऐसा क्या किया था उन्होने ?

रौस : धीरज रखिये, देवी !

लेडी मैकडफ : उन्होने ही धीरज क्यो न रखा ? उन्होने यह पागलो का-सा काम किया है। अब तुम्ही सोचो, अगर हमारे कार्य्यों से नही तो इस तरह हमारे डर से हम अवश्य विश्वासघाती समझे जायेगे।

रौस : आप अभी यह नही जानती देवी ! कि उनका इस तरह भाग जाना उनकी बुद्धिमानी है या केवल डर है !

लेडी मैकडफ : बुद्धिमानी ? क्या यही बुद्धिमानी है कि ऐसी जगह पर जहाँ से उन्हे खुद भागना पडा अपनी स्त्री, नन्हे-नन्हे बच्चो, सारी सम्पत्ति, घर और सम्मान को छोड जायें ? उन्हे हमसे कोई प्रेम नही है। मैं कहती हूँ, हमारे प्रति उनके हृदय का स्वाभाविक प्रेम पूरी तरह मर चुका है। देखो तो, एक छोटी से छोटी गरीब चिडिया भी अपने बच्चो को उल्लू के खूख्वार पजे से किसी तरह दूर ही रखती है, उनकी हर तरह रखवाली करती है। और कुछ भी नही, यह सब उनका डर है। उनके हृदय मे प्रेम नही है। तुम्ही बताओ, क्या बुद्धिमानी है उनके इस तरह भाग जाने मे। मुझे तो कोई भी कारण समझ मे नही आता।

रौस : नही, मेरी प्यारी बहिन ! मैं प्रार्थना करता हूँ, थोडा अपने आपको सँभालिये। आपके पति ऐसे नही है। मैं सच कहता हूँ, वे

बहुत ही बुद्धिमान, और महान है और इस समय की क्रूर गति को सबसे अच्छी तरह पहचानते है। बस उससे आगे कुछ कहने की मेरी हिम्मत नही होती लेकिन इतना अवश्य कहूँगा कि समय वही सबसे बुरा और दुर्भाग्यपूर्ण होता है जब हम विश्वासघाती होते हुए भी यह नही जानते कि हम क्या है, जब कि जो इधर-उधर अफवाहे उडती है उन्हे सुन कर डरने लगते है और फिर भी यह नही जानते कि हम डर किससे रहे हैं और सन्देह तथा चिन्ता की उठती लहरो मे इधर-उधर मारे-मारे फिकते रहते है।

अच्छा, अब मुझे आज्ञा दीजिये। कुछ ही क्षणो मे फिर मैं आपके पास आ जाऊँगा। यह समझ लो, कि जो भी खतरे से भरा हुआ काला वक्त अब चल रहा है, वह या तो ख़तम हो ही जायेगा और अगर नही हुआ तो फिर और भी ज्यादा खतरनाक हो जायेगा। और भी काला हो जायेगा। बस भगवान आपको सुखी रखे, यही मेरी कामना है मेरी प्यारी बहिन !

लेडी मैकडफ : अपने पिता के जीवित रहते हुए भी मेरे यह लाल आज अनाथ जैसे हो गये हैं।

रौस : अच्छा, अब अगर अधिक देर तक मै यहाँ ठहरूँगा तो स्वय मूर्ख बन जाऊँगा। कब तक हृदय के इस दुःख को अन्दर ही अन्दर छिपाता रहूँगा ? नही, इससे मेरे पौरुष पर धब्बा लगेगा और तुम्हे भी और अधिक दुख होगा बहिन ! इसलिये, बस, अब मैं तुरन्त यहाँ से जाना चाहता हूँ। अलविदा !

[जाता है।]

[लेडी मैकडफ अपने पुत्र से बातें करती है।]

लेडी मैकडफ : बेटा ! तुम्हारे पिता तो इस ससार से चल बसे। अब

क्या करोगे तुम ? किस तरह अपने जीवन के दिन विताओगे वेटा ?

पुत्र जैसे भगवान की इस दुनिया मे और पक्षी अपने जीवन के दिन विताते है वैसे ही मै विताऊँगा माँ !

लेडी मैकडफ . क्या, कीडे-मकोडो के साथ ?

पुत्र · मेरा मतलव है माँ ! कि जो कुछ भी भगवान मुझे देगा उसी से मै अपना जीवन विताऊँगा। पक्षी इसी तरह तो जीवित रहते है।

लेडी मैकडफ : ओ गरीव चिडिया ! तुझे किसी जाल या गड्ढे मे फसने से डर नही लगता ?

पुत्र · क्यो डरूँ माँ ? क्या ये जाल या गड्ढे वेचारी गरीव चिडियाओ के लिये ही वनाये गये हैं ? तुम चाहे कितना भी कहो पर मैं जानता हूँ कि मेरे पिता अभी जीवित है।

लेडी मैकडफ : नही वेटा ! मैं सच कहती हूँ वे मर गये। अव वताओ, विना पिता के तुम इस दुनिया मे कैसे रहोगे ?

पुत्र : विना पिता के तुम कैसे रहोगी माँ ?

लेडी मैकडफ : क्यो, मेरा क्या, मैं तो किसी वाज़ार से वीसो पति खरीद सकती हूँ।

पुत्र : तो फिर उन्हे फिर बेचने के लिये ही खरीदोगी न माँ ?

लेडी मैकडफ : अरे, तुम तो अपनी पूरी अक्ल लगा कर जवाव दे रहे हो। फिर भी ठीक इतनी ही अक्ल तुम्हारे लिये पर्याप्त भी है।

पुत्र : क्यो माँ ? क्या मेरे पिता कोई विश्वासघाती थे ?

लेडी मैकडफ . हाँ, वे विश्वासघाती थे वेटा !

पुत्र : विश्वासघाती कौन होता है माँ ?

लेडी मैकडफ : वही जो वचन दे कर उसी के विरुद्ध कार्य्य करता है।

पुत्र : क्या ऐसा करने वाले सभी विश्वासघाती होते हैं माँ ?

लेडी मैकडफ़ : हाँ, ऐसे विश्वासघाती होते है और उन्हे तो फाँसी के तख़्ते पर लटका देना चाहिये बेटा !

पुत्र : और उन सबो को भी माँ ! जो अपना ईमान उठाते हुए झूठ बोलते है ?

लेडी मैकडफ़ : हर एक को ।

पुत्र : पर कौन लटकायेगा फाँसी के तख़्ते पर उन्हे माँ ?

लेडी मैकडफ़ : ईमानदार आदमी लटकायेगे बेटा !

पुत्र : तब तो झूठा ईमान उठाने वाले मूर्ख है माँ ! क्योकि उनकी संख्या तो इतनी अधिक है कि अगर वे चाहे तो वे उलटे उन ईमानदार आदमियो को ही पीट कर फाँसी पर लटका सकते है ।

लेडी मैकडफ़ : अब भगवान ही तेरी देखभाल करे मेरे छोटे-से बन्दर! लेकिन बिना पिता के तू रहेगा कैसे ?

पुत्र : पर हाँ, अगर वे मर जाते तो तुम उनके लिये रोती माँ ! तुम तो रोई नही इसलिये यह तो बहुत अच्छा सकेत है कि अगर वे नही तो मुझे जल्दी ही दूसरे पिता मिलने वाले है !

लेडी मैकडफ़ : ओ बातून ! तू बाते कैसी अच्छी-अच्छी बनाना सीख गया है ।

[एक दूत का प्रवेश]

दूत : भगवान आपको बचाए ओ देवी ! आप मुझे नही जानती यद्यपि आपके उच्चपद के कारण मै आपको अच्छी तरह जानता हूँ । मुझे डर है कि कोई ख़तरा जल्दी ही आपके सिर पर आने वाला है । अगर आप एक सीधे और सच्चे आदमी की सलाह माने तो यहाँ अब एक पल भी मत रहिये देवी ! फौरन अपने बच्चो को ले कर अपनी जीवन-रक्षा के लिये यहाँ से भाग जाइये । मौत आ रही है देवी ! भाग जाओ यहाँ से । हाँ, मै जानता हूँ कि मेरे इन शब्दो

से आपको डराते हुए मैं आपके प्रति कठोरता का व्यवहार कर रहा हूँ लेकिन सच कह रहा हूँ देवी! अगर मै अब भी आपको उस खतरे की सूचना न दूं, जो ठीक आपके सिर पर आ चुका है, तो उससे भी कही अधिक मै निर्दयी हूँगा। भगवान आपकी रक्षा करे। बस अधिक देर तक यहाँ ठहरने का साहस मैं नही कर सकता।

[जाता है।]

लेडी मैकडफ : कहाँ भाग कर जाऊँ मै? मैने किसी का क्या बिगाडा है? लेकिन हाँ, याद आया मुझे। क्यो भूल रही हूँ मै कि मैं उस अभागी दुनियाँ मे हूँ जहाँ किसी को नुकसान पहुँचाना ही सराहनीय कार्य्य गिना जाता है। किसी की भलाई करने के बराबर और क्या मूर्खता होगी जिससे न जाने कितने खतरे सिर पर खडे हो जाते हैं। तो फिर हाय! मै क्यो एक अबला की तरह पुकार कर कि मैने किसी का कुछ नही बिगाडा है, अपनी रक्षा के लिये आशा करती हूँ?

(चौंक कर) हैं! कौन हैं ये? कौन हो तुम?

[हत्यारे प्रवेश करते हैं।]

हत्यारा : कहाँ है तेरा पति?

लेडी मैकडफ : वे ऐसे किसी पाप भरे हुए स्थान पर नही हैं जहाँ तुम जैसे पापी उन्हे पा सकें।

हत्यारा : वह विश्वासघाती है।

पुत्र : झूठ बोलता है तू! तू जरूर कोई बदमाश है।

पहला हत्यारा : ओ छोटे से अण्डे! तू! (बच्चे के पेट में कटार भोंकता है।) जा ओ गद्दार की औलाद!

पुत्र : माँ! ओ माँ! मुझे मार डाला है इसने! तुम भाग जाओ

मां ! मैं कहता हूँ अपने जीवन के लिये यहाँ से भाग जाओ। लो मैं चला।

[मरता है।]

[लेडी मैकडफ 'खून ! खून !' चिल्लाती हुई बाहर भागती है और हत्यारे उसका पीछा करते हैं।]

दृश्य ३

[इङ्गलैंड। राजमहल के सामने मैलकॉम और मैकडफ का प्रवेश]

मैलकॉम : तो चलो किसी जगह पर चले और कुछ देर वही आँसू बहा कर अपने जी का भार हलका कर ले।

मैकडफ : नही, यह क्यो ? इसकी बजाय तो क्यो नही इस खून की प्यासी तलवार को हम अपने हाथ मे ले और बहादुरो की तरह उस चाण्डाल के ज़ुल्मो से कुचले हुए अपने दु खी देश को आज़ाद करे जो कि हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हर एक दिन जब सुबह उस स्कॉटलैंड की भूमि पर सूरज अपनी आँख खोलता है तो न जाने कितनी विधवाएँ उसे अपने-अपने पतियो के शवो पर गला फाड कर रोती हुई मिलती हैं, न जाने कितने अनाथ बच्चे उसकी तरफ देख कर निस्सहाय से पुकार उठते हैं। क्या बताऊँ, हर एक दिन नये दु ख का तोफा ले कर आता है जिससे बेचारे वे गरीब लोग रात और दिन रोते-चीखते हैं। कहा नही जाता राजकुमार ! स्वय आकाश भी उनके इस हाहाकार को सुन कर उनकी सहानुभूति मे रो उठता है।

मैलकॉम : बस, जो कुछ भी मैं सुनता हूँ उन पर पूरी तरह विश्वास करता हूँ और यही विश्वास मुझे रुलाता है। मै अवश्य मेरे उन दु खी देश

मे आपको डराते हुए मैं आपके प्रति कठोरता का व्यवहार कर रहा हूँ लेकिन सच कह रहा हूँ देवी ! अगर मै अब भी आपको उस खतरे की सूचना न दूं, जो ठीक आपके सिर पर आ चुका है, तो उससे भी कही अधिक मै निर्दयी हूँगा। भगवान आपकी रक्षा करे। वस अधिक देर तक यहाँ ठहरने का साहस मै नही कर सकता।

[जाता है।]

लेडी मैकडफ : कहाँ भाग कर जाऊँ मै ? मैने किसी का क्या विगाडा है ? लेकिन हाँ, याद आया मुझे। क्यो भूल रही हूँ मै कि मैं उस अभागी दुनियाँ मे हूँ जहाँ किसी को नुकसान पहुँचाना ही सराहनीय कार्य्य गिना जाता है। किसी की भलाई करने के वरावर और क्या मूर्खता होगी जिससे न जाने कितने खतरे सिर पर खडे हो जाते हैं। तो फिर हाय ! मै क्यो एक अवला की तरह पुकार कर कि मैने किसी का कुछ नही विगाडा है, अपनी रक्षा के लिये आशा करती हूँ ?

(चौंक कर) हे ! कौन हैं ये ? कौन हो तुम ?

[हत्यारे प्रवेश करते हैं।]

हत्यारा : कहाँ है तेरा पति ?

लेडी मैकडफ : वे ऐसे किसी पाप भरे हुए स्थान पर नही हैं जहाँ तुम जैसे पापी उन्हे पा सकें।

हत्यारा : वह विश्वासघाती है।

पुत्र : झूठ बोलता है तू ! तू ज़रूर कोई बदमाश है।

पहला हत्यारा : ओ छोटे से अण्डे ! तू ! (बच्चे के पेट में कटार भोंकता है।) जा ओ गद्दार की औलाद !

पुत्र : माँ ! ओ माँ ! मुझे मार डाला है इसने ! तुम भाग जाओ

माँ ! मै कहता हूँ अपने जीवन के लिये यहाँ से भाग जाओ। लो मै चला ।

[मरता है।]

[लिडी मैकडफ 'खून ! खून !' चिल्लाती हुई बाहर भागती है और हत्यारे उसका पीछा करते है ।]

दृश्य ३

[इङ्गलैंड । राजमहल के सामने मैलकॉम और मैकडफ का प्रवेश]

मैलकॉम : तो चलो किसी जगह पर चले और कुछ देर वही आँसू बहा कर अपने जी का भार हलका कर लें।

मैकडफ : नही, यह क्यो ? इसकी बजाय तो क्यो नही इस खून की प्यासी तलवार को हम अपने हाथ मे लें और बहादुरो की तरह उस चाण्डाल के जुल्मो से कुचले हुए अपने दु खी देश को आजाद करे जो कि हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हर एक दिन जब सुबह उस स्कॉटलैंड की भूमि पर सूरज अपनी आँख खोलता है तो न जाने कितनी विधवाएँ उसे अपने-अपने पतियो के शवो पर गला फाड कर रोती हुई मिलती हैं, न जाने कितने अनाथ बच्चे उसकी तरफ देख कर निस्सहाय से पुकार उठते है । क्या बताऊँ, हर एक दिन नये दु ख का तोफा ले कर आता है जिससे बेचारे वे गरीब लोग रात और दिन रोते-चीखते है। कहा नही जाता राजकुमार ! स्वय आकाश भी उनके इस हाहाकार को सुन कर उनकी सहानुभूति मे रो उठता है।

मैलकॉम : बस, जो कुछ भी मैं सुनता हूँ उस पर पूरी तरह विश्वास करता हूँ और यही विश्वास मुझे रुलाता है । मै अवश्य मेरे उस दु खी देश

को इस दयनीय अवस्था से मुक्त करूँगा। बस किसी ठीक मौ
की मुझे इन्तज़ार है, तुम जैसे कह रहे हो हो सकता है वही हाल
वहाँ हो। जानते हो, यह चाण्डाल तो एक दिन बहुत ईमानदा
और सच्चा आदमी समझा जाता था और आज जब हम उसक
नाम भी लेते है तो हमारी जीभ तक जलने लगती है ? तुम भी त
उसे बहुत प्यार करते थे न ? तुम्हे वह अभी तक कोई आँच नहं
पहुँचा सका है। मै तुमसे कहता हूँ कि मैं तो अब मुसीबतो क
मारा एक छोटा-सा और महत्वहीन आदमी हूँ। तुम मुझ जै
कमज़ोर, गरीब और बेगुनाह आदमी को उस आग उगलते देवत
की क्रोधाग्नि मे डाल कर क्यो नही कोई बुद्धिमानी का काम कर
हो ? इससे तुम्हे वह बहुत कुछ देगा।

मैकडफ . बस, मैं विश्वासघाती नही हूँ राजकुमार !

मैलकॉम लेकिन मैकबैथ तो है। राजा की आज्ञा के दबाव मे अच्छ
से अच्छे व्यक्ति भी अपने सच्चे रास्ते से डिग जाते हैं। लेकि
क्षमा करना मुझे, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ। जो कुछ भी तुम ह
मेरे शक करने से बदल थोडे ही सकते हो। देवता आज भी उत
ही सुन्दर हैं चाहे उनमे से अधिकाश सुन्दर से सुन्दर नीचे गिर चुं
है। चाहे जो चीज़ें बुरी और पतित हैं अच्छाई का रूप धार
कर लें तो भी क्या अच्छाई के रूप मे कभी कोई अन्तर अ
सकता है ?

मैकडफ : तब क्या मै अपने उस दु खी देश के लिये जो-जो आशा बन
कर आया था वे हमेशा के लिये मिट गई ?

मैलकॉम ' तुमने यह और क्या नादानी की कि इस जल्दी मे अपने
स्त्री और बच्चो को वहाँ छोड आये। इस तरह उन्हे अकेला और
निस्सहाय छोड कर क्यो तुमने उनके प्रेम को ठुकरा दिया ? जिन

स्नेह के बन्धनो मे प्रकृति ने तुम्हे एक दूसरे से बाँधा है क्यो तोड दिया उन्हे तुमने ? शायद इसीसे तुम पर मेरा शक हुआ है पर फिर भी मैं तुमसे यह प्रार्थना करता हूँ कि इससे यह न समझो कि मेरे हृदय मे तुम्हारे प्रति कोई बुरी भावना पहले से है लेकिन मुझे हर समय अपने जीवन की रक्षा के विषय मे शका बनी रहती है। इससे तुम यह कभी न सोचना कि मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ इससे मेरा यह मतलब है कि तुम कोई अच्छे और सच्चे व्यक्ति नही हो।

मैकडफ़ : तो फिर ओ मेरी अभागी मातृभूमि! बहने दे इस खून को तेरे शरीर से! सूख जाने दे अपनी एक-एक धमनी को! ओ जुल्मो की आग! जमा ले अपनी जडें और भी मजबूती के साथ क्योकि मनुष्य की अच्छाई मे तुझे रोकने का साहस नही है। जलाती जा उन निस्सहाय प्राणियो को क्योकि अब तो तुझे इसका खुला अधिकार मिल चुका है।

अच्छा मेरे स्वामी! विदा! जैसा तुम सोचते हो वैसा नीच मैं नही हूँ और न हो सकता हूँ चाहे इस चाण्डाल का पूरा राज्य और उससे भी अधिक पूर्व दिशा के समृद्धशाली राज्य भी मुझे क्यो न बदले मे मिले।

मैलकॉम : मेरी बात का बुरा न मानो। जो कुछ भी मैंने तुमसे कहा है वह पूरी तरह तुम पर शक करके नहीं कहा है। मैं जानता हूँ, हमारा देश इस समय जुल्मो के पजे के नीचे दबा हुआ हाहाकार कर रहा है। इसी से इसके निस्सहाय प्राणी नित्य रोते है, उनके शरीरो से खून बहता है और एक-एक दिन मेरे इस दुखी देश के घावो की पीडा बढती ही जाती है। जहाँ तक मैं सोचता हूँ इससे कुछ लोग तो स्कॉटलैण्ड में मेरा साथ देगे और इधर इङ्गलैण्ड के

उदार सम्राट ने हजारो की सख्या मे सैनिक मेरे साथ भेजने का वायदा किया है। लेकिन इस सबसे जब मैं उस चाण्डाल ज़ालिम का सिर कुचलूंगा और उसे काट कर अपनी तलवार की नोक पर लगाऊँगा तब भी क्या यह देश जुल्मो से छुटकारा पा जायेगा ? न जाने फिर भी कितने ही जुल्म इसकी जमीन पर होते रहेगे जो शायद पहले नही हुए होगे। जो भी इसके बाद सम्राट बनेगा वह तो और भी अनेक तरह के जुल्म करके निस्सहाय प्राणियो को अधिक रुलायेगा।

मैकडफ · कौन होगा वह ?

मैलकॉम : मै अपनी ही बात कह रहा हूँ क्योकि मै अपने चरित्र को अच्छी तरह जानता हूँ। जितनी भी बुराइयाँ और पाप हो सकते हैं वे सब मुझमे इस तरह जड जमाये हुए हैं कि जब वे बाहर आयेंगे तो सच पापो से काला वह मैकबैथ भी मेरे सामने बर्फ की तरह सफेद और पवित्र चमकेगा। तब यह दु खी देश मेरे अन-गिनती जुल्मो के मुकाबले मे उसे एक सीधा और नादान मेमना समझेगा।

मैकडफ : क्या ? नही ! काले से काले, डरावने असख्य नरको मे भी उस मैकबैथ जैसा पापी और चाण्डाल नही मिलेगा।

मैलकॉम : मैं मानता हूँ कि वह खून का प्यासा है, लालची है, झूठा है, धोखेबाज, दुष्ट, उतावला, ऐय्याश सब कुछ है और इसके भी अलावा जितनी बुराइयाँ हो सकती हैं वे सब उसमे हैं लेकिन मेरे स्वभाव मे जो लालच और ऐय्याशी है उसकी तो कोई थाह नही है, फिर तुम्ही बताओ, कि ऐसे आदमी के मुकाबिले मे मैकबैथ क्यो सम्राट बनने के अधिक योग्य नही है ?

मैकडफ : लेकिन इस तरह सीमा से बाहर अपनी इन्द्रियो को बस में न

रखना तो अपने ऊपर अत्याचार करने के बराबर है क्योंकि इससे तो मनुष्य की सारी बुद्धि और चेतना ही मारी जाती है। यही कारण तो कितने ही राजाओ के पतन का कारण बना और इसी से कितनी ही राजगद्दियाँ समय से पहले ही सूनी हो गई। लेकिन कुछ भी हो, जो तुम्हारे अधिकार की वस्तु है उसे तुम लेने मे क्यो डरते हो ? अगर तुम फिर ऐय्याशी करना चाहते हो तो क्या छिपे रूप से नही कर सकते जिससे बाहर सभी को यही मालूम होता रहे कि सम्राट अपने चरित्र मे पूरी तरह उज्ज्वल है।

मैलकॉम : लेकिन क्या बताऊँ, इसके साथ-साथ मुझमे एक दूसरा भी तो दोष है और वह है मेरा लालच जिसकी तृप्ति कभी हो ही नही सकती। अगर मैं सम्राट हो गया तो सबसे पहले मैं चाहूँगा कि राज्य के सरदारो की सारी जागीरें हड़प लूं। किसी की दौलत को दबा लूं, किसी के घर पर कब्जा कर लूं। बस यह समझ लो, जितना अधिक मुझे मिलता जायेगा उतनी ही अधिक मेरी भूख बढ़ती जायेगी। इससे हो सकता है कि अच्छे और राजभक्त लोगों की भी धन-दौलत मुझे अन्यायपूर्ण ढग से लूट लेनी पड़े जो पूरी तरह उनकी बरबादी का कारण होगा।

मैकडफ़ : तो फिर उस बढती हुई लालच से तो इन्द्रियो के विलास की वह क्षणिक इच्छा, जो ग्रीष्म ऋतु की तरह अल्पकालीन होती है, कही कम है। यह लालच तो बहुत नीचे तक अपनी जड़े जमाती है और उससे भी कही अधिक मनुष्य के लिये घातक है। यह तो उस तलवार की तरह है जिसने अनेको राजाओ को मौत के घाट उतार दिया हो और फिर भी खून की प्यासी हो। लेकिन हाँ, डरो नही फिर भी। स्कॉटलैण्ड के अन्दर किस चीज़ की कमी है जिससे तुम्हारी भूख न मिट सके। तुम्हारे स्वयं के अधिकार मे ही

इतना अधिक है। तुम्हारे ये सब दोष सहन करने योग्य हैं स्वामी! बशर्ते तुम अपने दूसरे अच्छे गुणो से इनकी पूर्ति कर लो।

मैलकॉम . लेकिन मुझमे तो कोई भी गुण नही है। एक अच्छे राजा के जो भी गुण होते है जैसे न्याय, सच्चाई, आत्मसयम, दृढता, उदारता, धैर्य्य, दया, विनीत भाव, भक्ति, वीरता और साहस उनमे से कोई भी तो मुझमे नही है बल्कि मै तो एक ही बुराई को न जाने कितनी तरह से करता हूँ। इस तरह एक पाप के अन्दर ही अनेक पापो का भागी हूँ। अगर मेरी ताकत मे यह भी होता कि आपस के सद्भाव और सहयोग के इस मीठे दूध को नरक की उस जलती आग मे फेंक दूं और दुनिया की शान्ति और एकता को नष्ट करने के लिये एक तूफान खडा कर दूं तो मैं उसे अवश्य करता।

मैकडफ : तब ओ स्कॉडलैण्ड! ओ मेरी निस्सहाय मातृभूमि!!

मैलकॉम : अब बोलो, अगर तुम चाहते हो कि ऐसा व्यक्ति जा कर स्कॉटलैण्ड पर राज्य करे तो चलो मैं हूँ।

मैकडफ : नही! नही! राज्य करने योग्य तो क्या जीवित रहने के योग्य भी नही है ऐसा व्यक्ति। ओ मेरे दु खी देश! जो यह चाण्डाल इस खून से भीगे राजदण्ड को ले कर तेरे ऊपर अनधिकार रूप से राज्य कर रहा है उससे कब मुक्ति पा कर तू अपने अच्छे दिन देखेगा? तेरा सच्चा स्वामी तो अपने चरित्र मे न जाने कितने दोष देख कर अपने जन्म पर धब्बा लगा रहा है और अपने आप को पापी और अपराधी कह रहा है।

अच्छा, मेरे स्वामी! अलविदा! जाता हूँ पर मैं भूला नही कि तुम्हारे पिता कितने उज्ज्वल चरित्र और उदार हृदय वाले सम्राट थे और महारानी, तुम्हारी माँ जिन्होने तुम्हे जन्म दिया है कैसी थी वे? कितनी देर तक अपने घुटनो पर झुक कर भगवान् से

प्रार्थना किया करती थी और वह बहादुर महारानी प्रतिदिन अपनी मौत का सामना करने के लिये तैय्यार रहती थी। अच्छा, अल-विदा! यह बताओ कि जो भी दोष तुम अपने चरित्र मे बता रहे हो क्या इन्ही की आशा मे मै आज स्कॉटलैण्ड से निर्वासित हो गया हूँ? बस, ओ मेरे हृदय! तेरी अब तक की बनाई सारी आशाओ का यहां अन्त होता है!

मैलकॉम : मेरे मैकडफ! तुम्हारे सच्चे हृदय से उत्पन्न भावो ने मेरे हृदय मे तुम्हारे प्रति पैदा हुए काले दागो को पूरी तरह धो दिया है और मुझे तुम्हारी सच्चाई पर पूरा भरोसा है। मै तुम्हारा हृदय से सम्मान करता हूँ मैकडफ! वह शैतान मैकबैथ मुझे अपने पजे मे लेने का बहुत प्रयत्न कर रहा है इसी लिये पहले पहल मुझे किसी पर भी विश्वास नही होता है और न ही मुझे करना चाहिये। लेकिन अब हम सबके ऊपर बैठा हुआ वह भगवान ही हमारे बीच है। मै अब पूरी तरह से अपने आपको तुम्हारे बताये मार्ग पर चलने के लिये छोड देता हूँ और जो भी दोषारोपण मैंने अपने ऊपर किया है उसे वापिस लेता हूँ क्योकि तुम तो जानते ही हो कि इन दोषो मे से मै किसी को जानता तक नही। मैने न तो अभी तक किसी स्त्री को जाना है और न कभी अपना दिया वचन ही तोड़ा है। दूसरे की तो क्या अपनी स्वय की वस्तुओ के लिये भी मेरे हृदय मे कभी लालच पैदा नही हुई। मैं सच कहता हूँ, आज तक मैने किसी के साथ भी विश्वासघात नही किया, यहां तक कि स्वय शैतान के साथ भी मै विश्वासघात नही कर सकता मैकडफ! सत्य के मार्ग पर ही जितना सुख मुझे मिल सकता है वही मेरा है। मैने अपने बारे मे ये बुरी-बुरी बाते कह कर जीवन मे पहली बार ही झूठ बोला है। वास्तव मे जो भी गुण मुझमे है उन्हे

तुम्हारे और मेरे दु खी देश के अर्पित करता हूँ जहाँ जाने के लिये वृद्ध सेनापति सिवार्ड दस हजार सैनिको सहित तुम्हारे आने से पहले ही तैय्यार हैं और बस यहाँ से चलने वाले ही है। अब हम सभी एक साथ चलेंगे। जैसा न्यायपूर्ण हमारे देश पर हमारा अधिकार है वैसे ही हमारी विजय के भी अच्छे आसार हैं। क्यो ! तुम चुप क्यो हो ?

मैकडफ : इतने बुरे और अच्छे भाव एक ही साथ ! ओह ! इन्हे आपस मे मिलाना कितना कठिन है !

[एक डाक्टर का प्रवेश]

मैलकॉम : बस, एक क्षण मे फिर इसी पर बात करेंगे। पर क्या आप यह बताने की कृपा करेंगे कि सम्राट राजमहल के बाहर आज आयेंगे या नही ?

डॉक्टर : हाँ अवश्य श्रीमान् ! बेचारे कुछ दुःखी-बीमार लोग बाहर अपने इलाज के लिये उन्ही की प्रतीक्षा मे खडे हैं। बडी से बडी विद्या वाले डॉक्टर भी उनकी बीमारी को देख कर असमजस मे पड गये हैं लेकिन भगवान सम्राट के हाथ मे ऐसी पवित्रता दी है कि उसके छूते ही वे सब अच्छे हो जाते हैं।

मैलकॉम : मेरी ओर से आपको धन्यवाद है डॉक्टर !

[डॉक्टर जाता है।]

मैकडफ : किसी बीमार के बारे मे कह रहे थे ये ?

मैलकॉम : इसे 'किंग्स ईविल'[१] (राजा का पाप) कहते हैं। पवित्र हृदय

---

१. King's Evil—गण्डमाला नाम की बीमारी। इसे 'किंग्स ईविल' (राजा का पाप) इसी लिये कह कर पुकारते हैं क्योंकि इगलैण्ड में यह अन्ध-विश्वास चला आ रहा था कि राजा के स्पर्श करने मात्र से ही यह बीमारी ठीक हो जाती है। इसका वर्णन करके हो सकता है शेक्सपियर 'सम्राट जेम्स' को उच्च सम्मान देना चाहता हो।

वाले सम्राट मे यह एक ऐसा आश्चर्यजनक गुण है कि जब से मै यहाँ इङ्गलैण्ड मे हूँ तभी से इन्हे ऐसा करता देख रहा हूँ। कैसे वे अपने मे यह दैवी शक्ति ले आते है इसे तो वे ही जानते है। अजीब-अजीब बीमारियो से पीडित लोग पूरी तरह सूजे हुए और पूरी तरह घावो से पके हुए उनके पास आते है। सच कहता हूँ, उन बीमारो की दयनीय अवस्था देख कर आँखो मे आँसू आ जाते है। जिनका इलाज डाक्टरी विद्या के पास नही है उनकी गरदन मे वे सोने का तावीज बांध देते है और उस पर कुछ मन्त्र पढ कर बीमार को अच्छा कर देते है। यह भी कहा जाता है कि जो भी सम्राट होता है वह अपने उत्तराधिकारियो के लिये यह गुण अवश्य सिखा कर जाता है। इस गुण के अलावा भी न जाने कितने ही गुण सम्राट मे है जैसे भविष्य की बात बता देना आदि। कितने ही तो यहाँ तक कहते है कि सम्राट मे ईश्वरीय शक्ति पूरी तरह समाई हुई है।

[रौस का प्रवेश]

मैकडफ : वह देखो, कौन आ रहा है ?

मैलकॉम : यह तो मेरा कोई देशवासी लगता है पर फिर भी इसे मै जानता तो नही हूँ।

मैकडफ : ओ, आओ मेरे प्यारे भाई! स्वागत है।

मैलकॉम : अब मै इसे पहचान गया। हे भगवान! तुमने कितने ठीक समय पर उन सब कारणो को दूर कर दिया जिनसे हम एक दूसरे को अजीब तरह से समझे हुए थे।

रौस : आमीन ! भाई !

मैकडफ : क्यों रौस! बताओ, क्या हमारा देश उसी तरह दुखी है जैसा पहले था ?

रौस : हाय ! मेरे दुखी देश ! आतंक इस हद तक बढ चुका है कि मनुष्य को अपने आपसे डर लगने लगा है। अब स्कॉटलैण्ड हमारी मातृभूमि नही रह गया। बल्कि इसे तो अब कब्रिस्तान कहना अच्छा होगा जहाँ कोई भी खुशी से मुस्कराता हुआ नहीं दिखाई दे सकता। हाँ, इस आतंक के बीच वही थोडा-बहुत मुस्करा सकता है जिसे अभी कुछ भी पता न हो। अब हमारी उस मातृभूमि कहलाने वाले देश मे पल-पल पर आह और चीत्कार सुनाई देती है जिसकी तरफ कोई भी ध्यान देने वाला नही है। चारो तरफ उन्मादित-सी हो कर वेदना और हाहाकार इस तरह फिर रहा है मानो वहाँ के लिये यह स्वाभाविक हो चुका हो। मैं सच कहता हूँ, निस्सहाय प्राणी मरते हैं तो उनके शवो को देख कर यह तक कोई पूछने वाला नही है कि कौन ये इस दुनिया को छोड कर चले जा रहे हैं। कहाँ तक कहूँ, जो अच्छे और भले आदमी है उनके जीवन का भी क्या है, अभी उनके सिर पर सम्मान के साथ खिले हुए फूल रखे जाते है और कुछ ही क्षणो मे इससे पहले कि वे फूल मुरझा कर गिर जाये उनकी गरदन ही उस चाण्डाल के हाथो कट कर ज़मीन पर गिर जाती है।

मैकडफ : मेरे प्यारे भाई ! जो कुछ भी तुम कह रहे हो वह सब ठीक है। तुम अच्छी तरह से सब कुछ वर्णन कर रहे हो।

मैलकॉम . लेकिन अभी हाल की खबर क्या है ?

रौस स्वामी ! एक घंटे पहले की भी खबर इतनी पुरानी पड जाती है कि कोई उस पर ध्यान तक नही देता। वहाँ तो प्रति पल नई-नई आफतें आती है और प्रति पल ही नई खबरें पैदा होती हैं।

मैकडफ मेरी पत्नी कैसे है ?

रौस : क्यो ! अच्छी तरह से है।

मैकडफ़ : और मेरे सभी बच्चे ?
रौस : वे भी अच्छे हैं।
मैकडफ़ उस चाण्डाल ने उन्हे सताया तो नही ?
रौस : नही जब मै चला था तब तक तो वे कुशलपूर्वक थे।
मैकडफ़ : छिपाओ नही भाई ! मुझे लगता है कि तुम कुछ कहना चाहते हो पर अपने आपको रोक रहे हो। कहो, सच बताओ मेरे भाई ! कैसे है वे ?
रौस : अपने हृदय के दु ख को ले कर जब मै इधर आ रहा था तब एक अफवाह मेरे कानो तक उड़ती हुई-सी आई थी कि राज्य के बहुत से भले आदमियो ने उस दुष्ट के विरुद्ध हथियार उठा लिये है। इस बात पर मेरा विश्वास उस समय और भी पक्का हो गया जब मैने स्वय आँखो से उस जालिम की फौजो को चलते हुए देखा। इसी समय हमारी सहायता की आवश्यकता है। अगर इस समय स्वामी ! आप स्कॉटलैण्ड पहुँच जाये तो सैनिक तो दूने उत्साह से लडेंगे ही यहाँ तक कि अबला स्त्रियाँ भी अपने देश के दु.ख का निवारण करने के लिये उस जालिम के खिलाफ हथियार उठा लेगी।
मैलकॉम : अच्छा, तो फिर उन्हे किसी तरह इस खबर से सन्तोष मिलना चाहिये कि हम आ रहे है। इङ्गलैण्ड के उदार और सहिष्णु सम्राट हमारे साथ सुयोग्य सेनापति सिवार्ड तथा दस हजार सैनिकों को भेज रहे हैं। सिवार्ड से बढ कर इस पूरे ससार (Christendom) मे कौन अनुभवी और अच्छा सैनिक है ?
रौस : ओ ! काश ! जैसी अच्छी खबर है वैसा ही अच्छा उत्तर मैं आपको दे पाता ! लेकिन मेरे पास इसके लिये शब्द नही है। जो कुछ भी हैं वे तो सिर्फ किसी निर्जन वन में पुकारे जाने चाहिये जहाँ कोई उन्हें न सुन सके।

मैकडफ : किससे सम्बन्धित है तुम्हारे वे शब्द मेरे भाई! क्या सर्व-साधारण से सम्बन्ध रखने वाली कोई बात है या उनमे किसी एक ही व्यक्ति के जीवन का दु ख छिपा है ?

रौस : प्रत्येक मनुष्य जिसका भी हृदय सच्चा है वही इस दु ख का भागी है लेकिन भाई! इसका मुख्य सम्बन्ध तुम्हारे ही जीवन से है।

मैकडफ : अगर मेरे जीवन से है तो बताओ। मुझसे अब छिपाओ नही भाई! बता दो मुझे शीघ्र क्या बात है ?

रौस : पर मुझे डर है कि यह सुन कर तुम्हारे कान मेरी जीभ से घृणा न करने लग जायें क्योकि वे ऐसा ही दु खदायी समाचार सुनेगे जैसा किसी ने कभी नही सुना होगा।

मैकडफ : ठीक है! मैं समझ गया। मै समझ गया भाई! जो तुम कहोगे।

रौस : तुम्हारे महल पर अचानक ही उस ज़ालिम ने छापा मार कर अधि-कार कर लिया और तुम्हारी स्त्री और बच्चो को निर्दयता से अपनी तलवार के घाट उतार दिया। बस अब आगे मत पूछो। अगर उस मृत्यु-काण्ड की सारी बातें तुम्हे बताने लगूँगा तो सच भाई! उन अभागो के साथ तुम भी इसी क्षण इस ससार से चल बसोगे।

मैलकॉम : हैं! हे दयालु ईश्वर! क्या है यह तेरा बनाया हुआ प्राणी! मैडकफ! मेरा भाई! इस तरह अपनी आँखो के आँसुओ को छिपाने का प्रयत्न न करो। बह जाने दो हृदय की इस पीड़ा को। रोओ मेरे भाई! बोलो कुछ। इस तरह आँखें फाडे गुमसुम न खडे रहो। जो पीडा अन्दर ही अन्दर दबी रह जाती है और किसी तरह बाहर नही निकल पाती उससे हृदय फट जाता है।

मैकडफ : क्या मेरे वे लाल तक भी उस चाण्डाल की तलवार से नही बचे ?

रौस : कोई भी नही। स्त्री-बच्चे जो कुछ भी उनके सामने आया उनकी ही गरदनें कट-कट कर जमीन पर गिर पड़ी।

मैकडफ़ : और ऐसे समय मे मैं यहाँ था! ओह! क्या मेरी पत्नी भी मुझे छोड़ कर चली गई ?

रौस : हाँ, मैं पहले ही बता चुका हूँ।

मैलकॉम : धैर्य्य रखो मैकडफ! हम उनके खून की एक-एक बूंद का बदला लेगे।

मैकडफ़ : क्या उस चाण्डाल के बच्चे नही है जो उसका हाथ मेरे मासूम बच्चो पर उठा। मेरे प्यारे लाल! कहाँ हो तुम ?…क्या कहा तुमने ? सभी मुझे अकेला छोड़ कर इस दुनिया से चले गये ? ओ नरक के जल्लाद ! क्या तेरी तलवार ने मेरे सभी बच्चों का खून पी लिया ?· बताओ मुझे, क्या मेरी स्त्री और मेरे वे सभी लाल उस हत्यारे की एक ही चोट से मुझसे पराये हो कर चले गये ?

मैलकॉम : घबराओ नही भाई! एक बहादुर आदमी की तरह धीरज रखो।

मैकडफ़ : रखूंगा। धीरज रखूंगा ··पर कैसे रखूँ, मुझे बताओ मै कैसे धीरज रखूं ? किसका हृदय ऐसे दु ख से नही फट जायेगा ? फिर मैं भी तो एक प्राणी हूँ। मै मेरे उन प्यारे लालो को, मेरी उस प्यारी पत्नी को कैसे एक क्षण मे भूल जाऊँ ?…कैसे उन्हे भूल जाऊँ, बताओ मुझे। हो नही सकता कि मुझे इस तरह बरबाद करने मे भगवान ने स्वय भाग न लिया हो। ठीक है, पर ओ पापी मैकडफ! सबसे बड़ा तो उन मासूमो की हत्या का कारण तू है। तूने खून किया है उनका।…ओह! अब क्या हूँ मैं ? कुछ भी नही।·· मैं जानता हूँ कि यह मेरे ही कारण हुआ है नही तो उनका क्या दोष था जिससे इन निर्दयता के साथ वे मारे जाते ?

हे ईश्वर! उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करना।

मैलकॉम : दु खी मत हो मैकडफ। वल्कि इस दु ख को क्रोध की चिनगारियो मे वदल डालो। अपने हृदय को ऐसा पत्थर वना लो जिस पर तुम अपनी नलवार की धार तेज़ कर सको। मेरे मैकडफ! इस तरह अपने हृदय को न गिराओ वल्कि क्रोध के उवाल के साथ इसे ऊपर उठने दो।

मैकडफ़ : अव मैं क्या करूं? उस दयालु ईश्वर ने ही मेरे प्यारे स्त्री-वच्चो को मुझसे छीन लिया नही तो ओ स्कॉटलैण्ड के शैतान हत्यारे! सच, अगर तू मेरी तलवार के सामने आ कर एक वार भी वच कर निकल जाये तो फिर मै ईश्वर से यही प्रार्थना करूँगा कि तुझे इस पृथ्वी पर अमर कर दे। पर अव क्या? मेरा रोना और कुछ भी बढ-वढ कर वातें करना ठीक स्त्रियो जैसा ही है।

मैलकॉम . अव तुम्हारे शव्दो से सच्ची वीरता की चिनगारी निकल रही है मैकडफ! आओ, सम्राट के पास चलें। उस आक्रमण के लिये हमारी सेनाएँ तैय्यार हैं। अव तो केवल कमी यहाँ से चलने भर तक की है! मैकवैथ अव हमारे वदले का शिकार वनने से नही वच सकता। उधर ईश्वर भी अपनी दैवी शक्तियो को हमारी सहायता करने के लिए लगा रहा है।

कुछ क्षणो के लिये और खुश हो ले ओ चाण्डाल! कितना भी आराम कर ले, कितना भी जुल्म कर पर यह जान ले कि वडी से वडी रात भी सुवह की किरणो के साथ ही समाप्त हो जाती है।

[प्रस्थान]

पांचवां अंक

दृश्य १

[डन्सीनेन । राजमहल का एक कमरा । एक दासी और डाक्टर का प्रवेश]

डॉक्टर : तुम्हारे साथ-साथ देखते हुए मुझे दो रात हो गई लेकिन मुझे तो कुछ भी नही मिला जिससे मै तुम्हारी बात को सच मान लूं। अन्तिम बार कब तुमने उसे शयनागार मे जाते हुए देखा था ?

दासी : जबकि सम्राट युद्धक्षेत्र मे गए हुए थे तब मैंने उसे अपने बिस्तरे से उठते हुए और कपडे पहनते हुए देखा था। उठ कर उसने अपनी अलमारी खोली थी और उसमे से कागज़ निकाल कर पहले उसने उसे मोडा था और फिर उस पर कुछ लिख कर तुरन्त पढा और फिर मोहर लगा कर बन्द कर दिया था। इतना सब कुछ करते हुए भी वह खूब गहरी नीद सोई हुई थी।

डॉक्टर : खूब गहरी नीद सोई हुई थी ? और फिर भी जागे हुए व्यक्ति का-सा काम कर रही थी ? अवश्य! कोई मानसिक पीडा उसे सता रही है। पर यह बताओ कि नीद की घबराहट मे इस तरह टहलते और सचमुच कुछ करते हुए देखने के अलावा क्या तुमने उसे कभी कुछ कहते हुए सुना ?

दासी : हां, लेकिन वह मै आपको नही बता सकती।

डॉक्टर : नही-नही, बताओ। यह बहुत ही आवश्यक है इसलिये तुम्हे बताना ही चाहिये।

दासी : नही, यह मैं किसी को नही बता सकती क्योकि जो कुछ भी मैं कहूँगी उसको पूरी तरह सच्चा सिद्ध करने के लिये मेरे पास

हे ईश्वर! उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करना।

मैलकॉम दुःखी मत हो मैकडफ। बल्कि इस दुःख को क्रोध की चिनगारियों मे बदल डालो। अपने हृदय को ऐसा पत्थर बना लो जिस पर तुम अपनी तलवार की धार तेज़ कर सको। मेरे मैकडफ! इस तरह अपने हृदय को न गिराओ बल्कि क्रोध के उबाल के साथ इसे ऊपर उठने दो।

मैकडफ : अब मैं क्या करूं? उस दयालु ईश्वर ने ही मेरे प्यारे स्त्री-बच्चो को मुझसे छीन लिया नही तो ओ स्कॉटलैण्ड के शैतान हत्यारे! सच, अगर तू मेरी तलवार के सामने आ कर एक बार भी बच कर निकल जाये तो फिर मै ईश्वर से यही प्रार्थना करूँगा कि तुझे इस पृथ्वी पर अमर कर दे। पर अब क्या? मेरा रोना और कुछ भी बढ-बढ कर बाते करना ठीक स्त्रियो जैसा ही है।

मैलकॉम : अब तुम्हारे शब्दो से सच्ची वीरता की चिनगारी निकल रही है मैकडफ! आओ, सम्राट के पास चलें। उस आक्रमण के लिये हमारी सेनाएँ तैय्यार हैं। अब तो केवल कमी यहाँ से चलने भर तक की है! मैकबैथ अब हमारे बदले का शिकार बनने से नही बच सकता। उधर ईश्वर भी अपनी दैवी शक्तियो को हमारी सहायता करने के लिए लगा रहा है।

कुछ क्षणो के लिये और खुश हो ले ओ चाण्डाल! कितना भी आराम कर ले, कितना भी जुल्म कर पर यह जान ले कि बडी से बडी रात भी सुबह की किरणो के साथ ही समाप्त हो जाती है।

[प्रस्थान]

पांचवां अंक

दृश्य १

[डन्सीनेन । राजमहल का एक कमरा । एक दासी और डाक्टर का प्रवेश]

डॉक्टर : तुम्हारे साथ-साथ देखते हुए मुझे दो रात हो गईं लेकिन मुझे तो कुछ भी नही मिला जिससे मैं तुम्हारी वात को सच मान लूं। अन्तिम वार कव तुमने उसे शयनागार में जाते हुए देखा था ?

दासी : जवकि सम्राट युद्धक्षेत्र मे गए हुए थे तव मैने उसे अपने विस्तरे से उठते हुए और कपडे पहनते हुए देखा था। उठ कर उसने अपनी अलमारी खोली थी और उसमे से कागज़ निकाल कर पढ़ने उसने उसे मोडा था और फिर उस पर कुछ लिख कर तुरन्त पढ़ और फिर मोहर लगा कर वन्द कर दिया था। इतना सव कु करते हुए भी वह खूव गहरी नीद सोई हुई थी।

डॉक्टर : खूव गहरी नीद सोई हुई थी ? और फिर भी जागे हुए म का-सा काम कर रही थी ? अवश्य ! कोई मानसिक पीडा उसे रही है। पर यह वताओ कि नीद की घवराहट मे इस तरह और सचमुच कुछ करते हुए देखने के अलावा क्या तुमने उसे कुछ कहते हुए सुना ?

दासी : हां, लेकिन वह मैं आपको नही वता सकती।

डॉक्टर : नही-नही, वताओ। यह वहुत ही आवश्यक है वताना ही चाहिये।

दासी : नही, यह मैं किसी को नही वता सकती क्योंकि मैं कहूँगी उसको पूरी तरह सच्चा सिद्ध करने के।

हे ईश्वर ! उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करना ।

मैलकॉम : दु खी मत हो मैकडफ । बल्कि इस दु ख को क्रोध की चिनगारियो मे बदल डालो । अपने हृदय को ऐसा पत्थर बना लो जिस पर तुम अपनी तलवार की धार तेज़ कर सको । मेरे मैकडफ ! इस तरह अपने हृदय को न गिराओ बल्कि क्रोध के उबाल के साथ इसे ऊपर उठने दो ।

मैकडफ : अब मैं क्या करूं ? उस दयालु ईश्वर ने ही मेरे प्यारे स्त्री-बच्चो को मुझसे छीन लिया नही तो ओ स्कॉटलैण्ड के शैतान हत्यारे ! सच, अगर तू मेरी तलवार के सामने आ कर एक बार भी बच कर निकल जाये तो फिर मै ईश्वर से यही प्रार्थना करूँगा कि तुझे इस पृथ्वी पर अमर कर दे । पर अब क्या ? मेरा रोना और कुछ भी बढ-बढ कर बातें करना ठीक स्त्रियो जैसा ही है ।

मैलकॉम . अब तुम्हारे शब्दो से सच्ची वीरता की चिनगारी निकल रही है मैकडफ ! आओ, सम्राट के पास चलें । उस आक्रमण के लिये हमारी सेनाएँ तैय्यार हैं । अब तो केवल कमी यहाँ से चलने भर तक की है ! मैकबेथ अब हमारे बदले का शिकार बनने से नहीं बच सकता । उधर ईश्वर भी अपनी दैवी शक्तियो को हमारी सहायता करने के लिए लगा रहा है ।

कुछ क्षणो के लिये और खुश हो ले ओ चाण्डाल ! कितना भी आराम कर ले, कितना भी ज़ुल्म कर पर यह जान ले कि बडी से बडी रात भी सुबह की किरणो के साथ ही समाप्त हो जाती है ।

[प्रस्थान]

पांचवां अंक

दृश्य १

[डन्सीनेन । राजमहल का एक कमरा । एक दासी और डाक्टर का प्रवेश]

डॉक्टर : तुम्हारे साथ-साथ देखते हुए मुझे दो रात हो गई लेकिन मु
तो कुछ भी नही मिला जिससे मैं तुम्हारी वात को सच मान ल
अन्तिम वार कव तुमने उसे शयनागार मे जाते हुए देखा था ?

दासी : जवकि सम्राट युद्धक्षेत्र मे गए हुए थे तव मैने उसे अ
विस्तरे से उठते हुए और कपडे पहनते हुए देखा था। उठ कर उ
अपनी अलमारी खोली थी और उसमे से कागज निकाल कर प
उसने उसे मोडा था और फिर उस पर कुछ लिख कर तुरन्त प
और फिर मोहर लगा कर वन्द कर दिया था। इतना सव
करते हुए भी वह खूव गहरी नीद सोई हुई थी।

डॉक्टर : खूव गहरी नीद सोई हुई थी ? और फिर भी जागे हुए व्य
का-सा काम कर रही थी ? अवश्य ! कोई मानसिक पीड़ा उसे स
रही है। पर यह वताओ कि नीद की घवराहट में इस तरह टह
और सचमुच कुछ करते हुए देखने के अलावा क्या तुमने उसे क
कुछ कहते हुए सुना ?

दासी : हां, लेकिन वह मै आपको नही वता सकती।

डॉक्टर : नहीं-नही, वताओ। यह वहुत ही आवश्यक है इसलिये त
वताना ही चाहिये।

दासी : नही, यह मैं किसी को नही वता सकती क्योकि जो कुछ
मैं कहूँगी उसको पूरी तरह सच्चा सिद्ध करने के लिये मेरे

साधन नही हैं। वह देखो, वह यही आ रही है।

[लेडी मैकवैथ एक मोमबत्ती लिये हुए आती है।]

यह उसी की शकल-सूरत और उसका ही ढग है। मै अपनी सौगन्ध खा कर कहती हूँ कि इस समय वह जगी हुई नही है बल्कि गहरी नीद मे सोई हुई है। आओ, छिप जाये और तब तुम उसे अच्छी तरह देखो।

डॉक्टर : यह जली हुई मोमबत्ती वह कहाँ से ला रही है ?

दासी · क्यो ? यह तो उसी के पास थी। क्या तुम्हे पता नही है ? यह उसकी आज्ञा है कि कोई न कोई रोशनी हमेशा उसके पास होनी चाहिये।

डॉक्टर : वह देखो, उसकी आँखे तो खुली हुई है।

दासी · हाँ, पर उनमे कोई भाव नही है।

डॉक्टर : क्या कर रही है वह इस समय ? वह देखो, किस तरह वह अपने हाथो को रगड रही है।

दासी : यह तो उसकी हमेशा की आदत है कि इस तरह करती हुई वह दूसरो को यही दिखाई पडे कि अपने हाथ धो रही है। पन्द्रह मिनट से तो मैं उसे यही करता देख रही हूँ।

लेडी मैकबैथ : यहाँ अभी भी एक दाग रह गया।

डॉक्टर : सुनो, वह कुछ कह रही है। मै तो जो कुछ भी वह बोलेंगी उसे लिखता हूँ इससे और भी अच्छी तरह मैं ये बातें याद रख सकूंगा।

लेडी मैकबैथ : मिट जा ओ पापी दाग ! मिट जा, मै कहती हूँ मिट जा। एक, दो क्यो ! तब तो उस काम को पूरा करने का यही समय है—नरक तो भयानक होता है। पर धिक्कार है तुम पर मेरे स्वामी ! एक सैनिक हो कर इस तरह से डर रहे हो ? यदि

किसी को यह पता भी हो तो उससे डरने की हमे क्या आवश्यकता है जब कि कौन है ऐसा जो हमारी ताकत को चुनौती दे सके। लेकिन फिर भी किसको पता था कि इस बूढे मे इतना खून होगा।

डॉक्टर : कुछ सुना तुमने ?

लेडी मैकबैथ : फाइफ के थेन की एक स्त्री थी। कहाँ है वह अब ? क्या ! ओह ! इन हाथो से कभी भी ये दाग नही मिटेंगे ?—नही, अब और नही मेरे स्वामी ! अब बिलकुल नही। तुमने इस तरह का प्रारम्भ करके सारा काम बिगाड दिया है।

डॉक्टर : अब आओ ! देखो, यह बातें जो अभी हमे मालूम हुई है उन्हे सुनने का तो हमने इरादा भी नही किया था।

दासी : मैं सुन रही हूँ। निश्चित ही वह कुछ ऐसी बाते कह गई है जो कि अपनी जगी हुई हालत मे उसने कभी नही कही होती। भगवान ही जानता है कि इसके मस्तिष्क मे क्या-क्या रहस्य भरे पडे है।

लेडी मैकबैथ : अभी तक भी खून की बदबू यहाँ से नही मिटी है। अरब की सारी खुशबुएं क्यो न आ जायें पर यह इस छोटे-से हाथ की बदबू नही मिटा सकती। ओह ! ओह ! ओह !

डॉक्टर : कितनी गहरी आह है ! मालूम होता है जैसे मानो हृदय पर कोई भारी चोटें मार रहा हो।

दासी : सच कहती हूँ, अगर दुनिया की सारी धन-दौलत और इज्जत भी मुझे मिले तो भी ऐसे पापी हृदय को अपने शरीर के अन्दर न घुसने दूं।

डॉक्टर : अच्छा ! अच्छा !! अच्छा !!!

दासी : ईश्वर करे सभी बाते ठीक हो जैसा भी तुम मालूम करना चाहते हो।

डॉक्टर : (स्वगत) इस वीमारी का इलाज तो मेरी बुद्धि और सामर्थ्य के परे है। फिर भी मैं बहुत-से ऐसे लोगो को जानता हूँ जो नीद मे चलते-फिरते थे और जो अपने अन्तिम समय मे ईश्वर का नाम लेते हुए अपने विस्तरो पर ही मरे है।

लेडी मैकवैथ : अपने हाथो को धो लो और कपडे पहन लो। इस तरह डर के मारे पीले मत दिखाई दो। मै तुमसे फिर कहती हूँ कि वैंको को दफना दिया गया है और अब वह अपनी कब्र से उठ कर वाहर नही आ सकता।

डॉक्टर : (स्वगत) क्या ऐसा भी ?

लेडी मैकवैथ : सो जाओ। जाओ, सो जाओ। कोई दरवाजा खटखटा रहा है। आओ, आओ अपना हाथ मुझे पकडाओ। अब जो कुछ भी होना है उसे कौन रोक कर वदल सकता है ? जाओ, सो जाओ। बस ।

[जाती है।]

डॉक्टर : अब क्या वह अपने विस्तरे पर सोने के लिये जा रही है ?

दासी : सीधी वही।

डॉक्टर : बुरी-बुरी अफवाहें वाहर फैली हुई हैं। भयानक अपराध मनुष्य के मस्तिष्क को उस भयानक स्थिति मे ले जा कर पागल-सा बना देते हैं कि वे अपने उन तकियो से अपने सारे भेद कहने लगते हैं जो उनकी कुछ भी बात नही सुन सकते। उसे तो किसी महात्मा या सन्त की आवश्यकता है। डॉक्टर उसे ठीक नही कर सकता। हे ईश्वर ! मेरे ईश्वर ! हम सबको क्षमा कर दो और उसकी तरफ देखो। उसके सामने से उन सब चीज़ो को हटा दो जो उसकी पीडा का कारण हो। अच्छा विदा ! उसकी इस स्थिति को देख कर तो मेरा मस्तिष्क बेचैन-सा हो उठा है और आंखे पूरी

तरह आश्चर्य्य से भर गई है। बहुत-सी बाते एक साथ मस्तिष्क मे उठती है पर उन्हें कहने का साहस मै नही कर सकता।

दासी : अच्छा, डॉक्टर अलविदा।

[वे जाते हैं।]

दृश्य २

[डन्सीनेन के पास]

[नक्कारो की आवाज। मैंटियथ, कैथनिस, ऐंङ्गस, लैनोक्स तथा कुछ सैनिकों का रंग-बिरंगे झंडे लिये हुए प्रवेश]

मैंटियथ : अँग्रेजी सेनाएँ अब पास आ गई हैं। मैलकॉम, उसके चाचा सिवार्ड, और वह प्यारा मैकडफ ये सभी उसका सेनापतित्व कर रहे है। उनके दिलो मे बदले की आग जल रही है। ठीक भी है, क्योकि जो-जो घाव उनके दिल पर कसक रहे हैं और जिनसे उनके अन्दर यह आग-सी लगी हुई है उससे तो कोई मरा हुआ आदमी भी होता वह भी भयानक से भयानक रक्तपात करने के लिये उत्तेजित हो उठता।

ऐंङ्गस . चलो बरनम वन तक चलें। उसी रास्ते वे आ रहे है, वही चल कर हम उनसे मिलेगे।

कैथनिस : क्या तुममे से किसी को पता है कि डोनलबेन भी अपने भाई के साथ है या नही ?

लैनोक्स : नही, वह उनके साथ नही है। मुझे उन सब सरदारों के नाम मालूम है जो भी उनके साथ है। सिवार्ड का पुत्र साथ है और उसके अलावा बहुत-से ऐसे नवयुवक हैं जो पहली बार रणभूमि मे अपनी बहादुरी और रण-कौशल का परिचय देने आये हैं।

मैंटियथ : वह घृणित चाण्डाल क्या कर रहा है इस समय ?

कैथनिस : वह मजबूती के साथ डन्सीनेन के विशाल किले की नाके-वन्दी कर रहा है। कुछ लोग तो कह रहे है कि वह पागल हो गया है और कुछ जो उससे इतनी घृणा नही करते है कह रहे है कि यह पागलपन नही बहादुरी का नशा है। लेकिन अब यह निश्चित है कि वह अपने असन्तुष्ट अनुयायियो को अब और अधिक वश मे नही रख सकता।

ऐङ्गस : अब तो उसे ऐसा लग रहा है मानो दबी हुई हत्याएं उसके पास आ कर पुकार रही है। प्रत्येक क्षण लोगो का विश्वास उस पर से उठता जाता है और पूरी तरह एक विद्रोह की-सी सूरत बन गई है। जिनको भी वह कोई आज्ञा देता है वे किसी दबाव और मजबूरी के कारण ही उसका पालन करते हैं नही तो अन्दर हृदय मे कोई भी प्रेम उसके लिये शेष नही रह गया है। अब तो उसे यह साम्राज्य, और यह उसका वैभव इस तरह नीचे लटकता हुआ दीख रहा है जैसे कोई बौने कद का चोर किसी विशाल दैत्य के कपडे पहन ले तो वे उसके शरीर से नीचे लटक कर गिरने-से लगते हैं।

मैंटियथ : अब तो उसका अग-अग अपने आपको इस चाण्डाल के साथ रहने से कोसता है, तब फिर अगर कभी दु ख से इसका मस्तिष्क पागलो की तरह कभी चौंक उठता है और कभी बैठ-सा जाता है तो इसमे इसका क्या दोष है ?

कैथनिस : अच्छा, चलो। जो हमारा सच्चा सम्राट है उसके प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिये आगे बढे। हमे चल कर उसके साथ मिल जाना चाहिये जोकि हमारे देश को इसी तरह मुक्त करने आ रहा है जैसे कोई डॉक्टर किसी बीमार को दवाई दे कर उसे सुखी करता है। हमे चाहिये कि अपने इस दु.खी देश की भलाई

के लिये ही हम अपने खून की प्रत्येक बूंद बहाये ।

लैनोक्स : या जैसे ओस की बूंद किसी फूल को सच्ची शोभा देती है उसी तरह हम भी अपना खून बहाकर मैलकॉम को सम्राट बना कर गौरवान्वित करे और इस चाण्डाल सरकडे को उसी खून मे डुबो दें। आओ, चलो बरनम की ओर चले ।

[जाते हैं।]

दृश्य ३

[डन्सीनेन । महल का एक कमरा]

[मैकबैथ का डाक्टर तथा कुछ अनुचरों के साथ प्रवेश]

मैकबैथ : मत लाओ हमारे पास अब कोई खबर । जाने दो, छोड जाने दो उन सबको हमे अकेला। जब तक बरनम का वह वन स्वयं उठ कर डन्सीनेन से टकराने नही चला आयेगा तब तक हमे कोई भी नही डरा सकता। हि ! क्या उस छोकरे मैलकॉम से हम डरे ? क्यो ? नही, हमे उससे डरने की कोई आवश्यकता नही, आखिर वह तो किसी औरत की कोख ही से जन्मा है। हमे याद है उन पिशाचो ने, जो यह जानते थे कि भविष्य मे क्या होगा यह कहा था : 'डरो नही मैकबैथ ! औरत की कोख से जन्मा कोई भी आदमी तुम्हे कभी नही गिरा सकता।' तब क्या ? चले जाओ ओ झूठे और गद्दार थेनो ! हमे अकेला छोड कर चले जाओ और मिल जाओ उन आरामपसन्द अग्रेजी फौजो के साथ। हमारा मस्तिष्क जो हमें सभी कामो मे रास्ता दिखाता है और हमारा हृदय जो हमारे शरीर मे स्थित है किसी तरह की शङ्का या भय से नही हिल सकते ।

[एक सेवक का प्रवेश]

ओ पीले चेहरे वाले मूर्ख ! शैतान तुझे इस धरती पर से उठा ले !

यह बुरी और घृणित हंस की-सी दृष्टि तूने कहाँ से पाई है ?

सेवक : महाराज ! दस हज़ार है वहाँ ।

मैकवैथ : क्या ? दस हज़ार हंस है, नीच ?

सेवक : हंस नही सैनिक, महाराज !

मैकवैथ : चला जा, और जा कर अपने चेहरे को किसी काँटे से छेद ले जब तक कि उससे खून न निकल आये। उस खून से तेरे चेहरे का यह पीला रग तो मिट जायेगा, ओ कमल की डडी का-सा डरपोक कलेजा रखने वाले नीच ! कैसे सैनिक है मूर्ख ! बता । तेरी आत्मा की मौत है न ? तेरे चेहरे का यह पीला रग ही यह बताने के लिये काफी है कि तू डरा हुआ है । हम पूछते हैं, ओ पीले चेहरे वाले डरपोक लडके ! बता कैसे सैनिक ?

सेवक : अग्रेज़ी सेना के सैनिक महाराज ।

मैकवैथ चला जा अपने इस बुरे चेहरे को ले कर हमारी आँखो से दूर !

[सेवक जाता है ।]

(स्वगत) सीटान जब हम तुम्हे देखते है तो हमारा दिल बैठ-सा जाता है । हम कहते हैं सीटॉन ! कि यह आक्रमण या तो हमारे सुख को हमेशा के लिये निश्चिन्त बना देगा या हमे इस राजसिंहासन से नीचे गिरना होगा । बहुत दिनो तक हम जीवित रह लिये है । अब हमारे जीवन का शरद काल पास आ गया है जबकि हमारी सारी शक्तियाँ पतझड के झरते पत्तो की तरह हमारा साथ छोड रही हैं । जैसा लोग अपने बुढापे के बारे मे सोचा करते है वैसा भी तो हम अपने बारे मे विश्वास नही कर सकते कि अब कोई हमे प्रेम करता है या किसी के हृदय में हमारे लिये इतना सम्मान बचा है कि वह हमारी आज्ञा का पालन करे । कोई भी नही सीटॉन ! हमारे सारे साथी, सैनिक और कोई भी तो हमारा साथ नही देगा और

हमे ऐसी आशा भी नही करनी चाहिये, वे हमारे साथ रहेगे वल्कि उसकी जगह पर सभी के दिलो से हमे वुरे-वुरे शाप मिल रहे हैं जिनको डर या चापलूसी के कारण मुंह पर सुनाने की कोई हिम्मत नही करता पर अन्दर दिलो की तहों मे तो वे वैठे हुए है। डरपोक चापलूस खुल कर कुछ नही कह सकते सीटॉन ! क्यो-कि इनके दिल की हिम्मत मर चुकती है।

[सीटॉन का प्रवेश]

सीटॉन . महाराज की क्या आज्ञा है ?

मैकवैथ : क्या कोई और नई खवर है ?

सीटॉन स्वामी ! जो भी खवर मिली थी उसका पता लगाने पर मालूम हुआ कि वह विलकुल ठीक है।

मैकवैथ : तव हम लडेगे। उस क्षण तक लडेंगे जब तक हमारी हड्डियों से कट कर हमारा सारा मास नीचे न गिर पडे। लाओ हमारा कवच।

सीटॉन · लेकिन अभी तो इसकी जरूरत नही है महाराज !

मैकवैथ : हम उसे अभी पहनेगे। कुछ घुडसवारो को भेज दो और उन्हे हुक्म दे दो कि चारो तरफ चक्कर लगाये और जो कोई भी राज्य में डर की वातें करता मिले उसे तलवार के घाट उतार दे। हमारा कवच दो।

क्यो डॉक्टर ! कैसा है तुम्हारा वीमार अव ?

डॉक्टर : उनको शरीर की इतनी वीमारी नही है स्वामी ! पर न जाने मस्तिष्क मे कौन-सी डरावनी-सी शक्लें दीखती हैं जिनसे वे पागल-सी हो उठती हैं।

मैकवैथ : ठीक करो उन्हे डॉक्टर ! क्या तुम ऐसे मस्तिष्क को अपनी सही हालत मे नहीं ला सकते जो इस तरह पागल-जैसा हो गया

मैलकॉम : यही तो वह आशा करता ही है क्योंकि जब भी मौका देखेंगे, तो क्या छोटे क्या वडे, सभी उसके विरुद्ध विद्रोह कर उठेंगे। सच तो यह है कि कोई भी सच्चे हृदय से उसकी सेवा नही करता वल्कि किसी दवाव से उसे करनी पडती है इसी लिये करता है।

मैकडफ : जव तक युद्ध का परिणाम निकल न आये तव तक हमे ऐसे विश्वास के साथ यह नही कहना चाहिये। इस वीच हमे चाहिये कि पूरी तरह से हम युद्ध की तैयारियाँ कर डालें।

सिवार्ड : अव वह समय पास आ गया है जो हमे पूरी तरह से वतायेगा कि क्या हमने पाया और क्या खोया। केवल कल्पना के वल पर की गई आशा तो निश्चय रूप से कभी सच्ची निकलती नही। सच्चा परिणाम तो हमारी सेना की दुश्मन पर पडती हुई मार से निकलेगा जिसके लिये वह अव जा रही है।

[सेना मार्च करती हुई जाती है।]

दृश्य ५

[डन्सीनेन। राजमहल के भीतर]

[मैकवैथ, सीटॉन तथा नक्कारों को वजाते हुए और झंडों को लिये हुए सैनिको का प्रवेश]

मैकवैथ : वाहर की दीवारो पर हमारे झडे फहरा दो। अभी तक सभी यह चिल्ला रहे है कि दुश्मन बढा आ रहा है पर हमारा यह मज़-वूत किला उन घेरा डालने वालो की हर कोशिश पर हँस रहा है। डालने दो उन्हे घेरा। मत हटाओ उन्हे वहाँ से जब तक भूख-प्यास से स्वय तडप-तडप कर वे मर न जायें। काश ! आज उनके साथ अगर हमारी सेनाएँ मिल न जाती तो हम उनका इस

तरह डट कर मुकाविला करते कि उन्हे यहाँ से सीधे अपने देश इङ्गलैण्ड भाग जाना पड़ता।

[भीतर औरतें चिल्लाती है।]

यह क्या आवाज ?

सीटॉन : कुछ औरते चिल्ला रही है महाराज !

मैकवैथ : अव तो हमारे अन्दर लेशमात्र भी डर नही रह गया है, नही तो एक वक्त था जव कि रात को कोई चीख सुन कर डर से हमारा शरीर ठडा-सा पड जाता था और किसी डरावने किस्से को सुन कर हमारे रोये सीधे खडे हो जाते थे मानो उनमे भी कोई ज़िन्दगी आ गई हो। अव मै डर को पूरी तरह पी गया हूँ। हमारे हत्या से भरे हुए भावो के साथ जो डर घुसा हुआ है वह अव हमे कभी भी हतोत्साहित नही कर सकता।

[सीटॉन का पुनः प्रवेश]

यह कौन चिल्लाया ? कहाँ से यह आवाज़ आई है ?

सीटॉन : मेरे स्वामी ! महारानी का स्वर्गवास हो गया।

मैकवैथ : है ! वह चली गई ? काश ! इसके कुछ दिन वाद ही वह जाती और मै यह सुनता तो उसके लिये ठीक वक़्त भी होता ! हाय ! आज से कल करते हुए जीवन का एक-एक दिन वीत रहा है और हम अपने भाग्य के अनुसार अपनी अन्तिम घडियो की तरफ वढ रहे है। वीती हुई घड़ियाँ पुकारती जाती है—मूर्ख प्राणियो ! तुम सव अपनी कव्रो की ओर वढ रहे हो। तव, वुझ जाने दो। वुझ जाओ ओ जीवन के टिमटिमाते दीप ! वुझ जाओ ! क्या है जीवन ? केवल एक चलती हुई छाया ! ठीक उसी अभिनेता की तरह जो कुछ क्षणो के लिये रगमच पर आ कर हँसता-रोता है और फिर हमेशा के लिये सामने से चला जाता है। प्राणी

लकॉम : यही तो वह आशा करता ही है क्योकि जब भी मौका देखेंगे, तो क्या छोटे क्या बडे, सभी उसके विरुद्ध विद्रोह कर उठेंगे। सच तो यह है कि कोई भी सच्चे हृदय से उसकी सेवा नही करता बल्कि किसी दबाव से उसे करनी पडती है इसी लिये करता है।

ाकडफ : जब तक युद्ध का परिणाम निकल न आये तब तक हमे ऐसे विश्वास के साथ यह नही कहना चाहिये। इस बीच हमे चाहिये कि पूरी तरह से हम युद्ध की तैयारियाँ कर डाले।

सवार्ड : अब वह समय पास आ गया है जो हमे पूरी तरह से बतायेगा कि क्या हमने पाया और क्या खोया। केवल कल्पना के बल पर की गई आशा तो निश्चय रूप से कभी सच्ची निकलती नही। सच्चा परिणाम तो हमारी सेना की दुश्मन पर पडती हुई मार से निकलेगा जिसके लिये वह अब जा रही है।

[सेना मार्च करती हुई जाती है।]

दृश्य ५

[डन्सीनेन। राजमहल के भीतर]

[मैकबैथ, सीटॉन तथा नक्कारों को बजाते हुए और झंडो को लिये हुए सैनिकों का प्रवेश]

मैकबैथ : बाहर की दीवारो पर हमारे झंडे फहरा दो। अभी तक सभी यह चिल्ला रहे है कि दुश्मन बढा आ रहा है पर हमारा यह मज़-बूत किला उन घेरा डालने वालो की हर कोशिश पर हँस रहा है। डालने दो उन्हे घेरा। मत हटाओ उन्हे वहाँ से जब तक भूख-प्यास से स्वय तडप-तडप कर वे मर न जायें। काश! आज उनके साथ अगर हमारी सेनाएँ मिल न जाती तो हम उनका इस

तरह डट कर मुकाविला करते कि उन्हे यहाँ से सीधे अपने देश इङ्गलैण्ड भाग जाना पडता।

[भीतर औरतें चिल्लाती हैं।]

यह क्या आवाज ?

सीटॉन : कुछ औरतें चिल्ला रही है महाराज !

मैकवैथ : अव तो हमारे अन्दर लेशमात्र भी डर नही रह गया है, नही तो एक वक्त था जव कि रात को कोई चीख सुन कर डर से हमारा शरीर ठडा-सा पड जाता था और किसी डरावने किस्से को सुन कर हमारे रोये सीधे खड़े हो जाते थे मानो उनमे भी कोई जिन्दगी आ गई हो। अव मैं डर को पूरी तरह पी गया हूँ। हमारे हत्या से भरे हुए भावो के साथ जो डर घुसा हुआ है वह अव हमे कभी भी हतोत्साहित नही कर सकता।

[सीटॉन का पुनः प्रवेश]

यह कौन चिल्लाया ? कहाँ से यह आवाज आई है ?

टॉन : मेरे स्वामी ! महारानी का स्वर्गवास हो गया।

कवैथ : हे ! वह चली गई ? काश ! इसके कुछ दिन वाद ही वह जाती और मैं यह सुनता तो उसके लिये ठीक वक्त भी होता ! हाय ! आज से कल करते हुए जीवन का एक-एक दिन वीत रहा है और हम अपने भाग्य के अनुसार अपनी अन्तिम घड़ियो की तरफ वढ़ रहे हैं। वीती हुई घड़ियां पुकारती जाती है—मूर्ख प्राणियो ! तुम सव अपनी कब्रो की ओर वढ रहे हो। तव, वुझ जाने दो। वुझ जाओ ओ जीवन के टिमटिमाते दीप ! वुझ जाओ ! क्या है जीवन ? केवल एक चलती हुई छाया ! ठीक उसी अभिनेता की तरह जो कुछ क्षणो के लिये रगमंच पर आ कर हँसता-रोता है और फिर हमेशा के लिये सामने से चला जाता है। प्राणी

का यह जीवन मूर्खो की कही हुई वह कहानी है जिसमे ध्वनि और भावनाएँ है पर हाय ! क्या अस्तित्व है उनका ?

[एक दूत का प्रवेश]

तुम भी अपनी जीभ हिलाने आये हो न ? कहो, तुरन्त कहो क्या कहने आये हो ।

दूत : मेरे दयालु महाराज ! मै वही कहना चाहता हूँ जो मैने देखा है पर मै नही जानता कि उसे कैसे कहूँ ।

मैकवैथ : हॉ-हॉ, कहो ।

दूत : स्वामी, जब मैं पहाडी पर खडा हो कर पहरा दे रहा था तो ज्यो ही मैने वरनम वन की ओर देखा तो मुझे लगा कि पूरा वन उठा चला आ रहा है ।

मैकवैथ : झूठ ! गुलाम कही के !

दूत : नही महाराज ! अगर मेरी वात सच न हो तो मै आपका कोई भी दण्ड सहने के लिये तैय्यार हूँ । महल से तीन मील की दूरी मे देखिये । मै सच कहता हूँ स्वामी ! वरनम चला आ रहा है ।

मैकवैथ : अगर तुम्हारी बात झूठ निकली तो समझ लो पहला पेड जो भी हमारी आँखो के सामने आयेगा उसी पर हम तुम्हे जीवित ही लटका देगे और उस वक्त तक रहने देगे जब तक कि भूख-प्यास से तडप-तडप कर तुम मर न जाओ और अगर तुम्हारी बात सच निकली तो तुम हमारे साथ यही व्यवहार करना, हमे कोई शिकायत नही होगी ।

ओह ! हम अपने इरादो से लडखडा रहे हैं । लगता है कि उन पिशाचो की वाते ठीक निकल रही हैं कि 'डरो नही मैकवैथ ! जब तक वरनम वन डन्सीनेन की ओर आता दिखाई न पडे तब तक मत डरना ।' वन डन्सीनेन की ओर बढा चला आ रहा है ।

हाथो मे हथियार ले लो और दुश्मन से टकरा जाओ मैकवैथ। जाओ। जो कुछ भी वह कह रहा है अगर उसने सचमुच देखा है तो फिर उससे छिप कर कहाँ दूर भाग सकते हो ? फिर यहाँ महल मे किस लिये बैठे हो ?

ओह ! अब मैं इस जीवन से, इस सारी दुनिया से पूरी तरह ऊब गया हूँ और चाहता हूँ, काश ! यह सारी दुनिया एक साथ ही टूक-टूक हो कर बिखर जाये। इसमे प्रलय आ जाये।

खतरे की घंटी बजा दो। ओ हवा ! जोर से तूफानी हो कर बहो। आ जाओ, ओ प्रलय की आग ! हम वीरो की तरह कवच पहन कर सामना करेंगे।

[प्रस्थान]

दृश्य ६

[डन्सीनेन। राजमहल के सामने एक मैदान]

[नक्कारो की गूंज के साथ फहराते हुए झंडे। मैलकॉम, वृद्ध सिवार्ड, मैकडफ और उनकी सेनाएँ पेड़ो की डालियाँ ले कर प्रवेश करती है।]

मैलकॉम : हम लोग अब राजमहल के बहुत निकट पहुँच चुके है। अब सामने लगे हुए इन डालियो के पर्दो को गिरा दो और अपनी पूरी ताकत के साथ सामने आ जाओ।

आओ मेरे सुयोग्य चाचा ! आप अपने वीर पुत्र के साथ आक्रमण करते समय सबसे आगे वाली टुकडी का सचालन करेंगे और शेष का अपनी योजना के अनुकूल हम लोग करेंगे।

सिवार्ड : अच्छा, अलविदा ! आज रात को ही मैकवैथ की सेना से सामना है। यदि हमने उन्हे रणभूमि से भगा नही दिया तो हम प्रण करते है कि जीवित रह कर वापिस नही आयेंगे।

मैकडफ . रण-दुन्दुभि वजने दो। खून और मौत के दूतो की तरह विगुलो को ज़ोर-ज़ोर से पुकारने दो।

[सभी जाते हैं।]

दृश्य ७

[रणभूमि का दूसरा भाग। युद्ध की चीत्कार। मैकवेथ का प्रवेश]

मैकवैथ : उन्होने मुझे चारो तरफ से इस तरह घेर लिया है मानो किसी खूंटे से वाँध दिया हो। सव तरफ दुश्मन है। मै कही भाग भी तो नही सकता। लेकिन क्यो ? क्यो भागूं ? मै एक रीछ की तरह वहादुरी के साथ लडूंगा। कौन है ऐसा जो औरत की कोख से नही जन्मा है ? उसी से मुझे डरना चाहिये नही तो और कौन मेरा क्या बिगाड सकता है ?

[नवयुवक सिवार्ड का प्रवेश]

युवक सिवार्ड : क्या नाम है तेरा ?

मैकवैथ : हमारा नाम ? डर जायेगा तू सुन कर उसे।

युवक सिवार्ड · कभी नही, नरक के दैत्यो के-से भयानक से भयानक नाम से अपने को क्यो न पुकार मै कभी नही डर सकता। वता, क्या नाम है तेरा ?

मैकवैथ : तो सुन, मैकवैथ !

युवक सिवार्ड ओ, शैतान भी इससे अधिक घृणित नाम मेरे कानो को नही सुना सकता था।

मैकवैथ : न ! न ! न ! यह कह कि इससे अधिक डराने वाला नाम नही सुना सकता था।

युवक सिवार्ड : झूठ, झूठ बोलता है तू ओ घृणित अत्याचारी ! मै अपनी तलवार की धार पर जो कुछ भी तू कह रहा है उसे अभी

झूठ साबित करता हूं।

[वे दोनो लड़ते हैं और युवक सिवार्ड मारा जाता है।]

मैकबैथ : जा! तू औरत की कोख से जन्मा था न? जो भी औरत की कोख से जन्मा तलवार या कोई भी हथियार ले कर युद्ध करने आयेगा मै उस पर हँसूगा और फिर घृणा से मुंह फेर लूंगा।

[युद्ध की चीत्कार। मैकडफ का प्रवेश]

मैकडफ़ : इधर से ही आवाज़ आई है। ओ चाण्डाल! अपना चेहरा तो दिखा। अगर तू मेरी तलवार के अलावा किसी दूसरे के हाथों मारा गया तो मेरी स्त्री और मेरे नन्हे-से बच्चों की प्रेतात्मा बदले के लिये फिर भी भटकती हुई मुझे चैन की नींद नही सोने देगी। मै इन गरीब सैनिको पर हाथ नही उठा सकता जो हमसे लड़ने के लिये भाले और तलवार उठाने के लिये किराये पर रखे गये है। या तो चाण्डाल! तेरा खून पी कर यह मेरी तलवार तुझे हमेशा के लिये जमीन पर सुला देगी या कायरो की तरह बिना कोई वीरता का काम किये वापिस म्यान मे चली जायेगी। आह! इस उठती हुई आवाज से मुझे लगता है कि तू वहां है। इतने जोर से बजते रण के इस बाजे से लगता है कि कोई सबसे बड़ा सैनिक वहां है और वह तेरे सिवाय और कोई नही हो सकता। आह, मेरे सौभाग्य! ले चल मुझे उधर। इससे अधिक मै तुझसे और कुछ कामना नही करता।

[जाता है। रण की चीत्कार]

[मैलकॉम तथा वृद्ध सिवार्ड का प्रवेश]

सिवार्ड : इधर से आइये स्वामी! बिना किसी तरह के विरोध या युद्ध के राजमहल हमारे हाथो मे आ गया है। उस अत्याचारी की प्रजा के लोग दोनो तरफ से लड़ रहे है। आपके सरदार थेन भी बड़ी

बहादुरी के साथ लोहा ले रहे है। आज की विजय अपने पक्ष मे ही घोषित हो चुकी है। बस अब बहुत थोड़ा ही काम करना बाकी है।

मैलकॉम : हमे दुश्मन भी तो ऐसे मिले है जो उलटे हममे ही मिल कर हमारी ओर से लड़ रहे हैं।

सिवार्ड : आइये सम्राट ! राजमहल मे प्रवेश कीजिये।

[जाते हैं। युद्ध की चीत्कार उसी तरह सुनाई दे रही है।]

दृश्य ८

[रणभूमि का दूसरा भाग। मैकबेथ का प्रवेश]

मैकबेथ : अपनी ही तलवार से अपने आपको मार कर मै क्यो रोम के मूर्ख का-सा काम करूँ? जब तक मुझे एक भी दुश्मन जीवित दिखाई देगा तब तक मै उन पर आग बरसाऊँगा।

[मैकडफ का प्रवेश]

मैकडफ : आ, ओ ! नरक के कुत्ते ! आ, लौट !

मैकबेथ : ओ तू? सिर्फ मेरी नजरो के सामने आने से तू ही बचा रह गया है। आ, सामने आ। वैसे तेरे परिवार के खून से तो पहले ही मेरा जी भर गया है।

मैकडफ : इसका जवाब मै कुछ नही दूंगा दुष्ट ! मेरी यह तलवार इसका जवाब देगी। आ, तू कितना बड़ा शैतान है, शब्द नही कह सकते। आ।

[वे आपस में लड़ते हैं।]

मैकबेथ : तू बेकार अपनी ताकत गँवा रहा है मूर्ख ! हाँ, तू अपनी तलवार से मुझे उतनी ही आसानी से धराशायी कर सकता था जितनी आसानी से तू इसी तलवार से हवा को काट सकता है पर अब क्या कर सकता है तू। अपनी इस तलवार को उसके सिर

पर मार जहाँ इसका कुछ असर हो। मेरा जीवन तो किसी जादू के कारण सुरक्षित है और अगर तूने नही सुना हो तो सुन, औरत की कोख से जन्मा कोई भी आदमी मुझे कभी भी नही मार सकता।

मैकडफ : छोड दे भरोसा अपने इस जादू का और जिस भी देवता की पूजा तू करता हो उसे वता दे कि मैकडफ ठीक वक्त से पहले ही अपनी माँ के गर्भ से काट कर निकाल लिया गया था।

मैकवैथ : धिक्कार है तेरी उस जीभ को जो मुझसे ऐसी बाते कह रही है। ओह! इससे हमारे दिल की हिम्मत कुछ गिर रही है। तू गद्दार है। ऐसे गद्दार दोस्तों का, जो हमेशा दुहरी बाते करते है, कभी भी भरोसा नही करना चाहिये। जो कान मे कुछ वायदा करके जाते है और आशा के विरुद्ध काम कुछ दूसरा ही करते है, उन्हे कभी साथ नही रखना चाहिये। मैं तुझसे नही लडना चाहता।

मैकडफ : तो फिर कायर! आत्मसमर्पण कर मेरे सामने और दूसरों को तेरे काले चेहरे का तमाशा देखने दे। हम तुझे किसी वहुत वडे खूनी कैदी की तरह खम्बे से लटका देगे और उस पर लिख देगे कि 'देखो, यहाँ एक चाण्डाल विश्वासघाती लटका हुआ है, देखो उसे।'

मैकवैथ : आत्मसमर्पण और मै? कभी नही। क्या मैं उस छोकरे मैलकॉम के सामने झुक कर जमीन चाटूंगा? नही, यह कभी नही हो सकता कि कभी भी लोग मेरे जीवन पर थूकने लगें। मैं उन्हे कभी भी मुझे धिक्कारने का मौका नही दूंगा चाहे वरनम वन उठा हुआ डन्सीनेन की ओर चला आ रहा है और तू भी औरत की कोख से नहीं जन्मा है। मै अपनी अन्तिम श्वासो तक लडूंगा। अपनी इस ढाल से अपने शरीर की रक्षा करूँगा। आ मार ओ

मैकडफ ! मार ! धिक्कार है उसे जो हममे से पहले यह कहे कि वस, अव नही ।

[दोनों आपस में लडते हैं । युद्ध की चीत्कार वरावर सुनाई दे रही है ।]

[इधर वाजे वजते हैं। सभी विजय प्राप्त करके रणभूमि से वापिस लौट रहे हैं। मैलकॉम, वृद्ध सिवार्ड, रौस, लैनोक्स, ऐङ्गस, कैथनिस, मैंटियथ, तथा अन्य सैनिको का नक्कारो की आवाज़ और झंडों के साथ प्रवेश ।]

मैलकॉम काश ! जो साथी आज हमेशा के लिये हमसे विछुड गये है वे इस समय हमारे वीच मे होते !

सिवार्ड · कुछ को तो विछुडना ही पडता स्वामी ! लेकिन फिर भी जितने जीवित वच रहे हैं उन्हे देख कर ही मुझे आश्चर्य्य हो रहा है कि इतने कम वलिदान पर हम इतनी ऊँची विजय कैसे प्राप्त कर पाये ।

मैलकॉम : पर हां, मैकडफ कही दिखाई नही दे रहा है और आपका पुत्र भी तो कहां है कुछ मालूम नही ।

रौस · आपके पुत्र ने वीरगति प्राप्त की है सेनापति ! अपनी अन्तिम श्वास तक वह एक वीर योद्धा की तरह लडता रहा और जव तक शत्रु के हृदय तक पर अपने पौरुष का सिक्का नही जमा दिया तव तक वह हटा नही। एक सच्चे वीर की तरह वह इस ससार से गया है सेनापति !

सिवार्ड : तो क्या वह इस ससार मे नही है ?

रौस : हाँ सेनापति ! उसका शरीर रणभूमि से वहुत दूर ले आया गया है। इसमे जितने गुण हैं उन्हे याद करके मत रोइये नही तो क्या आँसुओ का कभी कोई अन्त होगा ?

सिवार्ड : पर यह वताओ मुझे, कि घाव उसकी छाती पर हुए थे या पीठ पर ?

रौस : छाती पर ही हुए थे सेनापति !

सिवार्ड : तो फिर मुझे कोई दुःख नही है। वह ईश्वर के पास पहुँच गया है। यदि जितने मेरे शरीर मे बाल हैं उतने भी मेरे पुत्र होते तो इससे अधिक गौरवशाली मृत्यु मैं उनके लिये कोई नही समझता। तो फिर वह इस ससार को छोड कर चला गया ?

मैलकॉम : वस इतना ही नही सेनापति ! उस वीर की दुःखदायी मृत्यु पर मैं अभी और आंसू वहाऊँगा।

सिवार्ड : नही, स्वामी ! अब उसके लिये और शोक नहीं करना चाहिये। वस इतने का ही वह अधिकारी है। वे सभी यही कह रहे हैं कि एक वीर योद्धा की तरह रणभूमि मे गिरा है वह, तो प्रकृति का सारा ऋण उसने चुका दिया है। इसलिये अब तो यही प्रार्थना कीजिये कि ईश्वर सदा उसे अपने पास रखें।
अब कोई दूसरी अच्छी खवर आती हुई मालूम होती है।

[मैकडफ मैकवैथ का कटा हुआ सिर लिये पुनः प्रवेश करता है।]

मैकडफ : वधाई है सम्राट को ! आज से आप स्कॉटलैण्ड के सम्राट हैं स्वामी ! देखते नही, दुराचारी का सिर कहाँ है जिसने आपके राज्य को हड़पा था ! अब कोई डर नही। चारो ओर आजादी है। साम्राज्य के इन रत्नो के बीच मे मैं आपको बैठा देख रहा हूँ जो अपने हृदय मे वही वधाइयाँ लिये हुए हैं। मैं चाहता हूँ कि आप सभी जोर से मेरे साथ आवाज मिला कर कहे—'स्कॉटलैण्ड के सम्राट ! वधाई है !'

[वाजे वजते हैं।]

मैलकॉम : हमारे येन और साथियो ! हम आप लोगो के हृदय मे वहुत आभारी हैं और चाहते हैं कि शीघ्र से शीघ्र आप लोगो का ऋण चुकायें। तब से हम आपको 'अर्ल' वनाते हैं। यह पहला ही अव-

सर है जबकि स्कॉटलैण्ड मे कोई इस पद से सम्मानित हुआ हो। अब बताइये, आगे क्या करना होगा। सलाह दीजिये कि इस नये युग के प्रारम्भ मे क्या-क्या करना चाहिये जैसे जो हमारे साथी उस अत्याचारी के चगुल से छूट कर विदेश चले गये है उन्हे वापिस बुलाना और इस मरे हुए चाण्डाल हत्यारे के निर्दयी साथियो को और उस महारानी बनी हुई पिशाचिनी को पकड कर सामने लाना इत्यादि। लेकिन उसके बारे मे तो यह सुनने मे आया है कि उसने अपने ही हाथो से आत्महत्या कर ली है। इसके अलावा बताइये क्या और आवश्यक रूप से करना चाहिये। जो कुछ भी होगा उसे ईश्वर की कृपा से समय और अवसर के अनुसार हम अवश्य करेंगे।

आप सभी लोगो को हम हृदय से धन्यवाद देते हैं और फिर प्रत्येक को अलग-अलग हम धन्यवाद देते है। हमे विश्वास है कि आप सभी स्कोन हमारा राज्याभिषेक करने अवश्य आयेगे। हम इसके लिये आप सभी को निमन्त्रित करते है।

[बाजे बजते हैं। प्रस्थान]